अंड बंड

खंड १

UNIVERSITY LIBRARY
3 NOV 1961
ALLAHABAD.

लेखक

नारायण महादेव सप्रे.

कीमत : पांच रुपया

कापी राइट लेखक के पास

404-H
1
191980

प्रकाशक
नारायण महादेव सप्रे, वकील
दमोह
बुन्देलखंड

प्रकाशन स्थल
दमोह
मध्यप्रदेश

पहला संस्करण : १९६०
५०० प्रतियां

मुद्रक
कोमलचंद मोदी
जवाहर मुद्रणालय
दमोह, म. प्र.

संस्कृत शब्दों के अर्थ के संस्कृत पूर्व शब्द कौन से थे तो वे यही जवाब देते कि हिन्द में आर्यों के आने के पहिले कोई राक्षसी लचर-पचर भाषा रही होगी वह खतम हो चुकी और देववाणी सर्वत्र पसर चुकी अब गड़े मुर्दे कौन उखाड़े ? पर सन १६२१-२२ से जब हड़प्पा से व उसके बाद मोहेनजोदारो से लिखित गड़ी सीलें उखड़ने लगीं इन गड़े मुर्दों को उखाड़ने की जरूरत निश्चित ही पड़ गई। वैसे तो यह जरूरत इसके पहिले भी थी।

कुछ भाषा विज्ञान वाले इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि संस्कृत में खंड मंड सरीखे जो अंडांत शब्द हैं वे अनार्यन हैं। कुछ ने यह कहा कि मर्मर खटखट सरीखे जो ध्वनि सूचक शब्द संस्कृत में आये हैं वे अनार्यन हैं। संस्कृत ग्रंथों में ही जब पर्याप्त आधार मिल गया तब यह माना जाने लगा कि संस्कृत में शुरू से ही कुछ ऐसे शब्द हैं जो आर्यन नहीं हैं। मो. लि. के सम्बन्ध में सालों तर्क वितर्क होने के बाद अब कोई कोई विद्वान दूसरे छोर पर पहुंच गये और प्राकृत शब्द का दुरुपयोग कर यह कहने लगे हैं कि संस्कृत प्राकृत से बनी।

जब आज भी आदमी अपनी छोटी छोटी भाषाओं के प्रभुता के लिये लड़ झगड़ रहे हैं तो क्या आर्यों के आने के समय के हिन्द-वासी इतने भावना शून्य थे कि उन्होंने अपनी बोली जल्द ही मर जाने दी ?

यथार्थ बात यह है कि ऊपर जो जो शब्द उदाहरणार्थ दिये हैं उनमें से मिट्टी व राख बुंदेलखंडी शब्द हैं व उनसे संस्कृत शब्द मृत्तिका व रक्षा बने व हस्त और जिव्हा आर्यन शब्द हैं व उनसे हिंदी शब्द हाथ व जीभ बने। हिंदू लोग भले ही अपने मुंह मियां-मिट्ठू बने और अपने को आर्य कहें पर उनका जगजाहिर नाम हिंदू है और यह नाम आर्यों के पहिले का है व ठेठ बुंदेलखंडी है।

२

बुन्देलखंडी

उत्तर भारत के मध्य में एक प्रदेश है जिसे बुंदेलखंड कहते हैं। आर्यन भाषा के उत्पत्ति के हजारों साल पहिले बुन्देलखंड के मध्य में एक भाषा बनी। बच्चे जब बोलना शुरु करते हैं तो कोई आ आ से शुरु करता है कोई मा मा से कोई ला ला से तो कोई डा डा से शुरु करता है। सब बच्चे एक ही वही अत्तर से बोलना शुरु नहीं करते। जो बच्चा आ आ से बोलना शुरु करता है उसके लिये हर एक चीज आ आ होती है मां भी आ बाप भी आ खिलौना भी आ व खाने पीने की चीज भी आ। इसी प्रकार भाषा की उत्पत्ति होती है पहिले पहल एक ही अत्तर बोला जाता है। तेलुगु भाषा उ उ से शुरु हुई। मुंडा भाषा आ आ से शुरु हुई। संस्कृत भाषा रि रि से शुरु हुई व बुन्देलखंडी भाषा डा डा से शुरु हुई। बुन्देलखंडी में सबसे प्रमुख स्थान ड अत्तर का है। इसके बाद ट वर्ग के बाकी अत्तरों का है। अनुस्वार ण का बहुत उपयोग किया किया गया था। पहिले पहल ट वर्ग के अत्तरों से ही शब्द बनाये गये। बाद में धीरे २ दूसरे अत्तरों का प्रयोग होने लगा। इस भाषा के बुनियादी शब्द ये हैं। इनकी संख्या २७ है।

अंड आंड इंड ईंड उंड ऊंड एंड ओंड कंड खंड गंड चंड जंड टड ठड डंड ढंड णांड पंड फंड बंड भंड मंड रड लांड सांड हंड।

इस भाषा में त वर्ग नहीं था। पर बोलचाल में कभी कभी स्वभावतः ट वर्ग का त वर्ग हो जाता है। इसी प्रकार इ व ज का य ग का घ ब का व और स का श हो जाता है। छ और झ अत्तर

उच्चारण में च ज ट ठ ड ढ और स से आर्यों के आने के पहिले व बाद बनते गए। ऐ और औ का प्रयोग भी काफी देर बाद हुआ। श आर्यन है।

ऊपर लिखे कंड व उसके बाद के शब्दों के पहिले या दूसरे अक्षरों को या दोनों को आ इ ई उ ऊ ए ओ स्वर जोड़कर नये शब्द बनाये गये। जोड़ने का मतलब यह है कि अक्षर का अ निकालकर यानें उसे हलन्त करके भिन्न २ स्वर जोड़े गये। जैसे कंड से कांड किंड कुंड कुंडा कंड कोंड आदि शब्द बने।

इसके बाद भी भिन्नीकरण के हेतु नये शब्द बनाने की जरूरत पड़ी। इसलिये संयुक्त दो ड याने ड्ड का प्रयोग किया जाने लगा व अड्ड बड्ड सड्ड ऐसे शब्द बने। अब यहां पर एक बात का ध्यान करने लायक है। कंड्ड शब्द का उच्चारण करिये। आप इसका सही उच्चारण नहीं कर सकते। या तो अनुस्वार छोड़ना पड़ेगा या एक ही ड का उच्चारण होगा। बात सरल है पर यह इसलिये लिख दी जिसमें मो. लि. बांचते समय कोई अटक न होवे।

अड्ड बड्ड सड्ड इत्यादि बनने व चलने के बाद ड की जगह ट का उपयोग होने लगा और अंट अट्ट इस तरह के कई शब्द बने। बाद में ड के जगह ठ व ढ अक्षरों का उपयोग किया गया व कई शब्द बने।

बुन्देलखंडी मराठी माड़वाड़ी व भारत की कुछ अन्य प्रादेशिक भाषाओं में ड अक्षर अभी भी प्रमुख है। पर पहिले ड अक्षर का प्रयोग बहुत अधिक रहा आया पांच हजार साल में ड का ज हो गया ड का ग हो गया ड का द हो गया ड का र हो गया ड का ल हो गया ड का स भी हुआ व ड का लोप भी हो गया।

ड का जो ज हुआ वह राजस्थान गुजरात पंजाब व सिंध में हुआ व बदले हुये शब्द फिर पूर्व तरफ चले आये।

ड का जो ग हुआ वह एशिया व युरुप में सभी जगह हुआ।

ढ का ग हो जाना अत्यन्त महत्व का है। इस तरह से जो शब्द बने वे ये है।

अंग आंग इंग ईंग उंग ऊंग एंग ओंग कंग खंग गंग चंग जंग टंग ठंग डंग ढंग णंग पंग फंग बंग भंग मंग रंग लंग सांग हंग

इन शब्दों के अ स्वर की जगह दूसरे स्वर लगाकर भी कई शब्द बने।

ऊपर लिखे शब्द एक ही ढांचे के हैं। पर दो अक्षर क और ल के मिलाप से कुछ शब्द बुन्देलखंडी के विकास क्रम में काफी जल्द बन गये थे। कल शब्द कल का नहीं है। वह हजारों साल पुराना है।

यह बुन्देलखंडी भाषा सम्पूर्ण हिंद में फैल गई। सिंध से आसाम तक व हिमालय से कन्या कुमारी तक यही एक भाषा बोली जाने लगी और वह हिंद के पश्चिम में अफगानिस्तान ईरान इराक टर्की दक्षिणी रुस यूक्रेन ग्रीस व हंगरी तक फैल गई। अरब प्राय-द्वीप के सेमिटिक भाषा पर उसका प्रचुर प्रभाव पड़ा। यूरुप व ईजिप्त की भाषाएं शुरु में मुख्यतः इसी भाषा से बनी। पूर्व में आसाम से होकर इसके अंगांत शब्द चीन में चले गये व वहां अभी भी हैं। दक्षिण पूर्व में याने ब्रह्मा स्याम आदि देशों में इस भाषा के अंडांत व अंगांत दोनों प्रकार के शब्द गये।

बुन्देलखंडी भाषा का अध्ययन हिंद के प्रदेशों, शहरों व गांवों के नामों से शुरु होना चाहिये। आर्यन भाषा से लड़ने में उसकी आत्म रक्षा के ये ही मुख्य गढ़ रहे आये। संस्कृत भाषा का साम्राज्य फैलने से बहुत से बुन्देलखंडी भौगोलिक नाम बदले जाने लगे पर सब नहीं बदले जा सके। बहुत से बुन्देलखंडी नाम अभी मौजूद हैं व उनसे उस भाषा के स्वरुप का बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त हो जाता है। भौगोलिक नामों में प्रदेशों शहरों व गांवों के नाम मुख्य है।

इनके बाद नदी पहाड़ वगैरह के नाम भी उपयोगी हैं । भौगोलिक नामों के अलावा मनुष्यों के बहुत से नाम व आड नाम भी हैं जो हजारों साल पुराने हैं और बुन्देलखंडी हैं । इनसे भी बुन्देलखंडी भाषा समझने में पर्याप्त सहायता मिलती है। भारत की भाषाओं में अनेक बुन्देलखंडी शब्द हैं ही पर उसके बाहर की भाषाओं में भी बहुत से बुन्देलखंडी शब्द बने जाते हैं।

सौभाग्य से शहरों व गांवों के हजारों साल पुराने ऐसे बहुत से नाम बच जाते हैं जो बुन्देलखंडी हैं और आर्यों के पहिले के हैं । आर्यों ने कई शहरों के नाम बदल दिये व कई के बदलने की कोशिश की। यह अच्छा ही हुआ कि इस कार्य में उन्हें पूरी सफलता नहीं मिली। संस्कृत साहित्य में कई नाम ऐसे शहरों के आते हैं जिनके स्थानों का अब ठीक पता नहीं चलता। इसका अर्थ यह नहीं है कि उन शहरों का अस्तित्व नहीं है वे शहर हैं पर वे अपने पुराने बुन्देलखंडी नामों से मशहूर हैं। बुन्देलखंडी नामों ने संस्कृत नामों को पछाड़ दिया। कई शहरों के पुराने व नये नाम दोनों अभी ज्ञात हैं। यह कहना गलत है कि पटना शहर का पुराना नाम पाटलिपुत्र या कुसुमपुर था व पटना नया नाम है। सही कहना यह है कि पटना नाम पुराना है व उसको बदलकर पाटिलपुत्र या कुसुमपुर कर दिया था। पर पाटिलपुत्र व कुसुमपुर चले गये व पटना बना रहा। बसाढ नाम पुराना है। वैशाली नाम नया था। वैशाली चला गया बसाढ़ बना जाता है। अवंति नाम नया था वह चला गया । पुराना नाम उज्जैन (उ ड्डु डीं) बना जाता है । प्रतिष्ठान चला गया। झूसी (झूसी) बना जाता है।

वाराणसी नाम चल रहा है पर उसके पुराने नाम काशी (कासी) को अभी लोग भूले नहीं हैं। ऐसे ही उत्कल नाम चला गया व उड़ीसा बना जाता है। शरावती नाम चला गया व साबरमती (मूल नाम सबरी) नाम बना जाता है।

हिंद के प्रदेशों के नाम अंड बंड आदि ही थे । यह भी था कि एक ही नाम एक से ज्यादह प्रदेशों का था। कई बंड थे । कई मंड थे। कई पंड इत्यादि थे। आंध्र का पुराना नाम अंड या आंड था। ड का ध हो गया व आर्यन र लग गया । नालंद कलिंद कलिंग तिलंग व पुलिंद नाम सब बुन्देलखंडी हैं । उनमें आर्यन उपसर्ग लग गये हैं। बुंदेलखंड के अधिकतर हिस्से का नाम बंड था व उससे बुन्देलखंड शब्द बना। बूंदी का प्रदेश भी बंड ही था। अंग बंग भंग (भंगल) कांगडा कन्नड संड (सिंध) पंड्या पांडुचेरी मांडवी दंडक खांडव अन्दमान पुंड्र मुंड गंगवड बेंगी गंडहार (गांधार) आदि प्रदेशों के नाम रहे आये मगध व माड़वाड़ के अनुस्वार लोप हो गये हैं।

शहरों व गांवों के कुछ नाम ये हैं:—बांदा बूंदी खंडवा भंडारा मंडला मांडू मंडसौर मंडी मुंगेर हिंडोरिया टंडला हिंगवानी भिंड गोंडा रोंडा कोंडिया टांडा सरकंडी जिंड भटिंडा डोंगरगढ़ तंजोर ढांगू कुन्डन डंडामंडी हिंगोली हींगनघाट बांदकपुर अंडुल अंडपटी अंगर बंडेल बंडर बंडीकुई बिंडोरा चंडोर चंदोसी डिंडोरी डिंडगिल सांगली गोंदिया इन्दौर मंडपम दरभंगा कुंडा बंगलोर मंगलोर बांदरा टांड़ा डंडखोरा डंडूपुर डुंडूर डुंगा बुंगा जंड कुंडियन शिलोंग दार्जिलिंग गंडेवी गंडी गंगपुर गंगटीक गोंडल हंडिया हंगू इंडारा जंडिआल कंडघाट कंडारकी कंडिआरो खंडाला खंडगिरी किंडागप कुंड कुंडरघाट कोंडापल्ली कोंडागांव लंडीकोटल लंगल लंगर लोंडा लिंगा लांगजू मंडरा मंडोर मंडिया मुंडिया पांडे मुंडीकोटा नडोल नंदी नन्दयाल नंदुरा ओंडल पंडू पंडोली नांदगांव नंदायर पिंडारसी पिंडरई पिंगली पिंगोरा पोंड़ी पुंडी पिंडी पुंडोरह जांजगिर जंजिरा पुंड पंगानूर फफूंद सिंड्री रंडीला रंगिया रंगपुर रंडेराव संडासल अंगड़ी डांडेली सिंगरौली संगोता संगी सिंडी संडूर संदीला टंडा

सिंगपुर सिंगावल टंडारा टंडो टन्डूर टंगी टंगला टंग डिंगरा डंडी गंडालूर गंगानी वेंडोलू हुंडेवाली ।

इस तरह के सैकड़ों नाम और भी हैं व हजारों नाम ऐसे हैं जिनमें अन्डादि शब्दों के अनुस्वार का लोप हो गया है जैसे मद्रास मदुरा अडोनी आडरा आडरी बदामी बदारपुर बुदनी बुड्ढोरा बिडेडी दादेर दादू दादरी दादसी गडग गडरवली गड़वल गुडूर गुडीवाड हडाली हडयाल हेडिआया हुडेरी ईडर इडापल्ली जडर वडाली कादीपुर लाड़खेड़ लाडपुरा लुडेवा लड्डाक मडीरा मदपुर नाड नडिआड नडगम ओडिया ओड्डुर पडरा पडरी सडूगढ़ सिड्ढोली तडाली ।

अब यह सहज प्रश्न उठता है कि बुन्देलखंडी भाषा क्या उन प्रदेशों में भी बोली जाती थी जहां आजकल ड्रेवेडियन भाषाएं बोली जाती हैं। इसका जवाब हां है । ड्रेवेडियन भाषाओं का विकास बाद का है। मद्रास व मदुरा शब्द बुन्देलखंडी हैं वे मंड शब्द से बने हैं मद्रास व उसके आसपास का प्रदेश अंग्रेजों के काबू में आने के पहिले तोंडल नाडू कहलाता था । यह तोंड शब्द बुन्देलखंडी है। नाडू (नाड) शब्द बुन्देलखंडी नंड से बना है । दक्षिण में नंड का नाड हो गया व काश्मीर में नाग हो गया । कलिंग तिलंग बंगलोर मंगलोर तंजोर व उटकमंड नाम हजारों साल पुराने हैं व बुन्देलखंडी हैं। बुन्देलखंड में पड़री नाम के बहुत से गांव हैं पड़री शब्द का अर्थ है छोटा सा गांव यह पड़ाव शब्द से सम्बन्धित है ड्रेवेडियन भाषाओं में इस शब्द का रूपांतर पिडगई हो गया है। पिडगई का वही अर्थ है जो पड़री का है । याने छोटा सा गांव। पड़री का पल्ली भी हो गया है। दक्षिण में कोंगू (कंग) प्रदेश रहा आया व कुछ समय के लिए उसके राजा गंग रहे आये। बिलकुल दक्षिण के प्रदेश का नाम पंड्या हजारों

साल रहा आया। यह शब्द बुन्देलखंडी है। नदी का नाम तुंगभद्रा बुन्देलखंडी शब्द टंड–भड्ड (अत्यन्त पवित्र) से बना है। रोटी और लड्डू शब्द हिंद में सर्वत्र हैं।

ड्रैवेडियन लोगों में रंगनाथ व श्रीरंग जो देवतों के नाम हैं वे (नाम) आर्यों के पहिले के हैं व बुन्देलखंडी है। संस्कृत में रंग कौनसा देवता है ? सारंग शब्द रंग से नहीं बना है। पांडुरंग व बजरङ्ग आर्यों के पहिले के देवता हैं। इन देवतों के नामों में जो रंग है वह बुन्देलखंडी है। वह आर्यन नहीं है। इससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि हिंद के दक्षिण में उत्तर की बुन्देलखंडी संस्कृति फैली रही। आला ऊदल में बुन्देलखंड के राजा का जो करिंगेराय नाम आता है, उसके सम्बन्ध में कुछ विद्वानों का मत है कि राजा का यह असली नाम नहीं होगा क्योंकि वह अच्छा नहीं है। राजेश्वर जागेश्वर विक्रमादित्य ऐसा कुछ होना चाहिये। यह मत सर्वथा गलत है। करिंगेराय नाम बिलकुल अच्छा है। पर वह बुन्देलखंडी अच्छा है आर्यन अच्छा नहीं है। करिंगे शब्द रंग से बना है व रंग एक देवता का नाम है। आर्यों के आने के बाद क उपसर्ग लग गया है। हिन्दुओं में रिंगे एक आड़ नाम है वह भी रंग देवता पर से बना है।

पर ऊपर जो कहा है उसके विपरीत भाषा शास्त्र के आजकल के धुरन्धर विद्वानों ने यह महा सिद्धांत निकाला है कि हिंद के भाषाओं के चार वर्ग हैं (१) इन्डो–यूरोपियन-आर्यन (२) ड्रैवेडियन (३) आस्ट्रो-आसियाटिक (४) सिनो-टिबेटन। इस वर्गीकरण में बुन्देलखंडी तो जाने ही दीजिये हिंदी मराठी गुजराती पंजाबी सिंधी माड़वाड़ी भाषाओं का कोई भी महत्व नहीं है। याने इन भाषाओं में आर्यन शब्द तो हैं ही पर इनके सिवाय जो अनार्यन हैं वे बाकी तीन वर्गों के हैं व और कोई पांचवी स्वतन्त्र भाषा नहीं थी। इस

तरह का वर्गीकरण होने पर अगर मो. लि. कभी भी न बांधी जा सके तो लेशमात्र आश्चर्य की बात न होगी। भंड भंडा भांड भंटा भट्ट भट्टा भट्टी शब्दों का विचार करिये कि वे किस भाषा में बने? ड्रेवेडियन भाषाओं में तामिल मुख्य है। उसमें भ अक्षर है ही नहीं। दूसरी ड्रेवेडियन भाषाओं में जो भ है वह संस्कृत से गया व नाम-मात्र को हैं। अगर मूल ड्रेवेडियन में भ होता तो वह तामिल में अवश्य होता अवेस्ता में भी भ नहीं है। आर्यन का कुछ शुद्ध रूप अवेस्ता में है। यूरुप की आर्यन भाषाओं में सेमेटिक भाषाओं में व फारसी में भी भ नहीं है। अंग्रेजी का शब्द कोष उठा के देखिये उसमें भ अक्षर से शुरू होनेवाला शब्द सिर्फ एक है वह है भंग! संस्कृत तो आर्यन है उसमें भ कहां से आ गया? इसका एक ही उत्तर यह है कि बुन्देलखंडी ही एक भाषा थी जिसमें भ अक्षर था व वहां से वह व भंडादि कई शब्द संस्कृत में गये। भ को छोड़ बाकी स्पर्श महाप्राण अक्षर भी न तामिल में हैं और न सब अवेस्ता में थे। बुन्देलखंडी में ख ठ ढ़ फ भ अक्षर शुरू ही से थे। आर्यों के आते तक बाकी घ छ झ भी बन गए थे व संस्कृत में चले गये। भाषाओं का जो यह वर्गीकरण किया गया है वह बिलकुल गलत है।

शहरों व गांवों के बुन्देलखंडी नाम और भी दूसरे प्रकारों से बने थे। उनमें के दो प्रकार उल्लेखनीय हैं। एक प्रकार के पट या पट्ट शब्द से बने व दूसरे प्रकार के कोट शब्द से बने। पट या पट्ट से बने नामों के गांव अक्सर नदी या समुद्र के किनारे होते थे जैसे पटना पाटन व वे जिनके नामों के अन्त में पट्टम शब्द है। कोट का अर्थ परकोटा होता है। इसलिये परकोटा वाले गांवों का नाम कोटा होता था। पर परकोटा होना जरूरी नहीं था। उत्तर के इन नामों में जो कोट है वही दक्षिण के कोट्टर व कोट्टायम में है।

उत्तर में काठमांडू व दक्षिण में स्टकमंड नाम हजारों वर्षों से बुन्देलखंडी के संरक्षक बने जाते हैं।

हिन्द के दक्षिण से बुन्देलखंडी लंका में गई। लंका शब्द लंग का रूपांतर है। उसमें कैंडी शहर है। कैंडी में वही कैंड है जो कैंडल व कैंड्री में है। केन्डी का कंड्या उसी तरह हो गया जिस तरह दक्षिण हिन्द में पंड या पिंडी का पंड्या हो गया।

चीन के भौगोलिक नामों में आदमियों के नामों में व भाषा में जो कुंग किंग संग सिंग लुंग लिंग तुंग तिंग चुंग चिंग इत्यादि शब्द आते हैं वे सब बुन्देलखंडी हैं।

हांगकांग = हंगकंग भी बुन्देलखन्डी है। इसमें वही हंग है जो हंगरी में है और हिंद के हंगू हंगुल व हिंगवानी नामों में है।

ब्रह्मा में रंगून व मांडले शहर हैं व पडांग पहाड़ है। इन्डोनीशिया में बांडुंग शहर है। जावा व सुमात्रा के बीच सांडा मुहाना (या समुद्र) है। आगे पूर्व में पंडन मिंडरनो मिंडोरो टापू है व बांड समुद्र है ये सब शब्द बुन्देलखंडी हैं। एशिया के दक्षिण पूर्व में हिंद से आर्यन संस्कृति पहुंची थी पर इसके पहिले बुन्देलखन्डी संस्कृति व भाषा पहुंच चुकी थी। मुंडा भाषा कुछ न कुछ अवश्य रही आई। पर जिस भाषा को आजकल जोरों से मुन्डा या आस्ट्रिक कहा जा रहा है उसकी धातु बुन्देलखंडी है। उसपर कहीं कुछ मुंडा का मुलम्मा चढ़ गया है।

रूस में व सइबीरिया में टुन्ड्रा है। तिब्बत में डंगला पहाड़ है व डंगरा झील है।

हिंद के पश्चिमोत्तर में कंडहार ताशकन्ड व समरकन्ड नाम के शहर हैं। टर्की व ग्रीस में पिंडस नाम का पहाड़ है। हंगरी नाम

में हंग है ही व उसकी री वही है जो देवरी डेहरी व पडरी में है । हंगरी की राजधानी बूढापेस्ट है व उसमें एक शहर पंडूर है । बूढापेस्ट में वही बूढा है जो हिंद के कई गांवों के नामों में है । इन गांवों में बूढाकेदार प्रमुख है । दमोह जिले में एक गांव बूढा हटा है व आसाम में एक गांव बूढी हाट है । बूढापेस्ट का बूढा बहुत बूढा है व पेस्ट उसके बाद का बसा हुआ समझा जाता है पर वह भी बुन्देलखन्डी शब्द पट्ट या पेठ से बना है ।

जर्मनी में डोर्कमुंड मेन्डन मिडन लिडन मुंडन शहर हैं । फ्रांस में मांड शहर है व एंडर नदी है । फोंडी शहर इटली में है व फौंडा इंगलेंड में है । इंगलेंड लंडन डंडी शब्द बुन्देलखन्डी हैं ।

एशिया व युरुप में अंड व अंग से शुरु होनेवाले कई भौगोलिक नाम हैं । यूरुप की भाषाएं अमेरिका व आस्ट्रेलिया पहुंच गई व इस तरह बुन्देलखंडी दुनियां भर में फैली है ।

३

आर्यन

आर्यन भाषा रूस में यूराल पर्वत के उत्तर के पास कहीं बनी। जिस महापुरुष ने आर्यन भाषा बनाना शुरु किया उसने पहिले पहल रि अक्षर या शब्द बनाया व हरएक चीज का नाम रि रि हो गया। भिन्नीकरण के हेतु धीरे धीरे दूसरे अक्षर रि में जोड़े जाने लगें। आदमी के लिये नरि (नृ) स्त्री के लिये नारी पहाड़ के लिये गिरि नदी के लिये सरि व पानी के लिये वारि शब्द बने। बाप के लिये पितरि (पितृ) व मां के लिये मातरि (मातृ) शब्द बने। रि का उपयोग इतना अधिक हो गया कि सैकड़ों साल बाद व्यंजन रि का स्वर ऋ भी बना डाला। आर्यन भाषा में र अक्षर ही प्रधान रहा।

जब आर्यन भाषा काफी उन्नत हो चुकी थी तब आर्य नीचे उतरे व रुस के दक्षिण में अफगानिस्तान में बस गये। जब वे यहां आकर बसे तब ही उनको हिन्दुओं की अनार्य भाषा व हिंदुओं के अनार्य देवी देवताओं का सामना करना पड़ा। यह सिद्ध हो चुका है कि इराक में पांच हजार साल से सेमेटिक व अन्य जातियां रही आयीं व सिंधु घाटी में भी कोई सभ्य जातियां रही आयीं और इन दो देशों के जातियों का परस्पर व्यापारिक सम्बन्ध रहा आया। इसलिये अनार्य हिंदू लोग इराक व उसके पश्चिम तक जाते आते रहे व वहां के लोग हिंद में आते जाते रहे। इन लोगों का आवागमन का मुख्य मार्ग अफगानिस्तान में से ही हो सकता था, ऐसी स्थिति में यह मानना असम्भव है कि आर्यों ने जब

दक्षिण रूस व अफगानिस्तान पर कब्जा किया तब वे मुल्क निर्जन थे या वहां सिर्फ कुछ जंगली लोग रहते थे। वहां पर निस्संदेह कोई न कोई सभ्य जातियां रहती थीं व आर्यों को कब्जा करने के लिये उनसे लड़ना ही पड़ा होगा। लड़ाई में आर्यों को वैसी ही आसानी से सफलता मिली जैसी कि ऐतिहासक काल में अन्य जातियों को जिनने इन मुल्कों पर आक्रमण किया अकसर मिलीं।

कहा जाता है कि अफगानिस्तान हिंद का अंग रहा आया। वह राजनैतिक अङ्ग रहा हो चाहे न रहा हो पर यह बात पक्की हैकि वह व उससे लगा प्रदेश मुसलमानों के आक्रमण तक हमेशा हिंद का सामाजिक धार्मिक व भाषिक अंग रहा आया। इसलिये करीब ५०००साल पहिले जब आर्य वहां आ बसे तब वहां अनार्य हिंदू संस्कृति ही थी। वहां के लोग बुन्देलखंडी हिन्दी बोलते थे व हिंदू देवतों को पूजते थे। यह बात इतिहास सिद्ध है कि जब एक संस्कृति के लोग दूसरी संस्कृति के लोगों के देश को जीतकर वहीं रहने लगते हैं तो दोनों संस्कृतियों का मेल होने लगता है। पर मेल होने के प्रक्रिया में कुछ टंटे भी उपस्थित होते हैं। प्रागैतिहासिक इतिहास के विशेषज्ञों ने यह कभी ठीक विचार नहीं किया कि जब आर्य हिन्द के बाहरी पश्चिमोत्तर में आकर बसे तब उनके पहिले वहां कौन लोग रहते थे। यह विचार न करने से एक गलत विचार धारा निकल पड़ी व वह आज तक बहती जाती है।

देव शब्द की उत्पत्ति अनार्य शब्द से है। अनार्य हिंदुओं के मुख्य देवता का मुख्य नाम डीह (डी) था इस डीह शब्द का आर्यन रुप देव कर दिया गया। यह देव शब्द हिन्द के बाहर बना। जो लोग अफगानिस्तान व उसके आसपास आर्यों के आने के पहिले से रहते थे वे डीह की व अन्य हिंदू देवताओं की पूजा करते थे। आर्यों का मुख्य देवता शुरु में असुर या अहुर था। इस शब्द का अर्थ प्राण रक्षक होता है। इस देवता के सिवाय वे सूर्य चन्द्र अग्नि

की भी पूजा करते रहे होंगे। पर जब उनके सामने कई हिंदू देवता आ गये तो उन्होंने उनमें से कुछ तो मान लिये पर वे डीह व उसके साथ के एक दो दूसरे देवता मानने तैयार नहीं हुये। यह बात नहीं थी कि कोई भी आर्य इनको मानना नहीं चाहता था। कुछ लोग चाहते थे पर अधिकांश ने नहीं माना और वे यहां तक डीह के विरुद्ध हो गये कि देव शब्द का अर्थ राक्षस कर दिया व यह अर्थ फारसी में आज तक है। इस अर्थ के होने का कारण यह नहीं है कि आर्यों की दो शाखाओं में—एक जो हिंद में आई व एक जो ईरान को गई-कोई झगड़ा हुआ था। इसका कारण यह है कि आर्यों व अनार्यों में झगड़ा होता रहा।

इसी तरह यह कहना भी गलत है कि आर्यों की वह शाखा जो ईरान को गई घर बसाकर रहती थी व दूसरी शाखा जो हिंद को आई घूमती फिरती थी व लूटमार करती थी। पारसी धर्म ग्रंथ में जो लूटमार करने वालों का निदर्श है वह आर्यों की शाखा का नहीं है। वह उन लोगों का है जिनका देश आर्यों ने जबरन छीन लिया था। वे लूटमार न करते तो क्या करते ?

अवेस्ता में एक शब्द वेंदीदाद आया है। वह वें-दी-दाद है। वें याने विरुद्ध दी याने देव दाद याने दिया हुआ। इस शब्द में जो दी है वह बुन्देलखंडी डीह डी ही है। यहां पर डी का देव नहीं हुआ। अवेस्ता भाषा में ड अक्षर न होने से दी हो गया है। उस समय का इतिहास व भाषा विज्ञान समझने के लिये वेंदीदाद के दी शब्द का मूल्य अनङ्कनीय है।

देवासुर संग्राम का देवासुर शब्द कैसे बन गया ? शब्द सुरासुर होना था। अगर असुर शब्द का अर्थ राक्षस था तो सुर शब्द इसके पहिले ही बना होना चाहिये। फिर सुरासुर शब्द के प्रयोग करने में

क्या अड़चन थी ? बात यह है कि देवासुर शब्द हिंद के बाहर बना व जब बना था तब अनार्य लोग देव थे व आर्य लोग असुर थे याने आर्यों के हिंद में आने के पहिले आर्यों व अनार्यों के बीच जो लड़ाइयां हुई उनमें आर्य अपने देवता असुर के तरफ से लड़ते थे व अनार्य अपने देवता देव (डीह) के तरफ से लड़ते थे। सैकड़ों साल बाद हिंद में देवासुर शब्द का अर्थ बिलकुल उलटा हो गया।

जैसे देव शब्द बना वैसे ही दानव शब्द बना। यह भी हिंद के बाहर बना व बुन्देलखंडी शब्द से बना। हिंद के लोग व हिंद के उत्तर-पश्चिम के लोग सुबह को डां डां डूं डूं कहते थे व शाम को ढां ढां या ढूं ढूं कहते थे। डां डां के उच्चारण पर से आर्यों ने दानव शब्द बनाया और अनार्यों को दे दिया। यही कारण है कि दानव शब्द संस्कृत व अवेस्ता दोनों में हैं।

यह बात सब ही मानते हैं कि वेदों में-कम से कम उनके शुरू में—आर्यों के देवतों की लिस्ट में शिवजी नहीं हैं और यह भी सही बात है कि वेदों में देवता के अर्थ में असुर शब्द का प्रयोग किया गया है। इससे यही सिद्ध होता है कि देवासुर शब्द का अर्थ जो ऊपर किया गया है वही सही है। जब आर्य डीह = देव = शिव को मानने लगे तब कहीं असुर शब्द का अर्थ राक्षस हमेशा के लिये हुआ।

आर्यों की दो शाखाएं हो गईं व उनमें से एक ईरान चली गई। वहां भी पहिले की आबादी थी। अवेस्ता में यह कहा गया है कि जरथुश्थ्र खुद पहिले देव पूजक रहे आये। इससे यही सिद्ध होता है कि ईरान में भी अनार्य हिन्दू संस्कृति रही आई व डीह की पूजा होती थी व जरथुश्थ्र भी उनके पूजक रहे आये। वे बाद में डीह के विरुद्ध हो गये व उस देवता के विरुद्ध एक नया धर्म

घबड़ाया जो चल गया व ईरान से डीह का बहिष्कार हो गया। मालूम पड़ता है कि इन आर्यों का सामना करने में ईरान के पुराने निवासी टिक न सके।

आर्यों की दूसरी शाखा हिंद में आई व पंजाब के कुछ हिस्से को जीत कर उसपर काबिज हो गई। आर्यों में ताकत थी, पौरुष था और बुद्धि भी थी। पर उस समय हिंद में करोड़ों आदमी रहते थे। गोरे भी थे सांवले भी थे व कुछ काले भी थे। इनकी सभ्यता उस समय के हिसाब से संसार में सर्वोच्च थी। वे युद्ध कला लिखन कला शासन कला व अन्य विद्याओं में बहुत उन्नति कर चुके थे। आर्य इनसे लड़ते रहे पर कहां तक लड़ते ? इसलिये दोनों मिल गये व आर्य लोग हिंद की पुरानी सभ्यता ग्रहण करने लगे व हिन्द के कुछ देवी देवता मानने लगे। हिन्द के पुराने निवासी भी आर्यों का लोहा मानने लगे व उनको आदर से देखने लगे। जो कुछ हुआ वह वही हुआ जो बाद में हिंद के इतिहास में कई बार हुआ। हिंद में ग्रीक सीथियन कुशान शाक हूण आये और हिन्दुओं में समा गये। ठीक उसी तरह आर्य हिंद में आये और (अनार्य) हिंदुओं में समा गये। सिर्फ एक बात का फरक हुआ था। वह यह कि हिंदुओं ने आर्य नाम ग्रहण कर लिया व अपने को आर्य कहने लगे। गांव अनार्य हिंदुओं का बना रहा पर नाम आर्यों का हो गया।

इस मेल से संस्कृत भाषा की उत्पत्ति हुई। बुन्देलखंडी व आर्यन मिल के संस्कृत बनी बुन्देलखंडी शब्द भराभर संस्कृत में लिये जाने लगे। संस्कृत बनाने की मुख्य विधि यह थी कि बुन्देलखंडी शब्द में पूरा या आधा र जोड़ देना। इस तरह नींद से निद्रा मिट से मित्र चम से चर्म अग से अग्र मिट्टी से मृत्तिका खपरा से खर्पर खजूर से खर्जूर शब्द बने। कुछ ख का क्ष कर दिया गया जैसे राख का रक्षा खेम का क्षेम खमा का क्षमा भीख

का भिक्षा। ट वर्ग का अक्षर अकसर त वर्ग में बदल दिया कोई कोई शब्द ज्यों के त्यों ले लिये गये जैसे मुंड सुंड कुंड। इस तरह संस्कृत बन जाने पर उसके योग्य व्याकरण भी बन गई।

वेद बनाने में व वेदों के बाद का संस्कृत साहित्य बनाने में नये आर्य—याने हिंद के पुराने हिन्दू—शामिल होने लगे। इस तरह धीरे धीरे संस्कृत भाषा बन गई व वह देव वाणी समझी जाने लगी। लोग भूल गये कि वह दो भाषाओं से बनी है। पर बुन्देलखंडी के सब शब्द संस्कृत में नहीं गये थे व वह भाषा बोली चली जाती रही। संस्कृत बोलने वाले व लिखने वाले कभी कभी बुन्देलखंडी भाषा में से नये शब्द लेकर उनका प्रयोग संस्कृत में कर देते थे। इसलिये एक समय आ गया जब यह प्रश्न उठ बैठा कि बुन्देलखंडी के वे शब्द जो संस्कृत में पहिले नहीं लिये गये अब उसमें लिये जावें या नहीं। शुद्धक लोग तब भी थे व उन्होंने नये शब्द लेने का विरोध किया। पर शुद्धकों की चलती कब है व आखिर में पंडित वामन ने यह सूत्र बना डाला:—

"अभिप्रयुक्तं देश भाषा पदम्" याने जिन अनार्य शब्दों का प्रयोग संस्कृत में होने लगे वे संस्कृत के ही शब्द समझे जावें।

नामों पर से मार्कण्डेय कौंडिल्य शांडिल्य व कामंदक ऋषि देसी (अनार्य) आर्य मालूम पड़ते हैं। बाल्मीकि तो थे ही ऋग्वेद में जिन पुराने ऋषियों का निदर्श है वे आर्यों के पहिले के देसी थे।

आर्यन भाषा में भ अक्षर नहीं था। उसमें घ छ झ अक्षर भी नहीं थे। शुरू में बुन्देलखंडी में भी घ छ झ नहीं थे। पर बाद में विकसित हो गये। जब संस्कृत में सिलसिलेवार वर्णमाला बनी तब ये चारों अक्षर उसमें लिये गये व उसी समय अंड बंड सरीखा घंड शब्द बना लिया गया। घंड = मधु मक्षिका। पर यह शब्द संस्कृत

में ही रहा। आर्यन में ट वर्ग बिलकुल नहीं था व फ अक्षर भी नहीं था। अवेस्ता में कुछ फ दिखता है वह उसमें बुन्देलखंडी या सेमेटिक से बाद में पहुंचा। ट वर्ग के अक्षर और फ संस्कृत में बुन्देलखंडी से गये। संस्कृत का शब्द कोष देखा जाय तो दिख पड़ता है कि जिन शब्दों का पहिला अक्षर ट वर्ग का है या घ छ झ या फ है वे बहुत कम हैं। व उनमें से अधिकांश ऊपर ही बुन्देलखंडी दिखते हैं।

प्राकृत संस्कृत शब्द है व उसका सही मतलब है बिगड़ी हुई संस्कृत। संस्कृत के पहिले प्राकृत नहीं थी। पहिले बुन्देलखंडी और आर्यन दो भाषाएं थी। दोनों से संस्कृत बनी। बाद में संस्कृत से प्राकृत बनी। इसलिये बुन्देलखंडी को प्राकृत कहना बिलकुल गलत है। अगर मिडिलची लोग अंग्रेजी में लेख लिखें और उन लेखों का संग्रह किया जावे तो उनमें अंग्रेजी की प्राकृत (पिजिन) देखने को मिल जायगी। भाषा शास्त्रियों ने शुद्ध संस्कृत छोड़ हिन्द के बोलियों के जो दो भेद भाषा और विभाषा किये हैं वे कुछ समझदारी से किये हैं। जिन बोलियों को विभाषा कहा है वे प्राकृत नहीं हैं।

हिंद में अंग्रेजी राज्य के समय का जरा ख्याल कर लीजिये। कितने लोगों ने अंग्रेजी सीख ली थी ? गांव खेड़ों के लोग अपनी अपनी प्रादेशिक भाषायें बोलते रहे और १०-१५ अंग्रेजी शब्द सीख लिये। माना कि अंग्रेजी राज्य सिर्फ १५० साल के करीब रहा व संस्कृत का प्रभाव २००० साल के ऊपर रहा। पर संस्कृत को हिंद भर में फैलाने के लिये कम से कम १५०० साल लग गये होंगे। और जब वह फैली तब उसका क्षेत्र शहरों और कुछ बड़े गांवों व तीर्थ स्थानों तक ही सीमित रहा। गांव खेड़ों में दूर जाकर वहां के आदमियों को संस्कृत पढ़ाने के लिये कितने

पंडित जाते होंगे और अगर कोई गया भी तो कितने आदमी पढ़ने तैयार होते होंगे ? गांवखेड़ों के ६८ फी सदी लोगों ने संस्कृत कभी नहीं सीखी। पर संस्कृत बोलने वालों का राज्य रहा आया इसलिये २-३ हजार साल में उन्होंने सौ डेढ़ सौ संस्कृत शब्द सीख लिये । हिन्द के सिर्फ २० फी सदी लोग संस्कृत, पाली व प्राकृत बोलते रहे। बाकी ८० फी सदी बुन्देलखंडी ही बोलते रहे।

जो लोग संस्कृत नहीं जानते थे पर संस्कृत बोलने वालों के सम्पर्क में रहते थे वे संस्कृत सीखने की कोशिश करते थे पर वे अधूरी ही सीख पाते थे व उसका उच्चारण ठीक नहीं कर पाते थे। ये लोग जिस प्रकार की बोलियां बोलने लगे वे ही पाली व प्राकृत हो गईं। धीरे २ लोगों ने संस्कृत को मनमाना बिगाड़ना शुरू कर दिया। बिगाड़ते बिगाड़ते पाली व प्राकृत खतम हो गईं व उनके साथ संस्कृत भीं गई। आप डुबंते पांडे ले डूबे जजमान।

आचार्य श्री हेमचन्द्र ने प्राकृत की यह परिभाषा बनाई थी:-

प्राकृतिः संस्कृतम्, तत्र भवं तत आगतं वा प्राकृतम् ।

याने संस्कृत से बनी भाषा को प्राकृत कहते हैं। बारहवीं सदी में इतनी साफ व सही परिभाषा बन जाने पर भी बीसवीं सदी में हिन्द के भाषाओं के वे शब्द जो संस्कृत नहीं हैं व संस्कृत से बने भीं नहीं हैं प्राकृत कहे चले जाते हैं।

४
कुछ शब्दों के कुछ अर्थ

मो० लि० की भाषा में कई शब्द ऐसे हैं जिनमें से हर एक के कई अर्थ होते थे। आज भी हिन्दी में कई शब्द ऐसे हैं जिनमें से एक एक के एक दर्जन से भी अधिक अर्थ हैं। उस समय जब शब्दों की कमी थी एक शब्द के कई अर्थ होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

इस पुस्तक में जहां यह लिखा जायगा कि फलाना अंग्रेजी शब्द फलाने बुन्देलखंडी शब्द से बना है उसका अर्थ यह नहीं होगा कि वह अंग्रेजी शब्द सीधे बुन्देलखंडी शब्द से बना है। यूरुप की अन्य भाषाओं के अपेक्षा अंग्रेजी नई भाषा है व दूसरी यूरोपियन भाषाओं से बनी है। इन भाषाओं में बुन्देलखंडी शब्द गए व वहां से अंग्रेजी में पहुंचे। अंग्रेजी शब्द देने में दो सुभीते हैं। एक यह कि बहुत लोग अंग्रेजी जानते हैं। दूसरा यह कि बुन्देलखंडी भाषा का पश्चिम तरफ का आखिरी छोर अंग्रेजी ही है याने अंग्रेजी के कई शब्दों की जड़ें बुन्देलखंडी में पाई जाती हैं और अंग्रेजी व बुन्देलखंडी शब्दों में आश्चर्यजनक समानता मिलती है। यह भी है कि गर्मी के दिनों में नदियां बीच बीच में सूख जाती हैं पर सूखी जगह के आगे पानी रहता है व अखीर में रहता ही है। गये चार सौ साल में हिंद के प्रादेशिक भाषाओं के जो शब्द अंग्रेजी में गये हैं उनसे व इस पुस्तक के विषय से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है क्योंकि मो० लि० ७-८ हजार साल पुरानी है।

यह बार बार नहीं लिखा जायगा कि ट वर्ग का अक्षर त वर्ग के अक्षर में बदल गया।

अंड

अंड = विश्व। इसीसे संस्कृत शब्द ब्रह्मांड बना व ग्रीक शब्द ओंटा बना। अंग्रेजी में ओंटोलोजी है।

अंड = सूर्य, चन्द्रमा। इनका भेद बताने के लिये इनके पहिले कोई न कोई विशेषण लगाया जाता था। संस्कृत में अंड = सूर्य का मार्तंड (मिट + अंड) हो गया व अंड = चन्द्रमा का इन्दु हो गया।

अंड = और। इससे अंग्रेजी शब्द एन्ड बना मराठी आणि व गुजराती अने बने।

अंड = एक, अंडा, परंड, ग्रह, आदमी। देवतोंके नामों के साथ जोड़ने का एक आदर सूचक पदवी।

अड्ड

अड्ड = आदि, आगे का, अड्डा।

आंड = भीतर, आड़। भीतरके अर्थमें इससे फारसी शब्द अन्दर बना व मराठी शब्द आंत बना।

इंड

इड = नीला रंग, नील। इससे अंग्रेजी का इंडिगो शब्द बना।

इंड = इंदारा, इंधन, जवान।

इड्ड

इड्ड = पृथ्वी, इल्ली, हठ।

इड्ड = पास, यहां। यहां के अर्थ में आज के बुन्देलखंडी के इते और ईलें व मराठी का इथे शब्द बने।

ईंड

ईंड = आंख, देखना। इससे अंग्रेजी शब्द आई व आइडिआ बने अनुस्वार व ड का लोप हो गया। इससे संस्कृत का ईक्ष शब्द बना। इसीसे हिंदी का नींद (न + ईंड) शब्द व संस्कृत में नींद

का निद्रा हो गया। नींद शब्द महत्व का है उससे यह सिद्ध होता है कि नकारात्मक न अनार्यन है। बुन्देलखंड में अभी भी एक क्रिया शब्द मींदना (मींडना) है। इसका अर्थ बन्द करना है और वह अक्सर आंखों के साथ ही आता है। इस मींद में भी ईंड है। म अक्षर का भी नकारात्मक अर्थ था म से संस्कृत मा बना व वह फारसी में भी पहुंच गया। आज बुन्देलखंडी में आगें है व मराठी में सांगें है। शुरू में मींड शब्द बना व बाद में उसका मूंद हो गया मूंद शब्द तामिल में भी है। ईंड से फारसी शब्द दीद बना व ग्रीक शब्द ईडीन बना।

ईंड = लज्जा। इससे संस्कृत शब्द व्रीड बना। यह शब्द यूरूप में गया व उसका याने लज्जार्थी ईंड का अर्थ खराब हो गया व आखीर में अंग्रेजी शब्द ईडियट बन गया। यही हाल हिंद में भी हुआ। आज के बुन्देलखंडी में ईंड से बना शब्द इड्ड है।

इड्ड = हठ।

उंड ऊंड

उंड या ऊंड = ऊंचा गरम धूप। धूप के अर्थ में इससे मराठी शब्द ऊन बना।

उड्ड

उड्ड = वहां, दूर, ऊंचा। इससे आज के बुन्देलखंडी शब्द उते व उतैं बने।

उड्ड = उदय होना। इससे बुन्देलखंडी शब्द ऊगना बना। ड का ग हो गया।

एंड

एंड = एंडी = एड़ी शब्द एंड से ही बना है।

ओंड

ओंड = ओंड़ा = गड्ढा ओंधा गरम।

कंड

कंड = कान। इससे संस्कृत शब्द कर्ण बना।

कंड = कोई भी चीज जो एक तरफ या दोनों तरफ चपटी हो कंडा कंडी (उपली) कुंड़री कुन्डी कंडी (कंजी) कुम्हड़ा कंघी।

कंड = प्रेत कंद कुन्दा।

कंड = दयालु नरम। इससे अंग्रेजी शब्द काइंड—दयालु बना।

खंड

खंड = तुकड़ा, टूट फूट जाना हिस्सा मकान या कोई भी चीज जिसमें खंड हों।

खंड = अनाज। इससे बुन्देलखंडी खोंडिया शब्द बना। जमीन में गड्ढा करके अनाज रखते हैं उस गड्ढे को खोंडिया कहते हैं। अनाज के रूप में जो लगान दिया जाता है उसे भी खंड कहते हैं। अनाज के एक नाप को खांडी कहते हैं। तामिल में इस शब्द का कन्डी हो गया।

खंड = सूर्य चन्द्रमा ग्रह। इससे हिंदी शब्द खग बना।

खन्ड = सात।

खन्ड = कन्धा, स्कन्ध। बुन्देलखंडी में आज भी खांदा बोलते हैं। खंड से स्कन्ध बना।

गंड

गंड = ईश्वर। मो० लि० की भाषा में गंड शब्द सबसे कठिन है क्योंकि उसका अर्थ ईश्वर होता है। किसी को भी यह अर्थ मानने में मुश्किल जायगी क्योंकि आज कल यह शब्द अच्छा नहीं समझा जाता व गुंडा व गंदा शब्द इसीसे बने हैं। पर भारत में पश्चिम-उत्तर तरफ जो नाम गंडामल व गंडासींग रहते हैं उनमें का गंडा शब्द गंड = ईश्वर से ही बना है। और यह शब्द दस हजार साल पुराना है। कोई भी मां बाप अपने लड़के को रही नाम नहीं देना चाहते। क्या आदमियों के नाम क्या स्त्रियों के नाम क्या गांवखेड़ों के नाम ईश्वर के नामों पर से ही बहुधा रखे जाते थे।

संस्कृत में गंड से बने शब्द गंडली का अर्थ शिव है व अभी भी गंड शब्द का अच्छा अर्थ कहीं कहीं मिलता है जैसे छात्र गंड शब्द में गंड का अर्थ तीव्र बुद्धि वाला होता है। अर्जुन का धनुष गांडीव बुन्देलखंडी ईश्वर की ही देन थी। यह गंड शब्द बदलता गया व उसका गुड्ड हो गया। इस गुड्ड से अंग्रेजी शब्द गोड बना। गुड्ड का फिर गुट्ट भी हो गया व बाद में गुप्त हो गया। बड़े बड़े राजे महाराजों का आड नाम गुप्त था वह इसलिये था कि गुप्त का मतलब ईश्वर था। अन्यथा गुप्त का कौनसा अर्थ हो सकता था कि वह एक प्रतिष्ठित नाम हो जावे ? देवता व महाराजा गुप्त तो रहते नहीं थे। यह बात देखनीय है कि चन्द्रगुप्त को ग्रीक भाषा में सेंड्रोकोट्ट कहा है। इसमें का कोट्ट गुट्ट शब्द का रूपान्तर है। चन्द्रगुप्त का असली शब्द चन्द्रगुट्ट था। आर्यों को गुट्ट पसन्द नहीं आया इसलिये उसका गुप्त कर दिया। गुट्टेश्वर व गुप्तेश्वर शिव जी के नाम हैं। तेलुगू में ईश्वर के मन्दिर को गुडी कहते हैं व कन्नड में गुंड=ईश है। गुजरात का मूल नाम गुड्डराट था। गुड्डराट=ईश्वर का राज्य। ड का ज हो गया. गुर्जर शब्द बहुत बाद का है।

मराठी में वर्षारंभ दिवस को गुडी पाडवा कहते हैं। गुडी का अर्थ है ईश्वर। पर यह अर्थ भूल गये इसलिये गुडी का गुढी कर दिया व गुढी का अर्थ ध्वजा कर दिया। क्या देवी देवताओं के नामों की कमी पड़ गई थी जो इतने बड़े पर्व का नाम ध्वजा पर से रखा गया ? गड़बड़ी समझने के कारण मराठी पंचांगों में गुढी पाडवा भी नहीं लिखा जाता। लड़कों का एक लाड़ला नाम गुंड्ड भी है। यह नाम बाद में गुंडोपन्त हो जाता है।

गंड=गाल, कनपटी चार समूह, तना, गुंडी।

गड्ड

गड्ड गुड्ड गड्डी शब्दों का अर्थ समूह है। गुड्ड का आजकल गुच्छ हो गया है।

गड्डा = गद्दा छोटी गाड़ी ।

चंड

चंड = अग्नि प्रबल गरमी जलाना तपाना । यूरोपिअन भाषाओं में चंड के च का क व श हो गया केन्डल और शेन्डेलियर शब्द बने । हिंद में शीघ्र ही चंड का संड हो गया और मो॰ लि॰ में अग्नि के अर्थ में संड ही अधिक है । चांड से चिंगारी शब्द बना । ड का ग हो गया ।

जंड

जंड से जड़ शब्द बना ।

टंड

टंड = आकाश पृथ्वी ऊंचा लम्बा मोटा भगवान बड़ा जानवर झंडा तुंग चोटी ।

टुंड = मुंह । यह शब्द संस्कृत में चला गया ।

टंग = जीभ हिंदी में टंगना क्रिया है । जीभ टंगी रहती है । यह शब्द अंग्रेजी में ज्यों का त्यों चला गया ।

टड = तड

तड = पानी । हिंदी में तड़तड़ शब्द है जिसका अर्थ पानी की बौछार है । अंग्रेजी शब्द वाटर में जो टर है वह यही तड है । फारसी का तर भी यही तड़ है । तड़ का तर हिंद में ही हुआ व वहां से फारसी में गया तरकारी शब्द का अर्थ है गीली काड़ीं काड़ीं का कारी हो गया और यह शब्द ड्रेवेडियन भाषाओं में भी है । तडाग शब्द बुन्देलखंडी है । वह तड + अड्डा है ड का ग हो गया । तडाग शब्द संस्कृत में ले लिया गया । अ लोप होकर तडा = तला हो गया ।

तड = सिंचाई के लिये पानी जाने का पाट ।

तड = तल (ड का ल हो गया) तलवार मूसल काटना कूटना ।

टड = पृथ्वी । यह टड अनुस्वार विहीन टंड है । पृथ्वी के अर्थ में टड से लेटिन शब्द टेरी बना ।

ठंड

ठंड=ठंड ठाड़ा।

डंड

डंड=डंडा या डंडा सरीखी चीज।

डंड=दंद=आपत्ति।

डंड=हाथ पैर। हाथ को उड्डंड कहते थे व पैर को तडडंड कहते थे। मराठी में दंड का अर्थ हाथ अभी भी है हिंदी में दंड एक कसरत है जो हाथ पैरों से की जाती है। हिंदी में डंड से डगरी या डगरिया= हाथ शब्द बना।

सय्यां मोरी पकड़ो डगरिया।
—एक हिन्दी गाना।

इसमें अनुस्वार का लोप हो गया व ड का ग हो गया। डगरिया का अर्थ पेड़ की डाल भी है। डगरी का डगाल हुआ व डगाल का डाल रह गया। आज के बुन्देलखंडी में डाल के अर्थ में डगाल डगार डाल डार डगरिया डरइया शब्द चल रहे हैं। ये सब शब्द डंड से बने हैं। डंड से अंग्रेजी शब्द हेंड बना।

ढंड

ढंड=पृथ्वी। इससे संस्कृत शब्द धरा बना।

णंड=नंड

नंड=नंद= खुशी मनाना आनन्द करना। नन्द शब्द संस्कृत में चला गया।

नंड=नंद=लम्बी लाइन में खोदना इससे नारी (नाली) नाडी ब नदी शब्द बने।

पंड

पंड=पंडित पंडा श्रेष्ठ ज्ञान विद्या सफेद।

पंड=फल लटकन। इससे अंग्रेजी शब्द पेंडेंट बना।

पंड=पांच।

पंड=पूजा करना पढ़ना जानना निश्चय करना।

पड=पत्ती। इसका पडंद (परंद) जल्द ही हो गया था।

पंड=नर का एक अंग। इस शब्द से यूरोपिअन भाषाओं के इसी अर्थ के शब्द बने।

फंड

फंड=फंद फंदा। फंड का मुख्य अर्थ फंदा ही रहा है इसलिये फंदा के आकार की चीजों को भी फंड कहते थे।

फंड=सुन्दर। इस अर्थ में फंड का फुंड=फुंद हो गया। संस्कृत शब्द सुन्दर इसी फुंद से बना है। सुन्द तो ताड़का के राक्षस पति का नाम था। उससे सुन्दर क्या बनता। फुंद का फुंदी हो गया व बुन्देलखंड में कई आदमियों के नाम फुंदीलाल हैं। फुंदी का फुंटी हो गया व आज के बुन्देलखंडी में फुंटी का अर्थ जवान खूबसूरत औरत है। फुंटी शब्द का प्रयोग कुछ फूहड़ समझा जाता है। फुंड से अंग्रेजी शब्द फोंड बना।

फंड=मादा का एक अंग। इस शब्द से इसी अर्थ के यूरोपिअन भाषाओं के शब्द बने। इससे बना हुआ फुद्दी शब्द बुन्देलखंडी में अभी चल रहा है।

फंड=फंग=फुंगा=किसी बड़ी वस्तु से निकली हुई छोटी या बारीक चीज। फुंगी फुनगी शब्द भी हिंदी में हैं। उंगली शरीर से निकली है इससे उसे फंड या फंग कहते थे। फंग से अंग्रेजी शब्द फिंगर व फंगस बने। फुनगी से फुनसी बना। यह फंड फारसी में गया।

फंड=फूंगी हुई चीज फुग्गा शब्द फंड से ही बना है।

वंड

वन्ड=हवा। यह शब्द व अंग्रेजी शब्द विंड एक ही है। उच्चारण में कुछ फरक पड़ा है इससे संस्कृत की बात व फारसी का बाद शब्द बने। हिंदी में इससे बवंडर व बन्दूहा शब्द बने।

इन दोनों शब्दों का अर्थ तूफान है।

बंड=बंद बन्द करना बन्दी।

बंड़=बाजा। बाजा शब्द इसीसे बना ड का ज हो गया इससे अंग्रेजी शब्द बेंड बना।

बंड=बांधना बन्धन। इससे अंग्रेजी शब्द बाइन्ड व बोंड बने व संस्कृत बंध् बना।

बंड=रिश्तेदार। इससे हिंदी शब्द बन्द (भाई बन्द में) व संस्कृत शब्द बन्धु बने।

बंड=पट्टी। इससे अंग्रेजी शब्द बेंड व बैज बने।

बंड=बंज। ड का ज हो गया है बंज से अरबी शब्द बाजार बना।

बंड=वन्दना वंदना करना। इससे अरबी शब्द बन्दगी बना।

बंड=बन्डा बन्डी।

बंड=दो हरा बन्जर भूत।

बंड=पाताल लोक का देवता (स्पिरिट) जो बुरा होता है पर पूजा करने से भला हो जाता है।

बंड=जंगली जानवर या हिंसक जन्तु।

बंड=बलवा करने वाला, डाकू, यह शब्द मराठी में है। इससे अंग्रेजी शब्द बेंडिट बना।

बंड=बड़ा। बंड का पहिले बड्ड हुआ व बड्ड का बड़ा हो गया।

बंड=बुरा। इससे फारसी शब्द बद बना व हिंदी शब्द बुरा बना।

बंड=बनाना बांधना (रचनात्मक) बांध। इससे अंग्रेजी शब्द बिल्ड बना।

बंड=बिंद बिंदु बिंदी।

भंड

भंड के अर्थ कुछ परस्पर विरोधी होते हैं।

भंड=फोड़ना तोड़ना छेदना । इससे भंडया= चोर शब्द बना है । इससे संस्कृत शब्द भंज् बना ।

भंड=पोषण करना । अन्नादि की पूर्ति करना । इस शब्द से हिंदी के भँडार भंडारी शब्द बने हैं।

भंड=भेद गुप्त वातें जानना हंसी करना । इससे भड्डरी भंडेला भांड व भंड़रिया शब्द बने ।

भंड=वर्तन । इससे भंडा व भंडोली शब्द बने । इससे संस्कृत भांड बना व मराठी भांडें बना ।

भंड=जलना जलाना । इससे भूंजना व भड़भूंजा शब्द बने।

भंड=छूह ।

भंड=भौंरा । इससे संस्कृत शब्द भृंग बना।

भंड=भद्दा भूरा । ये दोनों शब्द भंड से बने ।

भंड=भजन करना पूजा करना भजन पूजन। इससे संस्कृत शब्द भज् बना ।

मंड

मंड=मध्य । संस्कृत शब्द मध्य इसीसे बना । अंग्रेजी मिड (मिडिल) इसीसे बना ।

मंड=चन्द्र । इससे जर्मन शब्द मोंड बना व ड का लोप होकर अंग्रेजी शब्द मून बना । अवेस्ता व फारसी में इसका माह हो गया ।

मंड=टीला पहाड़ । अंग्रेजी के माउन्ड व माउन्ट शब्द इससे बने ।

मंड=में मंडल सिर मड़ेचा मड़वा मुंडन ।

मंड=खुश होना। संस्कृत शब्द मुद् इससे बना।

मंड - मंडन करना=सुशोभित करना।

मंड=एक प्रत्यय। इस प्रत्यय का जो अर्थ है उसी अर्थ में संस्कृत में इसका मत् (मान्) हो गया व फारसी में मंद हो गया।

मंड—मन, इससे संस्कृत शब्द मानस् बना व अंग्रेजी शब्द माइन्ड बना।

संस्कृत में ड् का लोप हो गया। काठियावाडी में मनडा शब्द बना जाता है।

मंड=दुनियां। इससे फ्रेंच मोंड व अंग्रेजी मन्डेन शब्द बने।

रंड

रंड=छेद। इससे संस्कृत शब्द रंध्र बना व हिंदी शब्द रन्दा बना।

रंड=किरण। किरण में जो रण है वह ड् विहीन रंड है। रंड से अंग्रेजी के रे व रेडिएन्ट शब्द बने। हिंदी में रंड का रंस हो गया।

रंड=दौड़ना। इससे अंग्रेजी शब्द रन बना ड् का लोप हो गया हरिण व कुरंग शब्द भी इसीसे बने हैं। इनकी तेज दौड़ के कारण ये शब्द बने। रंड से बना हुआ शब्द रिंगना आज भी बुन्देलखंडी में है पर उसका अर्थ सिर्फ चलना है दौड़ना नहीं है।

रंड=छिलका। इससे अंग्रेजी शब्द रिंड बना। हिंदी में करंग बना ड का ग हो गया।

रंड=रंडो लाल।

रंड=वेग इससे हिंदी शब्द रंह बना।

रंड=दांत। इससे रद शब्द बना।

रंड=धूल संस्कृत रज व बुन्देलखंडी रगदा शब्द इससे बने। रगदा से फारसी शब्द गर्द बना।

रंड=लड़ाई इससे संस्कृत शब्द रण बना बुन्देलखंडी में रंड का रंग हो गया रंग वाला=लड़ने वाला।

लंग

कटि प्रदेश को लंग कहते थे इसलिये इससे लुंगी लंगोटी व लहंगा शब्द बने। फारसी लंग बुन्देलखंडी है। संस्कृत शब्द लिंग भी इससे बना।

संड

संड=सांड़ बैल। यह शब्द संस्कृत में चला गया व वहां शंड भी हो गया।

संड=सूर्य। संड से अंग्रेजी शब्द सन बना। ड का लोप हो गया। बुन्देलखंडी में संड का एक रूप सुड्ड हुआ व इससे संस्कृत सूर्य व हिंदी सूरज शब्द बने। संड से सिडौस बना।

संड=आग आग के लिये असली शब्द चांड था पर उसका संड हो गया संड से हिंदी शब्द सिगरी बना ड का ग हो गया आग होने के कारण बिजली भी संड थी।

संड=भेजना। इससे अंग्रेजी शब्द सेंड बना संस्कृत में इसका सम्-दिश् हो गया। हिंदी में संदेशा है।

संड=चोटी। इससे मराठी शब्द शेंडी बना।

सड=संद। हिंदी में संद बना व अंग्रेजी में इसका चिंक हो गया।

संड=सब। इससे हिंदी सगरा मराठी सगडा व गुजराती सघडूं शब्द बने।

संड=शरीर साथ से तीन सन्धि संडसा सींग।

संड=संकेत निशान। इससे हिंदी शब्द सैन बना। इससे अंग्रेजी शब्द साइन बना ड का ग हो गया। सम् + दिश् का अर्थ भी संकेत करना है।

संड=सड्ड=रचना, निर्माण करना। इससे संस्कृत शब्द सृज् व संज् बने।

संड=सुंड=नाक इससे सूँगना शब्द बना ड का ग हो गया।

हंड

हंड=हंडा, धन बहुतबड़ा बहुत से आठ हिंद हाड पीला।

५
कुछ और शब्द

डाडा = दादा

डाडा—इससे अंग्रेजी शब्द डेडी बना व डेडी के बराबरी के शब्द यूरुप के कई भाषाओं में है। स्वीडिश में डाग हो गया। ड का ग हो गया बुन्देलखंडी भाषा का प्रसार समझने के लिये डाडा शब्द बहुत महत्व का है। डाडा नाना बाबा पापा मामा काका लाला बाबा शब्द आर्यों के पहिले के हैं कोई कह नहीं सकता कि ये शब्द संस्कृत से बने हैं। टाटा (मराठी तात्या) से संस्कृत शब्द तात बना।

बरना

बरना=जलना। इससे अंग्रेजी शब्द बर्न बना ।

टरना

टरना=सरक जाना उलट पुलट जाना । इससे अंग्रेजी शब्द टर्न बना ।

कटना

बुन्देलखंडी शब्द कट ज्यों का त्यों अंग्रेजी में है ।

रोर

रोर=शोर। यह शब्द भी ज्यों का त्यों अंग्रेजी में है।

पीटना

पीटना=मारना पीट से अंग्रेजी शब्द बीट बना।

डी डीह

डी व डीह बुन्देलखंडी भाषा के सबसे प्रमुख शब्द है । यह बताना मुश्किल है कि उनमें से कौन पहिले व कौन बाद में बना या इन दोनों शब्दों में कौन कब अधिक जोरदार रहा । शब्द के

अखीर में जब ह् अक्षर आता है तो बोलने में अकसर इसका उच्चारण कभी आधा हो जाता है व कभी पाव ही रह जाता है । कभी कभी वह स्वर ही हो जाता है । इसलिये इन शब्दों का पुराना भेद बारीकी से नहीं समझा जा सकता । जिनका अधिक सन्मान होता था उनको ये नाम दिये जाते थे ।

आज भी हिन्दी में डीह व डीहा शब्द हैं । डीह का मुख्य अर्थ घर था । शुरू २ में अब आदमी ने घर बनाया होगा तब उसके गर्व व आनन्द की सीमा न रही होगी व घर बहुत ही कीमती व सन्मानास्पद वस्तु रही होगी । घर बनाने के बाद गांव बसा व गांव का नाम भी डीह हो गया । हिन्दी में आज भी डीह के घर और गांव दोनों अर्थ हैं ।

पटवारी कागजात में डीह का देह हो गया है । बुन्देलखंड में डीह से बना डेहारी शब्द अभी अच्छी तरह चल रहा है । डेहारी का अर्थ है वह खेती जो अपने ही गांव में की जाती है । डेहारी शब्द गांव का हरएक आदमी जानता है व डीह व डेहारी शब्द बुन्देलखंडी में आठ दस हजार साल पुराने हैं व वे फारसी शब्द देह से नहीं बने हैं । फारसी शब्द बुन्देलखंडी से बना । अवेस्ता और फारसी में बुन्देलखंडी शब्द हजारों साल हुये तभी जा चुके थे ।

डीह का अर्थ देवता हो गया । हिन्दी शब्द देहरा पर विचार करिये देहरा का अर्थ है देव घर या जैन मन्दिर यह शब्द डीह से बना है न कि देव से । हिंदी में डीह का अर्थ ग्राम–देवता अभी भी है । देवता–अर्थ में डीह शब्द ने प्रचंड शक्ति सम्पादन की व संस्कृत शब्द देव यहूदी शब्द जहोवा (यहोवा) लो. लेटिन शब्द डीटस लेटिन शब्द डिव अंग्रेजी शब्द डीटी व ग्रीक शब्द ड्यूस और ज्यूस डीह शब्द से ही बने हैं । डीह का स्त्री लिंग डीई था उसका देवी हो गया है । दई भी है ।

डी शब्द सन्मान सूचक था व आदमियों व देवतों के नामों में लगाया जाता था बाद में डी का जी हो गया। बाहर से आए हुये आर्यों को डी व जी शब्द कई साल तक पसन्द नहीं आए व पुराने हिन्दू जो आर्य बन गये थे इनका प्रयोग छोड़ना नहीं चाहते थे। इस सम्बन्ध में इन दोनों पक्षों में वाद-विवाद होते रहे और अन्त में समझौता हो गया। संस्कृत में डी या जी का श्री बना दिया गया। श्री शब्द अभी चालू है। वह वेदों में नहीं है। जी का जू भी हो गया है।

डीह से गांवों के नाम तारादेही भैंसदेही गिरिडीह इत्यादि बने। इसीसे डेंहरी शब्द बना। डेहरी का टेहरी हो गया व देहली भी हो गया।

डीह = देह दाहिना देहरी ड्यौढ़ी। ये सब शब्द डीह से बने हैं।

डांड डांग डेंड डेंग डोंड डोंग

संस्कृत शब्द दंडक (वन) बहुत महत्व का है। इससे यह सिद्ध होता है कि जंगल के लिये पहिला बुन्देलखंडी शब्द डांड था। बाद में इसका डांग हो गया व अखीर में इसीका जंगल हो गया। डांड का भाई डेंड शब्द था। डेंड का अर्थ बगीचा था। इसका डेंग हो गया दूसरा ड या ग लोप होकर व सेमिटिक उपसर्ग ई लगकर इससे यहूदी शब्द ईडेन (Eden) बना। ईडेन = बगीचा। इसके साथ जो गार्डन शब्द लगा दिया जाता है वह फजूल है। डेंग से अंग्रेजी शब्द डेन = तलहटी बना। उद्+डेंग से संस्कृत शब्द उद्यान बना। इन दोनों में भी ग का लोप हो गया।

डेंग = डेगची। फारसी डेग इसीसे बना।
डेंड = गेंद पहिले ड का ग हो गया।
डोंड = डोंग = पहाड़ टोंटी डोंगा डोंडा दोना तूफान।
डोंग = पहाड़ से डोंगर शब्द बना।

डां डूं डीं

डां=डां डां=डूं=डूं डूं=सबेरा। डां शब्द वहीहै जो अंग्रेजी में डान है। सबेरेजोनगाड़ा बजाया जाता था उसे संस्कृत में दुंदुभि कहते थे। यह शब्द डूं डूं से बना है। डूं डूं से अरबी शब्द घूहूसबेरा बना।

डीं=दिन। संस्कृत शब्द दिन इससे बना। इसीसे अंग्रेजी का डे शब्द बना मराठी में उद्यां शब्द है इसका अर्थ है आने वाला कल। यह ऊ+डीं से बना है। ऊ=वह। बुन्देलखंडी में उदना का अर्थ उस दिन है।

ढां ढूं ढीं

ढां= ढां ढां = ढूं = ढूंढू= अंधेरा शाम। इससे संस्कृत शब्द ध्वांत बना। ढूं ढूं से हिन्दी का धुन्ध शब्द बना व अपभ्रंश का ढुं ढु ल्ल = भ्रम शब्द बना। अंधेरे में ढूंढना पड़ता है इसलिये ढूंढू से काठियावाड़ी में ढूंढवूं मराठी में ढूंढाड़णों व हिन्दी में ढूंढना शब्द बने।

ढीं= रात्रि किनारा।

गरीब गनी

गरीब व गनी शब्द अरबी हैं। वे बुन्देलखंडी से अरबी में गये।। इनको समझने के लिये बुन्देलखंडी शब्द डरना पर ध्यान दीजिये। डरना का एक अर्थ भय खाना है। पर इस अर्थ के डरना से मतलब नहीं है। डरना का दूसरा अर्थ है गिरकर पड़े रहना। इस अर्थ के डरना से मतलब है। सड़क पे रुपइया डरो मिलो याने किसी का रुपया सड़क पर गिर गया व वह वहां पड़ा मिला। इस डर से हिंदी का डालना शब्द बना है। इसी डर से संस्कृत शब्द दरिद्र (डरडर) बना है। दरिद्र=गरीब गरीब याने गिरी हुई स्थिति वाला। डरना से ही गिरना शब्द बनाहै ड का ग हो गया है अरबी में ब प्रत्यय लगाकर गिर का गरीब बना दिया है।

अब हिन्दी का दाना शब्द लीजिये । दाना का अर्थ अनाज का कण है । यह दाना शब्द न संस्कृत से बना है और न फारसी से । यह बुन्देलखंडी शब्द डन से बना है । डीह व डी के बाद डन शब्द बहुत महत्व का है इसी डन से संस्कृत के शब्द अन्न व धन बने । जब सोना चांदी का पता भी न था तब अन्न ढोर कपड़ा मकान सबही धन थे । वे अभी भी हैं । पैजना शब्द पै – डन था पैडन = पैर का धन । ड का ज हो गया है । संस्कृत शब्द धन बनने के पूर्व ही पैजना बन चुका था । अब बुन्देलखंडी शब्द परदनियां = धोती लीजिये । इसका मूल रूप पार–डन है याने पहनने का धन । पारना याने पहनना, पहनाना । पारना से हिंदी शब्द पहनना बना व मराठी शब्द पांघरणें बना । परदनियां शब्द का प्रयोग बुन्देलखंड के दूर २ के जंगली पहाड़ी दुर्गम स्थानों में भी होता है व इस शब्द के सम्बन्ध में वह एक बड़ा भारी प्रश्न उठता है जो सैकड़ों अन्य शब्दों के बारे में उठता है कि बुन्देलखंडी शब्द पहिले बना या संस्कृत शब्द पहिले बना ? परदनियां पहिले बना या परिधान पहिले बना ? शहरों वाले तो परिधान शब्द का प्रयोग करते ही नहीं । बहुत से पढ़े लिखे लोग इस शब्द का अर्थ ही न बता सकेंगे । तो क्या संस्कृत का इतना जबरदस्त प्रचार हुआ कि परिधान शब्द हिन्द के एक एक भीतरी कोने तक पहुंच गया व बाद में उसका प्रयोग बुन्देलखंड के गांव खेड़ों को छोड़कर सब जगह से उठ गया ? प्रश्न का उत्तर जिसे जो देना हो खुशी से देवे पर वह एक ही है । पार–डन = पहिनने का धन बिलकुल स्वाभाविक शब्द रचना है व वही पहिले बना । बाद में पार क्रिया का परि उपसर्ग बन गया । डन से अरबी शब्द गनी बना ड का ग हो गया है । दीनार शब्द में डन अभी भी है ।

गोस्वामी तुलसीदास ने रामायण में जो गनी व गरीब शब्दों का प्रयोग किया वह बुन्देलखंडी शब्दों का ही प्रयोग है । यह जरूर है कि किसी तिलकधारी पंचा पिछौरा बंडी वाले पंडितजी का लड़का विलायत में पढ़कर आवे व हेट कोट पेंट बूट पहने उनको

गुड मोर्निंग डेडी कहे तो जैसा अटपटा लगता है वैसा ही गनी गरीब को बुन्देलखंडी कहना अटपटा लगता है। पर एक पंडितजी का ही लड़का है व दूसरे बुन्देलखंडी के ही बच्चे हैं।

नीरो नियराई

नीरो बुन्देलखंडी शब्द है उसका अर्थ है पास। तुलसीदास जी ने जो नियराई शब्द का प्रयोग किया है वह शब्द नीरो से बना है। अंग्रेजी के नियर से नहीं बना। नियर नीरो से बना है। नीरो का नेरे व नीरे भी होता है।

संट सट्टी शादी

संट एक बुन्देलखंडी शब्द था। उसका अर्थ था खुशी व सफलता। आजकल बुन्देलखंडी में उसका सट्टी हो गया है। सफलता प्राप्त करने के बाद जब कोई खुश दिखता है तो उससे कहा जाता है "दिखता है सट्टी घल गई" संट का ट् लोप होकर मराठी में सण शब्द हो गया है सण का अर्थ है त्यौहार या खुशी का दिन। संट से फारसी शाद बना व संस्कृत शात बना "शर्म शात सुखानि च" अमर। फारसी शाद बाद में हिंद में आ गया व उसका शादी हो गया। पर हमारे नई हिंदी के अति-पोषक शादी न करने देंगे विवाह ही करायंगे। सफलता प्राप्त करने के अर्थ में सटना सटाना शब्द अभी भी बुन्देलखंडी में चल रहे हैं।

संट से संस्कृत में दूसरा शब्द सत् बना। सत्कार के अर्थ पर्व व उत्सव भी हैं। संट का अर्थ शनि भी था। उससे सनि शब्द बना। संट शब्द यूरोप की भाषाओं में गया व वहां दोनों अर्थ इकट्ठे हो गये। उससे बना हुआ शब्द सेटरनेलिआ है व उसका अर्थ है शनि के सत्कार में निछेक आनन्दोत्सव।

संट से कई भाषाओं के कई शब्द बने। अंग्रेजी शब्द सेटिएट भी उससे बना है। सन्त व शांत शब्द भी उसीसे बने हैं। बुन्देलखंड में एक शब्द नसट्टी है। इसको बहुत लोग निसड्डी बोलने लगे हैं।

इस शब्द का चुमाचुम अर्थ फारसी में कमबख्त है । शादी का निगेटिव निसङ्डी बुन्देलखंडी में पहिले से ही था ।

दोरी

बुन्देलखंडी में दरवाजे को दोरी कहते हैं यह शब्द शुरू में डोर था जो अंग्रेजी में ज्यों का त्यों है । इससे संस्कृत शब्द द्वार बना ।

धौरा धौल

धौरा = सफेद । इससे संस्कृत शब्द धवल बना । यह शब्द अकसर बैल गाय के रंग के वर्णन में आता है । धौरा का धौल हो गया व धौल का अर्थ गप्प भी है । गप्पार्थी धौल का जो भावार्थ है वही अंग्रेजी के व्हाइट लाइ में है । यह सफेदी बुन्देलखंडी है ।

धौल का अर्थ तमाचा भी है । धौंस शब्द अलग है । उसका अर्थ धोखा है ।

बिलात

बिलात = बहुत । बुन्देलखंड के एक ऐसे गांव को जाइये जो आम सड़क से बहुत दूर हो व पहाड़ या जंगल में हो व जहां न स्कूल हो और न कोई पढ़ाने वाला हो । वहां भी बिलात शब्द का प्रयोग होता मिलेगा । यह कहना सरल है कि यह शब्द संस्कृत शब्द विपुल से बना पर संस्कृत शब्द बहु व अनेक होते हुये व इनका प्रचार सब जगह होते हुये भी बिलात शब्द का इतना प्रसार बुन्देलखंड में क्यों हुआ ? सही बात यह है कि बिलात शब्द बुन्देलखंडी है व उससे संस्कृत शब्द विपुल बना । उसीसे ग्रीक शब्द पौल्टोस बना । व का प हो गया । जैसे संस्कृत में बाहर से आये हुये शब्दो में र जोड़ दिया जाता था वैसे ही ग्रीक भाषा में बाहर से आये हुये शब्दों में अस इस उस ओस कुछ भी जोड़ दिया जाता था ।

किलकिल

बुन्देलखंड में एक शब्द खिदरखर है जिसे उच्चारण में खिद्-गौर कहने लगे हैं। इसका अर्थ है खदेड़ी हुई भीड़। खर का अर्थ समूह है। गोंखर = गौओं का समूह। खिदरखर से मराठी शब्द किरकोड़ बना व उसका संस्कृत में किलकिल हो गया। १८००-२००० साल पहिले उत्तर हिंद से जो ग्रीक शाक आर्थिअन व आभीर लोग मालवा तरफ खदेड़े गये उनको किलकिल कहते थे। खर से अंग्रेजी शब्द हर्ड बना व खर = समूह शब्द संस्कृत में ज्यों का त्यों चला गया।

६

गिनती

आर्यों के हिंद में आने के पहिले पुराने हिन्दुओं में सिर्फ आठ तक गिनती थी।

अंड = १

अंड का अर्थ विश्व है। विश्व एक है इसलिये इस शब्द को १ का अर्थी बनाया। अंड से अंग्रेजी शब्द वन बना। ड का लोप हो गया। अंग्रेजी यूनि उपसर्ग भी इसीसे बना। अंड से कन्नड शब्द आँन्दु बना।

बंड = २

हिंदी भाषा में बंड = २ का ठीक पता नहीं चलता। बंद दो होते हैं पर हो सकता है कि यह शब्द बंड = बांधना क्रिया से बना हो। गुजराती में बंड = २ का अनुस्वार लोप हो गया था दूसरे प्रकार का हो गया। उसमें ड का ज हो गया व ड का लोप भी हो गया। इस तरह उस भाषा में बीजूं व बन्ने शब्द बने जिनके अर्थ दूसरा व दोनों हैं। मराठी में यमद्वितीया को बीज कहते हैं। यह बीज बंड से बना है। एकी-बेकी खेल में बेकी का ब बंड का ही ब है।

बंड का लेटिन व अंग्रेजी में बी. आइ बाइ. हो गया व वह बाइसिकिल शब्द में है।

हिन्दी के बारा बाईस बत्तीस आदि के ब को देखिये । इनमें ब अक्षर कहां से आ गया ? हिंन्दी के संख्या वाचक शब्द संस्कृत के संख्या वाचक शब्दों से बने हैं । दो का संकृस्त द्वि है व तीन का त्रि है । हिन्दी में त्रि से बने तेरा तेईस व तेतीस शब्द हैं । तो द्वि से देरा देईस व देतीस शब्द बनना थे । पर ऐसा न होकर बारा बाईस व बत्तीस शब्द बने । इन शब्दों का ब बंड का ही बलवान ब है । पर संस्कृत का विंशति शब्द न बुन्देलखंडी से बना है और न कोई दूसरी भाषा से बना है । वह आर्यन है सिर्फ द का लोप कर दिया गया है । आगे त्रिंशति व चत्वारिंशत शब्द भी तो हैं ।

मराठी व गुजराती में बे का, सिंधी में ब का ब हिन्दी में बि का अर्थ २ होता है । अपभ्रंश में दे का वे हो गया ।

संड = ३

अत्यन्त सौभाग्य की बात है कि हिंदी में संजला शब्द बना जाता है । संजला का अर्थ तीसरा है व वह संड शब्द से बना है । ड का ज हो गया है ।

गंड = ४

बुन्देलखंडी में गंडा यह संख्यावाचक शब्द अभी भी ज्यों का त्यों बना जाता है । उसका अर्थ ४ है । इस शब्द से अन्दाज लग जाता है कि बुन्देलखंडी संख्यावाचक शब्द किस नमूने के थे ।

पंड = ५

संस्कृत में ५ के लिये पंच शब्द है । इसलिये यह सिद्ध करना मुश्किल है कि संस्कृत के पहिले पंड शब्द का अर्थ पांच था । अगर कोई सबूती दी जाती है तो यह कह दिया जायगा कि पंड शब्द पंच से बना है । आर्य गिनती के ये शब्द देखिये ।

एक द्वि त्रि चतुर पंच षट् सप्त अष्ट नव दश । इन शब्दों में सिर्फ पंच में ही अनुस्वार है । यह इसलिये है कि पंच शब्द बुन्देलखंडी पंड = ५ से बना है ।

बुन्देलखंड के पन्ना जिले में एक जगह पंच पांडव कहलाती है। इस तरह के नाम भारत में अन्य जगह भी हैं। जहां पांच नदियों का मिलन समझा जाता है उस स्थान को यह नाम दिया जाता है। इस पद में पांडव नाम आर्यों के पहिले का है। पांडव का अर्थ भूल गये इसलिये उसमें पंच जोड़ दिया है। पंचघरा को पड़घा कहते हैं। पड़घा का पड़ अनुस्वार विहीन पंड ही है।

भंड=६

भंड=भौंरा। भौंरा के ६ पैर रहते हैं इसलिये भंड शब्द को ६ का संख्यावाचक बना दिया था।

खंड=७

खंड का अर्थ सात था पर इसकी कोई पक्की सबूती नहीं है। बुन्देलखंडी बोलचाल में कई मजले ऊंचे मकान को सतखंडा कहते हैं चाहे खंड कितने ही हों। ऐसे ही मराठी के एक गीत में "साता खंडी चें हें अन्न" यह पद आया है। इससे यह सिद्ध नहीं होता कि खंड का अर्थ सात था बल्कि उसका विपरीत सिद्ध होता है। पर यथार्थ बात यह है कि खंड का अर्थ सात था व वह अर्थ भूला जाने लगा इसलिये खंड के पहिले सात लगाया जाने लगा। जैसे पंड का पंच पांडव हो गया वैसे ही खंड का सतखंडा हो गया। खंड सातार्थी था इसलिये संस्कृत में उसका अर्थ समूह हो गया।

हंड=८

मराठी में हुंडा शब्द है उसका अर्थ दहेज है। भावार्थ बहुत सा धन है। यह शब्द हंड से बना है व इसी शब्द से जर्मन हुंड्रेड व व अंग्रेजी हंड्रेड शब्द बने। हुंडी शब्द सब ही जानते हैं। वह रुपया पैसे के लेन देन से सम्बन्ध रखता है। वह भी हंड से बना है हिन्द में ही हंड का हुंड भी हो गया था व हंड व हुंड शब्द यूरुप को चले गये।

आठ तक गिनती थी इसलिये हंड=८ शब्द का अर्थ बहुत बड़ा या बहुत से हो गया। जैसे बहुतसे के अर्थ में आजकल सैकड़ों व हजारों शब्दों का प्रयोग होता है वैसे ही उस समय हंड शब्द के बहु वचन हांडीं या हुंडी का प्रयोग होता था। हंड व हुंड शब्द जो यूरुप को गये वे बहुतसे के ही अर्थ में गये थे। जब दस का आविर्भाव होकर सौ तक गिनती होने लगी तब हुंड्रेट व हंड्रेड बना दिये गये व उनका अर्थ सौ कर दिया गया। पुराना अर्थ सूचित करने के लिये अंग्रेजी में हंड्रेड एंड वन व दूसरी भाषाओं में तत्सम के प्रयोग होने लगे। हंड्रेड शब्द बुन्देलखंडी है। सेन्चुअरी शब्द आर्यन है। अंग्रेजी में हंड्रेड का एक अर्थ प्रदेश का भाग है। इस अर्थ में हंड्रेड शब्द का प्रयोग अंग्रेजी के भाषा विज्ञानिओं को कुछ न कुछ हैरान करता रहा है। बात यह है कि एंग्लोसेक्सन लोग जर्मनी से ब्रिटेन को बुन्देलखंडी लेकर गये थे और यद्यपि तब हंड का हंड्रेड हो चुका था पर हंड्रेड का अर्थ सौ के सिवाय बहुतसे बना रहा था। इसलिये हंड्रेड का जो यह प्रयोग हुआ था वह बहुतसे ही के अर्थ में था। दक्षिणी रूस से, ईरान से या यहीं कहीं से प्रागैतिहासिक काल में एंग्लोसेक्सन लोग बुन्देलखंडी व आर्यन का मिश्रन लेकर जर्मनी पहुंचे थे। चेत रखिये कि यूरुप के भाषाओं के कई संख्यावाचक शब्द आर्यन शब्दों से बने हैं। सौ के लिये संस्कृत शब्द शत है व फारसी शब्द सद है। अगर धांधली न मचाई जाय तो यह स्पष्ट है कि हंड्रेड शब्द न शत से बना है और न सद से। शत से बने शब्द अलग हैं।

दश के आविष्कार के उपलक्ष्य में दशानन पैदा हुआ था। इसके पहिले हंड=आठ के उपलक्ष्य में अष्टकपाली पिशाचन पैदा हुई थी। हुंडन नाम का एक पाताल लोक का देवता रहा आया। उसके सिर कितने थे इसका पता नहीं है। आठ होना चाहिये।

नटराज के आठ हाथ थे। काली के आठ हाथ थे। आठ हाथ होने के कारण कालीजी का नाम हिंडी पड़ा।

सबसे बड़े वर्तन को हंडा कहते हैं उसमें आठ धारीं व आठ पटके रखने का रिवाज था। अनार्य जोगनी ८×८ = ६४ थीं। हांडा आड नाम हंड से ही बना है।

हिंद का नाम शुरू से ही हंड या हिंड था। यह नाम न ईरानियों ने दिया था न ग्रीक लोगों ने दिया था और न मुसलमानों ने दिया था। यह इसका नाम थाही जब प्रदेशोंके नाम अंड बंड शंड थे तो पूरे देश का नाम हंड = बहुत बड़ा होना ही चाहिये था। हिंदू शब्द सिंधु से नहीं बना। वह हंड से बना है। हिन्दी शब्द फारसी नहीं है। वह बुन्देलखंडी है।

आर्यों के आने के पहिले हंड संख्या याने ८ की संख्या अति सन्मान की सूचक बन गई थी। राजाओं ऋृषियों व गुरुओं के नामों के पहिले ८ का अङ्क लगाया जाने लगा। आर्य आये व वे १०० तक गिनने लगे और इसीको उन्होंने प्रतिष्ठा का अङ्क बनाया। राजादि के नामों के पहिले वे १०० लगाने लगे। पुराने हिंन्दू आर्य बन गये थे पर भावनावश वे ८ की संख्या को ही प्रतिष्ठित मानते रहे व उसका प्रयोग करते रहे। दोनों पक्षों में मतभेद रहा आया वाद-विवाद व झगड़े होते रहे अन्त में समझौता हो गया। हमारे १०० व तुम्हारे ८ मिला दिये गये व तब से १०८ का प्रयोग होने लगा।

जिस जाति ने बुन्देलखंडी भाषा बनाई वह अभी स्वस्थ मौजूद है। वह आष्टिक थी। वह न आस्ट्रिक थी और न आष्ट्रिक भाषी थी।

卐

७

चांडाली

संस्कृत भाषा की उन्नति व प्रसार होने पर बुन्देलखंडी के बुरे दिन आए। यद्यपि बुन्देलखंडी अधिक न दबाई जा सकी पर उसकी बेइज्जती होने लगी। गंड शब्द से जिसका अर्थ ईश्वर था खराब अर्थ के शब्द बनाये जाने लगे । चंडी के पूजक चांडाल थे पर चांडाल शब्द का अर्थ बहुत खराब कर दिया गया । अंड बंड ये इस भाषा के दो प्रतिष्ठित शब्द थे पर अब दोनों का एक शब्द बन गया है व उसका अर्थ फालतू बातें या बकवास हो गया है । लोग मां को बेटी समझने लगे व बेटी को मां समझने लगे। इस भाषा के अनेक शब्द संस्कृत फारसी ग्रीक यहूदी मुंडा व तामिल के शब्द समझे जाने लगे। दस हजार साल से अधिक पुरानी भाषा आज सिर्फ बारा सौ साल पुरानी समझी जाती है। यह होते हुये भी वह उस स्थिति में रही जिस स्थिति में पत्थर के नीचे दबी बलवती दूब रहती है। पत्थर के नीचे दबी कुछ पीली सी होकर वह पनपती ही रही व उसके आजू बाजू से बाहर निकलकर हरी भरी लह-लहाती रही। इस भाषा के हट्टे कट्टे शब्दों कट्टा खट्टा गट्टा चट्टा टट्टा पट्टा फट्टा बट्टा भट्टा ठट्टा मट्टा सट्टा हट्टा को कोई भी कहीं बट्टा न लगा सका!

बुन्देलखंडी यू. पी में नहीं बनी। यू. पी. के लोग इस बात का कभी दावा न करेंगे कि वह यू. पी. से बनी थी। वे इसको धुर्र भाषा कहते हैं। उनका इससे अपनापन नहीं है। इस भाषा के कई शब्द ऐसे हैं जो हिन्दी में हजारों साल से प्रचलित हैं पर वे हिंदी के केन्द्र इलाहाबाद में बने अच्छे अच्छे शब्द कोषों में नहीं दिये जाते । और जब वहां के विद्वान भाषा-विज्ञान पर लिखते हैं तो उनके

तत्सम्बन्धित भूगोल में बुन्देलखंड शायद ही कभी रहता है। वे तो अवधी व भोजपुरी के कायल हैं।

बिहार वाले तो चार भाषाओं का दावा करते हैं। मैथिली भोजपुरी मागधी व मुंडा। उनको बुन्देलखंडी से क्या मतलब। बिहार के पूर्व में मुंडा आगे आगे की जा रही है।

ड्रेवेड़ियन प्रदेशों के बाबत अधिक कहने की जरूरत नहीं है। उटकमंड डिंडीगल व कालीकट के भी रहने वाले द्राविड लोग कभी नहीं कहेंगे कि बुन्देलखंडी उनके भूमि पर पैदा हुई या उसने उस पर कभी अपना कदम रखा। वे तो साधार यह पूछेंगे कि बुन्देलखंडी नाम की कोई भाषा कभी रही भी है क्या ?

माड़वाड़ छोड़ राजपूताना सिंध पंजाब व गुजरात के लोगों को बुन्देलखंडी ड पसंद नहीं आया व कई शब्दों में उसका ज कर दिया इसलिये यह नहीं हो सकता कि बुन्देलखंडी का जन्म इन प्रांतों में हुआ हो।

मराठी में ड का बाहुल्य है पर वहां च ज झ अक्षरों में कुछ स मिला दिया जाता है याने वे ऊष्म बना दिये जाते हैं ये उच्चारण हिंदी में नहीं हैं। इसलिये बुन्देलखंडी महाराष्ट्र प्रदेश में पैदा नहीं हुई हिंदी में जो ज़ है वह अरबी है।

अगर कोई प्रदेश बुन्देलखंडी पैदा करने का दावा कर सकता है तो वह है माड़वाड़। माड़वाड़ी में ड डा बिपुल है ही पर उसमें व उसके असफेर के बोली में ण अक्षर का प्रयोग बहुत है व उसका उच्चारण स्पष्ट किया जाता है। हिंदी में ण अक्षर केवल संस्कृत के भरोसे रह गया है। हो सकता है कि माड़वाड़ की कड़ाके की रेतीली गर्मी में कोई आदमी अ-डा-डा-डा करने लगा हो व एक भाषा बन गई हो जैसे कि हजारों साल बाद आर्कटिक महासमुद्र के पास की अत्यन्त बर्फीली ठंड में किसी आर्य को अ-रि-रि-रि कर आया

५०५-१७ १९१९८०

व आर्यन भाषा बनना शुरू हो गया। पर नहीं। बुन्देलखंडी भाषा बुन्देलखंड में ही बनी। यहां पर पथरीले मैदानों की व चट्टानों की कमी नहीं है। और न गर्मी की कमी है। मध्य बुन्देलखंड की आयु माड़वाड़ के आयु से कई गुनी अधिक है। वह अब करोड़ों साल की समझी जाने लगी है। अ-डा-डा-डा पहिले पहल इसी प्रदेश में बोला गया। बुन्देलखंडी का बिलकुल कम बिगड़ा हुआ सच्चा स्वरूप यहीं पर मिलता है। जहां की भाषा होती है वह वहीं अधिक दिन ठहरती है।

बुन्देलखंडी भाषा पन्द्रह हजार साल पुरानी हो सकती है व बुन्देलखंड में आदमियों की बस्ती इससे भी पुरानी है। पर विज्ञानी विद्वान जब तक पुराने आदमी के हाड़ न देख लें तब तक उसका अस्तित्व नहीं मानते। बुन्देलखंड का दुर्भाग्य है कि उन्होंने यहां के पुराने हाड़ खोदकर अभी तक नहीं देखे। अभी तो यहां के पत्थर ही अजमाए जा रहे हैं।

कुछ इतिहास विशेषज्ञों का भी यह मत है कि पुराने जमाने में हिन्द के मध्य में एक भाषा बनी थी। यह मध्य बुन्देलखंड ही है।

सैकड़ों साल पहिले संस्कृत के वैयाकरणों ने संस्कृत व पाली छोड़कर हिंद के बाकी भाषाओं के दो भेद किये थे। भाषा और बिभाषा। बुन्देलखंडी को भाषा कौन कह सकता था? इसलिये वह विभाषा हुई। विभाषा के सात भेद बतलाये है :—

शकारा भीर चांडाल शवर द्राविडोड्रजाः
हीना वने चराणां च विभाषा सप्त कीर्त्तिताः

अब इसमें बुन्देलखंडी कौनसी है? वह चांडाली ही हो सकती है। बुन्देलखंड में चंडी की पूजा हमेशा होती रही व अभी भी होती है। कादम्बरी में जिस चंडी का वर्णन है वह बुन्देलखंड ही में थी। चंडी के पूजक चांडाल व इनकी भाषा चांडाली। आर्य लोग जब

हिंद में आए तब यहां राक्षस व चांडाल रहते थे। उनकी भाषा राक्षसी या चांडाली होना ही चाहिये। वैया करणों ने राक्सी नाम किसी भाषा को नहीं दिया। इसलिये चांडाली ही बची। चांडाली भाषा कौनसी ? बुन्देलखंडी। पुरानी रद्दी चीजें कबाड़ खाने में मिलती हैं व इन्हीं चीजों में बहुमूल्य चीज मिल जाती है। सबसे पुरानी व रद्दी भाषा कौनसी ? बुन्देलखंडी। मो० लि० के बांचने वाले अगर कुछ ठीक बिचार करते तो शीघ्र ही पता चल जाता कि मो. लि. की भाषा बुन्देलखंडी ही होना चाहिये। डाक्टर हेरस साहिब ठीक रास्ते से जा रहे थे पर वे बीच के ही विश्राम गृह में ठहर गये। उन्हें कुछ और आगे जाना चाहिये था।

चंड से प्रचंड शब्द बना व चांडाली नाम से यही ज्ञात होता है कि वह एक जबरदस्त भाषा होना चाहिये। आज भी बड़ी २ राजधानियों के नाम इसी भाषा के हैं। लंडन देहली व पेकिंग न्यूयार्क का न्यू इस भाषा के नां शब्द से बना है। और भारत के जो नए तीर्थ स्थान बने हैं उनके नाम रेंड-बंड नंगल-बंड ढुंकवा-बंड रंगवा-बंड टांडा-बंड हीरा कुड्ड सिंड्री मड्डुवाडीह चंडीगढ़ व कैंडल पट्ट चांडाली ही हैं।

८

नमूना

बुन्देलखंडी आदि भाषा है इसलिये वह न पश्चिम की भाषा से बनी और न पूर्व की भाषा से बनी। वह खुद बनी व इसलिये उसके शब्द एक नमूने के अनुसार बनते थे। पहिले एक ही जाति थी। हिन्दू। बहुत आदमी हुए तो भेदभाव पैदा होता ही है व कुछ भिन्नता बनाने के लिये जातियों के नाम बनाये गये। वे नाम ये हैं। ये सब नाम प्रतिष्ठित थे।

ओंड कोंड खोंड गोंड चोंड जोंड टोंड ठोंड डोंड ढोंड पोंड फोंड बोंड भोंड मोंड रोंड लोंड सोंड होंड।

जब ये नाम बने थे तब ब्राह्मणादि चार वर्ण नहीं थे। सब लोग हिंदू ही कहलाते थे। इसलिये इन नामों में से जो नाम जिसको पसन्द पड़ता था ग्रहण कर लेता था। ऊंच नीच अधिक नहीं थी। बाद में जब ऊंच नीच का भेदभाव बढ़ गया तब जो लोग अपने को ऊंचे समझने लगे वे अपने जाति का नाम कुछ बदलने लगे। नाम बनने के हजारों साल बाद कोई ओंड के ओड्र व ओझा हो गये। कोई गौर व गौड हो गये। कोई खोजा हो गये। कोई द्राविड हो गये। कोई चौधरी हो गये। कोई मोडी हो गये। कोई लोधी हो गये। व कोई डोगरा हो गये।

जो लोग नीचे रहे व जंगली बना दिये गये। उनके नाम नहीं बदले या नाम मात्र को बदले जैसे गोंड सोंधु। सोंधु का सोंर हो गया व टोंड का टोंडा हो गया।

इसी तरह कोंडा, कोंढ, कोरी, कोल, कोजी, कोड्डू, कोडालो, गोडामली, गोडरी, गोड्डा, जोगी, थोटी, डोहोर; डोम, घोर, घोडिया, धोबी, पोड, बोरो, भोटिया, भोगटा, रोहित हो आदि नाम जातियों के हो गए। इन जातियों में द्राविड भी है।

लोग बुन्देलखन्डी से भागने की कोशिश करते रहे पर वह इतनी प्रबल रही आई कि जातियों के नाम उप जातियों में या आड नामों में या आदमियों के नामों में कहीं न कहीं बनी रही। कोई कोई गुजराती अपने को पोरिया कहते हैं। लोंढे, डोंगरे व सोंदी आड नाम हैं। अभी अभी तक बड़े २ घरानों में गोंडा कुंवर नाम रखा जाता था। गोदावरी शब्द गोंड से ही बना है। सिर्फ अनुस्वार लोप हो गया है। गोंडा (दा) कुंवर में अनुस्वार बना जाता है। यह सिद्ध करता है कि गोंड शब्द हमेशा प्रतिष्ठित रहा आया। संस्कृत में गोदा स्वतन्त्र शब्द नहीं है व उसकी व्युत्पत्ति गो शब्द से बतलायी गई है। पर गोदा शब्द बुन्देलखंडी है व गोदावरी नदी का आर्यन नाम गौतमी था। धोंडोजी, कोंडाजी, डोडोंजी व डोगाजी, ये महाराष्ट्रियनों में प्रतिष्ठित नाम हैं। होंडाराम, होंडामल्ल, सोंडागुर, सोंधा तोडरमल्ल, टोंडरराम नाम उत्तर व मध्य हिंद में चलते रहे। कोंड, कोंडी, कोंडू, बोंडा, फोंड, चायर नाम द्राविड हैं। बुन्देलखंड में कोदूँलाल, कोदूँराम नाम जहां तहां हैं। द्राविड कोंडू व बुन्देलखंडी कोदूँ एक ही शब्द है। कोंड शब्द भद्दा लगता है पर वह बुन्देलखंडी आसमान का पहिले डिग्री का सितारा रहा आया।

सिंधी आड नाम अडवानी, गिडवानी, सिडवानी वगैरह अंड, गंड संड वगैरह से ही बने हैं। ये नाम गांवों के नामों पर से नहीं बने हैं। इनमें वानी प्रत्यय लगा है। वानी के बराबरी का दूसरा प्रत्यय वाल है जो अग्रवाल, खंडवाल वगैरह में है। वानी प्रत्यय बुन्देलखंडी है। दमोह जिले में हिंगवानी नाम का गांव है। इस का वानी प्रत्यय वही है जो सिंधी नामों में है। सिंधी आडनामों में हिंगवानी नहीं है पर हिंगोरानी है। यह रानी वानी से भिन्न है।

रेंड, गंडक व हिंडन शब्द नदियों के बुन्देलखंडी नामों का प्रतिनिधित्व करते जाते हैं। केन व बेन नाम केंड व बेंड के बचे हुए रूप हैं। गोदावरी व तुंगभद्रा बुन्देलखंडी नाम हैं। सिंडु का सिंधु हो गया है। गंगा का आ आर्यन है। बुन्देलखंडी में स्त्रीलिंग आ से बहुत कम बनता था। इसका पुराना नाम गंगू होना चाहिये क्योंकि यह नाम अनेक स्त्रियों को दिया जाता है व कुछ आदमियों को भी। यमुना का नाम लिंड था व इसलिये बादमें वह कलिंद कन्या हो गई।

बगीचे को डेंड या डेंग कहते थे व उसके सम्बन्ध में शब्दों का प्रतिनिधि गेंदा शब्द है। पेड़, पेरू, सेंग, सेम, बेल, बेला, केर, बेर, (क)नेर, केंठ (केंथा), टेंड (तेंदू), बेंग (बेंगन). रेंड, सेवती, केतकी, केवड़ा, तेव रइया), गेंठी, (ग) ढेलू क (रेला), भेंडा, (च) मेज्जी, (फ) रेंद, डेंडसी, ढेंडा आदि अन्य शब्द हैं।

कहते हैं कि आर्यों ने ग्रीक लोगों से ज्योतिष सीखा था। अवश्य सीखा होगा। दो भले आदमी मिलते है तो एक मेक से सद्‌गुण व सद्‌विद्या ग्रहण कर लेते हैं। पर ग्रीक व लेटिन लोगों को जो ज्योतिष उस समय आता था वह उन्होंने अनार्य हिंदुओं से सीखा था। कुछ अभी देख लीजिये।

बुन्देलखंडी अड = मेढा। इससे लेटिन शब्द एरीस बना। अड से संस्कृत शब्द अज बना। पर नक्षत्र समूह का मुख्य नाम मेष ही है। बुन्देलखंड में मामूली तौर के बैल को टलवा (टाला) कहते हैं। इससे ग्रीक शब्द टारस बना। जम = जुड़वां बच्चे। संस्कृत में जम का यम हो गया व यम का अर्थ भी जुड़वा बच्चे हैं। जम से जेमिनी शब्द बना। केंकड़ा शब्द से कर्क करकिनों केंकर केंश्रर शब्द बने। सड्डा शब्द से सेजिट्टेरियम शब्द बना। सड्डा = तीर। बुन्देलखंडी में सड्डा का सर्रा हो गया व उस नाम के कई गांव हैं। संस्कृत में सड्डा का शर हो गया। योरुप में सड्डा का सेजिट हो गया। यहां पर यह देखनीय है कि संस्कृत में इस राशि के लिये धनुष शब्द है

जबकि यूरुप में तीरार्थी शब्द है। तीर (श्रवण) के व धनुष के नक्षत्र भी अलग २ हैं। सड्डा शब्द से पतंग के ठड्डा शब्द का मिलान किये जाने लायक है। सर्र से चला जाना याने तीर सरीखा चला जाना।

रंगों के बुन्देलखंडी नाम भी एक नमूने के थे। पंड का अर्थ सफेद था इससे संस्कृत शब्द पांडु बना व मराठी शब्द पांढरा बना। पुंडरीक का अर्थ सफेद कमल है व सफेद कोढ है। इंड का अर्थ नीला था व इससे संस्कृत शब्द इन्दीवर = नीलकमल बना। कंड का अर्थ काला था व इससे संस्कृत शब्द कृष्ण बना। बंड का अर्थ हरा था। इससे फारसी शब्द सब्ज बना। ड का ज हो गया और स उपसर्ग लग गया। इसीसे बाग व बरेजा शब्द बने। इससे बाजी शब्द बना पर बाद में बाजी का भाजी (हरियाई) हो गया। इसीसे अंग्रेजी शब्द वर्डेन्ट बना। रंड का अर्थ लाल था। इससे अंग्रेजी शब्द रेड बना व हिंदी शब्द रतनार बना। भंड से भूरा शब्द बना। हंड का अर्थ पीला था। पीला रंग सबसे अच्छा समझा गया इसलिये उसे हंड नाम दिया गया व इसीलिये पीले रंग के हलदी व सोने के नाम हल्दी व हाटक पड़े। हंड से हरित=पीला शब्द हिन्दी में बना।

गोंड हिन्दू हैं या नहीं इस बात का वाद विवाद ५० साल के ऊपर से चल रहा है। सन् १६१७ में नागपुर ज्युडिशल कमिशनरी के एक अंग्रेज जज ने यह फैसला दिया कि वे हिंदू नहीं हैं। कई विद्वानों के मतों के विरुद्ध उन्होंने यह फैसला दिया था। अहिन्दू बनाने के लिये उन्होंने गोंडों को जंगली सबूत पाया और यह भी पाया कि उनके देवता हिन्दुओं के देवताओं से भिन्न हैं। इस तरह जो जाति दस हजार साल के ऊपर से बिलकुल हिन्दू रही आई, वह अहिन्दु बना दी गई। इस फैसले के छह साल बाद कलकत्ता हाईकोर्ट के दो अंग्रेज जजों ने डोम जाति को हिन्दू करार देकर अपनी बुद्धिमानी व न्यायप्रियता का ज्वलंत प्रमाण प्रस्तुत किया।

सभ्यता व जंगलीपन बहुत कुछ अक्ल व ताकत पर निर्भर रहते हैं, रहन-सहन पर नहीं। जिसको अधिक अकल व ताकत प्राप्त होगई वह कम अकल व कम ताकत वाले को दबा देता है और वह सभ्य हो जाता है व दबा हुआ आदमी जंगली हो जाता है। कभी कभी दो भाइयों में एक सभ्य बन जाता हैं व वह दूसरे को जंगली बना देता है। गोंड लोग जंगली नहीं थे और वे किसी समय राज्य भी करते रहे। उनके मुख्य देवता हिन्दू देवताओं से भिन्न कभी नहीं रहे। गोडों के रहन-सहन व धर्म के बाबत कई अनुसंधानिक विद्वान ५० साल के ऊपर से बड़ी दिलचस्पी लेते चले जाते हैं। वर्षानुवर्ष कष्ट-साध्य खोज करने पर इन विद्वानों को यह पता आखिर चल ही गया कि इनके यहां शादियों में गाने गाये जाते हैं, दूल्हा दुलहिन को हलदी लगाई जाती है व वे सात बार खंबे के चारों तरफ चक्कर लगाते हैं और जब उनको लड़का बच्चा पैदा होता है तब बहुत खुशी मनाते हैं। पर यह मानने में कि उनके बड़ादेव संस्कृत में महादेव हो गए, अभी भी कुछ मुश्किल बनी जाती है।

गोआ शब्द के व्युत्पत्ति के सम्बन्ध में काफी विचित्र तर्क वितर्क हुये हैं। किसी ने गो अक्षर देखकर गो = गाय से सीधा सम्बन्ध जोड़ दिया है। किसी ने गोआ के निवासियों का सम्बन्ध संथाल व मुंडा जातियों से निकाल दिया है। यह भी कहा जाता है कि बंगाल के सारस्वत गौड़ लोग गोआ में आकर बस गये। यह जरूर है कि गोआ शब्द गोंड या गौड से बना हैं पर यह बनने के लिये बंगालके गौड की कोई आवश्यकता नहीं थी। गौड नाम के लोग पूरे हिंद में जहां तहां थे व हिंद के कई हिस्से गौड कहलाते थे। गोदावरी नाम से यही पता चलता है कि वह कोई न कोई गौड प्रदेश में से बहती थी। महाराष्ट्र प्रदेश व उसके आसपास में गौड लोगों की कमी नहीं थी। वहां तो गोड शब्द का समावेश मनुष्यों के नामों में हो गया है जैसे खंडागा गोड, नीलकंठ गोड। कुर्ग व मैसूर में भी गोडा लोग हैं।

गोंड या गौड का ड लोप होकर व उसके जगह आ लगकर गोआ शब्द बना है। बुन्देलखंडी शब्दों का आखिरी ड हिन्द के बाहर लोप हुआ ही है वह हिंद में भी लोप हुआ है। कुआ शब्द लीजिये वह कुंड या कुड्ड से बना है। जुआ (द्यूत) शब्द जुड्ड से बना है। गुजराती व मराठी में जुड्ड का जुगार हो गया। ड का ग हो गया। पुआ शब्द पुड़ा से बना है पुआ याने पुड़ा सरीखी कुछ फूली हुई चीज। गोआ ही पुराना नाम है इसके पहिले गोड या गोड्ड नाम रहा होगा। संस्कृत नाम गोमंता या गोमांत बहुत बाद के हैं।

गोआ के लोगों का व संथालिओं का सम्बन्ध बताने में सबसे मजेदार बात यह कही जाती है कि दोनों में बीसी की गिनती होती है। याने एक बीसी दो बीसी तीन बीसी ऐसा गिनते हैं। भाषा विज्ञानिओं को चाहिये कि वे बुन्देलखंड में आवें व ऐसा एक गांव ढूंढ निकालें जहां बीसी की गिनती न होती हो। बुन्देलखंड ही क्या वह गिनती हिंद के अनेक प्रदेशों में चलती रही व चलती मिलेगी। फिर बीसी की गिनती तो आर्यन है। आर्यन शब्द से भारत के जातियों का भेद जानने का प्रयत्न करना उन्नीसवीं सदी में रहना है।

कहा जाता है कि गोआ के गांवों के नाम गुडी हैं और गुडी आसाम के गांवों के नामों में भी है इसलिये मुंडा जाति के लोग गोआ में अवश्य आकर बसे हैं। पर दमोह जिले में (जो बुन्देलखंड में है) गूडा व गूढा नाम के कुछ गांव हैं। आसाम व गोआ पहुंचते पहुंचते गूडा का गुडी हो गया तो आश्चर्य की बात न होनी चाहिये। और फिर गुडी शब्द तो हिंद के कई भाषाओं में है। पहिले गूड़ा बना बाद में गूड़ी बनी।

सिंग = सूर्य यह सिंग संड = सूर्य से ही बना है। ड का ग हो गया है। यह बुन्देलखंड में ही बना। बुन्देलखंड में सिंगपुर नाम

के बहुत से गांव हैं। इस नाम में जो सिंग है उसका अर्थ सूर्य है न कि सिंह! शुरू शुरू में चाहे दस हजार साल हुये हों चाहे पन्द्रह हजार साल हुये हों हिंद के गांवों को जो नाम दिये जाते थे वे बहुधा सूर्य के नाम ही रहते थे। उन नामों में से बहुत से नाम अभी बने जाते हैं। आर्यों के पहिले के हिंदुओं का पहिला देवता सूर्य ही था वउसके मनमाने नाम थे। बाद में शिव मुख्य देवता हो गये व अभी भी बने जाते हैं। सिंगपुर नाम के गांव व सिंग = सूर्य बुन्देलखंड के बाहर भी हैं। संथाली या मुंडा सिंग बुन्देलखंडी है।

यह बात निश्चित है कि संड = तीन से सिंग बना। सिंगारा एक फल है जो तालाब में होता है उसकी तीन बाजू होती हैं। संड—आड = सिंगारा। ड का ग हो गया है। सही शब्द सिंगारा ही है व बुन्देलखंड के अधिक लोग सिंगारा ही उच्चारते हैं। पर लिखने में वह सिंघारा कर दिया गया है व कोई २ सिंघारा कहने लगे हैं। मराठी के शिंगाड़ा शब्द में ग ही बना जाता है।

मुंडा भाषा को महत्व देने के लिये इतनी बहुत उड़ानटप्पू बातें कही गई हैं कि उन सबके जवाब देने की अभी जरूरत नहीं है। पर उनमें सर्वोच्च यह है कि लांगल शब्द मुंडा है। आर्य लोग खेती करना नहीं जानते थे व उन्होंने खेती मुंड लोगों से सीखी व उनकी भाषा का लांगल शब्द संस्कृत में ले लिया। अगर आर्य हिंद में आने के बाद खेती करना नहीं जानते थे व खेती सीखने के लिये उनको मुंडा देश तक जाना पड़ा तो यही समझना चाहिये कि इसके पहिले दो तीन हजार साल तक पंजाब व सिंध से लेकर सीरिया तक जो सभ्यतायें बनती पनपती रहीं उनके लोगों को भी खेती करना न आता होगा। अगर वे खेती जानते होते तो क्या आर्य उनसे न सीख लेते? बिचारे सिन्धु तलहटी के सभ्यता के लोग मांस मछली के सिवाय सिर्फ खजूर महुआ व करोंदा खाते रहे होंगे। उनको अन्न खाने न मिला होगा। जब पूर्व में गंडक नदी पार करके वे मुंडों से खेती करना सीख आते तब कहीं अन्न

खाना उनको नसीब होता। लांगल का असल बुन्देलखंडी शब्द नांड था उससे मराठी व गुजराती शब्द नांगर बना। नांडना याने एक लम्बी लकीर में खोदना। नांड से नारी नदी नाली ताड़ी शब्द बने। नांगर का संस्कृत में लांगल हो गया। न का ल हो गया। संस्कृत में लांगल ही इकलौता शब्द नहीं है जिसमें बुन्देलखंडी न का ल हो गया। नमक के लिये बुन्देलखंडी शब्द नोन है। नोन से संस्कृत लवण शब्द बना व बाद में लवण का लोन हिंदी में हो गया।

मुंडा शब्द खुद बुन्देलखंडी है। जैसे दूसरे प्रदेशों के नाम बंड संड इत्यादि थे वैसे ही एक प्रदेश का नाम मंड था। उससे मुंड या मुंडा बना। यह नाम इसलिये नहीं पड़ा कि वहां के लोग मुंडा = सिर घुटे रहा करते थे। शहर का नाम भी मंड था उसका मंग हो गया व बाद में मंग का मुंगेर हो गया। कुछ दूसरे प्रदेशों के नाम भी मंड थे। महाभारत से पता चलता है कि हिन्द के पश्चिमोत्तर भाग में भी कोई मुंड लोग रहते थे। इस प्रदेश का नाम संस्कृत में मुंड्रा करके मुड्रा कर दिया गया था। पर मुंड्रा शब्द का लोप अभी तक नहीं हुआ है। मंडोर, मंडसोर व मांडू मंड के ही विकसित रूप हैं।

संठाल (संथाल) भी बुन्देलखंडी शब्द है। वह संड-हार का बदला हुआ रूप है। अगर असल शब्द संठाल ही था तो भी वह बुन्देलखंडी ही था। बुन्देलखंडी शब्दों को जबरन मुंडा बनाने के जो प्रयत्न हो रहे हैं वे सर्वथा निष्फल सिद्ध होंगे। अगर यह कहा जाय कि बंग संग शब्द बंड संड से नहीं बने हैं बल्कि बंड संड शब्द बंग संग से बने हैं तो यह कहना उतना ही सही होगा जितना यह कहना सही है कि जर्मन गोट से एंग्लो-सेक्सन या डच गोड बना।

ईजिप्त की तसबीरी भाषा सबसे पुरानी मानी जाती है पर जब सुमेरिया मीरिया या क्रीट में पुरानी भाषा मिलती है तब वह भी सबसे पुरानी कह दी जाती है। यूरोपियन स्कोलरों के अनुसार मो० लि० की भाषा सबसे पुरानी नहीं हो सकती। उसका नम्बर

दूसरा या तीसरा भी नहीं हो सकता। पुरानी भाषाओं में वह गचट्टी ही रहेगी। और यद्यपि वह बहुत पुरानी नहीं है तिस पर भी उनके कहने के अनुसार वह मर चुकी। देर से बनी व जल्द मर गई हिन्द की पैदायश तो कहलाई।

मो० लि० की भाषा अभी मरी नहीं है। वह बखूबी जिंदा है। भारत के भाषाओं में तो वह है ही पर उसका खून अन्य देशों के भाषाओं के रग-रग में बह रहा है। पुरातत्व-विद्वानों का कहना है कि संसार की पुरानी भाषाओं में सिर्फ ग्रीक व चीनी ऐसी भाषाएं हैं जिनकी परम्पराएं लेखों में पांच हजार साल से आज तक बनी जाती हैं। बाकी सब मर चुकीं। पर मो० लि० की भाषा भी मरी नहीं है व उसकी परम्परा पांच हजार साल के ऊपर से आज तक बनी जाती है। ग्रीक व चीनी और मो० लि० की भाषा में सिर्फ इतना फरक रहने का है कि पुरानी ग्रीक व चीनी साफतौर से न बांची जा सकेंगी व मो० लि० की भाषा स्पष्ट बांच ली जावेगी व उसका ओघ प्रत्यक्ष रहेगा। बुन्देलखंडी शब्द कटे ठोस पत्थर जैसे रहते है उनके उच्चारण के सम्बन्ध में कोई मतभेद नहीं हो सकता। उनके अर्थ के बाबत शायद ही कभी शक पैदा होगा।

यूरोपियन स्कोलरों में से एक दो कुशाग्र बुद्धि को कयामत का दिन नजर आ चुका है। उन्हें यह दिख चुका है कि जिस दिन मो० लि० बांच ली जावेगी उस दिन गजब टूटने का है व पुरातत्व भाषा विज्ञान व पुराने इतिहास के सैकड़ों ग्रन्थ निकल-तिथि हो जावेंगे और जो पुरानी भाषाएं बांच ली हैं उनका शायद पुनर्वांचन करना पड़े। इसलिये वे जोर के साथ कहने लगे हैं कि यूरुप की आर्य जातियां शुरू में ईरान व उसके आसपास रहती रहीं व जब हिंद में मो० लि० भाषा बोली जाती थी याने सिंधु नदी की सभ्यता के समय में वे वहीं सैकड़ों साल रहे आए। इस तरह एक नितांत सही बात कहकर इन्होंने आगे कहने का रास्ता खोल रखा है।

पुरातत्व विद्वान एक संकट की घंटी बजाते रहते हैं। उनका यह कहना है कि सिंधु नदी की सभ्यता देखकर किसी को यह नहीं सोचना चाहिये कि वह सभ्यता सारे हिंद में फैली थी। यह ही सोचते रहने में बुद्धिमानी है कि सिन्धु घाटी के लोग सभ्य हो गये थे व हिंद के बाकी लोग जंगली ही थे। आज किसी शहर के एक कोने में खुदाई की जावे और अगर वहां कांच के तुकड़े मिलें तो वहां कांच की सभ्यता हुई। दूसरे कोने में खुदाई करने से अगर चिनी मिट्टी के तुकड़े मिलें तो वहां चीनी मिट्टी की सभ्यता हुई। तीसरे कोने में खुदाई करने से अगर अल्यूमीनिअम के तुकड़े मिलें तो वहां की सभ्यता अल्यूमीनिअम की हुइ। चौथे कोने में खुदाई करने से अगर कुछ भी न मिले तो वहां के लोग जंगली। और जब तक किसी जगह की खुदाई न की जावे तब तक वहां के लोग भी जङ्गली। इस संकटापेक्षी मनोवृत्ति को लोथल की खुदाई से आघात पहुंचा। पर वह हलका ही रहा।

यूरोपियन विद्वानों का कहना है कि मोहेनजोदारो के विनाश का कारण आर्य लोग हैं। उन्होंने उस पर चढ़ाई की व वहां के बहुत से निवासियों को मार डाला व घरों में आग लगा दी व इसलिये उस शहर के बाकी लोगों को वहां से भाग जाना पड़ा। इसके बाद वह शहर उजाड़ पड़ा रहा व रेता व मिट्टी में दब गया। पर इस निर्णय पर आने के पहिले वे एक मोटी बात का विचार नहीं करते कि अगर आर्यों ने मोहेनजोदारो के निवासियों को मार भगाया था तो वे खुद उस शहर पर काबिज क्यों न हुये। क्या उनको एक बड़े सुव्यवस्थित शहर में रहना बुरा लगता था? उन्होंने वहां का सब गड़ा हुआ धन क्यों नहीं निकाल लिया? वैसे तो एक ही जाति के लोग आपुस में लड़ते हैं व परस्पर कतल करते हैं। इसलिये अगर आर्यों ने चढ़ाई करके मोहेनजोदारो हड़प्पा व सिन्धु घाटी के अन्य शहरों के निवासियों को मार भगाया तो उसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। पर असल बात यह है कि आर्यों की इन लोगों पर

चढ़ाई करने की शक्ति ही न थी। उन्होंने पंजाब का कुछ हिस्सा जीत लिया था व वे उस पर काबिज थे। उन्हें वहां टिके रहने की ही दो दो पड़ी थीं।

यह बात सब ही मानते हैं कि मोहेनजोदारो एक विशाल शहर था व उसमें लाखों की बस्ती थी। फिर ऋग्वेद में इस बड़े शहर का वर्णन क्यों नहीं है ? उसका कौनसा नाम था जो ऋग्वेद में दिया है ? इतने बड़े सभ्य व समृद्ध शहर पर विजय पाने के बाद यह कैसे हो सकता है कि उसके बड़प्पन की कुछ भी चर्चा न हो। आदि काल से मनुष्य स्वभाव यह रहा है कि विजयी लोग पराजित लोगों के बल व वैभव का वर्णन करने में कोई भी कमी नहीं करते। बल्कि उसे कुछ बढ़ा चढ़ा कर ही करते हैं। मूर्ख लेखक से लेकर मेधावी लेखक तक एक बहुत बड़ी बात का वर्णन करने को कैसे भूल सकता है। संसार के सबसे बड़े शहर के बाबत ऋग्वेद में क्या इतना ही नहीं लिखा जा सकता था कि वह एक बड़ा व बलवान शहर था व वहां के लाखों आदमियों को मार भगाया। उसमें निन्नान्वे शहर जीतने का वर्णन आया है व कई जातियों पर विजय पाने का वर्णन आया है। तो क्या मोहेनजोदारो के बारे में स्पष्ट रूप से दो वर्णनात्मक शब्द नहीं लिखे जा सकते थे ? यूरोपिअन विद्वान साधारण मनोविज्ञान के एक सरल सत्य को खो देकर अपनी बात पर कायम बने जाते हैं। और भी एक बहुत बड़ी बात यह है कि अगर आर्यों ने सिन्धु घाटी के करोड़ों शिव पूजकों का सफाया कर दिया होता तो इतनी बड़ी जीत के उल्लासातिरेक से ऐसा अनिवार्य मनोविकारोद्रेक उत्पन्न हुआ होता

कि वे शिवजी को हिंद में ठांव न मिलने देते। आर्यों को शिव-पूजकों के सामने झुकना पड़ा व तब ही वे शिव पूजक बने।

अतिवृष्टि से सिन्धु नदी में भयंकर बाढ़ आई थी व उस बाढ़ में उसके किनारे के शहर बह गये थे। नदी के पूर से शहर का बह जाना कोई अनहोनी बात नहीं है। मोहेनजोदारो के विनाश के सम्बन्ध में राजा मोहन का जो किस्सा बना है उसमें भी सिन्धु नदी का पूर ही विनाश का कारण बतलाया है। पर अपना दिल खुश रखने के लिये यूरोपिअन विद्वानों का यह ख्याल अच्छा है कि आर्यों ने यह विनाश किया॥

९
श्री स्पिवाक

अगर किसी ने मो० लि० के सम्बन्ध में कुछ मतलब का ताड़ा है तो वे हैं अमेरिका के पुरातत्व विशेषज्ञ श्री स्पिवाक उनका यह कहना सही है कि मो० लि० में बाइबिल की कहानियां लिखी गई हैं। उन्होंने कुछ सीलों पर से इन कहानियों के अंश बांच के भी बतला दिये हैं। उन्होंने कई लेख सही बांचे हैं व कुछ गलती। लिपि को बिना समझे सही बांच देने की श्री स्पिवाक साहिब की जितनी तारीफ की जाय उतनी ही कम है। पर बांचने के साथ साथ उन्होंने यह भी कह दिया कि सिन्धु तलहटी की सभ्यता का विकास यहूदी लोगों का किया हुआ था। यह उन्होंने बिलकुल गलत कहा। पर वे ऐसा क्यों न कहें ?

दो सौ साल के ऊपर से यूरूप के अधिकांश विद्वान हिन्दुओं को चाहे वे आर्य होवें चाहे अनार्य बुराई ही करते आये हैं। जब हिन्द में अंग्रेजी राज्य था तब तो बुराई करना उनका एक कर्तव्य ही था। अंग्रेजी राज्य चला गया तो क्या हुआ ? सुतली जल गई पर उसकी ऐंठन नहीं गई। विज्ञानिक ढंग से हिन्द के पुरातन इतिहास व भाषाओं का अध्ययन करके ये यूरोपिअन विद्वान इसी निष्कर्ष पर पहुंचे कि हिंद में गोरे या अर्धगोरे आदमी पैदा नहीं हो सकते थे और न कोई अच्छी या सुन्दर चीज पैदा हो सकती थी और न हिन्दू लोग कोई अच्छी सुन्दर या मूलक चीज पैदा कर सकते थे। हिंद में अगर कुछ पैदा हो सकता था तो नीग्रो। अगर हिन्दू कुछ ज्योतिष जानते थे तो वह उन्होंने ग्रीक लोगों से सीखा था पाणिनि लिखना नहीं जानते थे उनको लिखना

सिखाने वाला था ही कौन ? तीन हजार साल पहिले हिन्दू मन्दिर बनाना नहीं जानते थे और अगर मंदिर बना भी लेते थे तो उसमें वे कमानियां नहीं बना सकते थे-अगर संस्कृत में नाटक लिखे गये थे तो अवश्य ग्रीक नाटकों के प्रभाव से लिखे गये होंगे-अगर हिंद के पश्चिमोत्तर भाग में गंधार मूर्त्ति कला छिछली रही तो उसका कारण ग्रीको-रोमन कला का ही प्रभाव था-अगर एक काल में एशिया से युरुप को कोई गणित के सिद्धांत पहुंचे थे तो वे अरबों ने ढूंढ निकाले थे-अगर दक्षिण भारत में कोई विशेष प्रकार का मंदिर बना है तो वह इराक के उड के मन्दिर की नकल होना चाहिये-अगर हिंद में भागवत धर्म बढ़ा तो वह क्रिश्चियन धर्म के प्रभाव से ही बढ़ा-हिन्दू लोग कालिदास को भले ही बड़ा कवि कहें पर वे वरजिल या होरेस की भी बराबरी नहीं कर सकते-हिंदुओं के नारी सौंदर्य चित्रण में पतली कमर है ही नहीं-हिंद असभ्य असभ्यता व जंगली है-हिंदू लोग परलोक का ही सोच सकते हैं इह लोक का नहीं सोच सकते-हिन्दी की कोई परम्परा ही नहीं है। फिर भला यह कैसे हो सकता है कि सिन्धु तलहटी के शहरों में सुव्यवस्थित सड़कें बनी हों-सड़कों के बाजू में पानी बहने के लिये नाबदान व नालियां हों-मकान सिलसिले से बने हों व उनमें कुये के पानी का सुपास हो-नहाने व तैरने के लिये पक्का बंधा हुआ तालाब हो-गल्ला रखने के लिये सामुहिक प्रबन्ध हो-उत्तम कला-कौशल से मूर्त्तियां बनाई गई हों जिनमें से एक में एक कंचनी की भावमुद्रा का उरेहन देखकर न्यूयार्क के मेट्रोपोलिटन थियेटर की लफलफांगी सुन्दर नर्तकियों की याद आ जावे-रत्नों का काट व जेवर की बन की हथौटी देखकर अमस्टर्डाम के जौहरी भी दांतों तले उंगली दबावें-जहां के पशुओं के उत्कीर्ण चित्रण में संप्राणित प्रफुल्लता हो—लिखन कला इतने उत्कर्ष पर पहुंची हो कि उसकी गुत्थी सुलझाने में संसार के सकल-लिपि-सुविज्ञों के छक्के छूटे ही रहें-और इस संस्कृति के करता हिन्दू रहे हों ।

हिन्दुओं में तो इतनी अकल कभी हो ही नहीं सकती थी। इसलिये ये पाश्चात्य विद्वान निरंतर इसी खोज में लगे रहते हैं कि हिंद के पश्चिम तरफ के एशिया खंड के, यूरूप के या आफ्रिका के किस कोने से कौन लोग यहां आकर बसे थे व इतनी उमदा संस्कृति उभारकर कहां चल दिये ?

यद्यपि हड़प्पा की खुदाई के पहिले ही यह मान्य हो चुका था कि बाइबिल की कहानियां कई भाषाओं में पाई जाती हैं व इसलिये बाइबिल में उनका मूलक होना जरूरी नहीं है और यद्यपि यह भी मान्य हो चुका था कि हिन्द में हजारों कहानियां बनीं व वे दुनियां में सर्वत्र फैल गईं और यद्यपि हड़प्पा व मोहेनजोदारो के खुदाई में कई देवी देवताओं की मूर्त्तियां मिलीं जो बात यहूदी संस्कृति को नकारती है और यद्यपि बाइबिल या उसके आनुषंगी साहित्य में इसका कोई आधार नहीं है तिस पर भी ऊपर लिखे ज्ञान में पढ़े पले श्री स्पिवाक साहिब एक छछूंदर छोड़ने के प्रलोभन से बाज न आ सके। उन्होंने यह कह ही दिया कि यहूदिओं में कुछ आपुसी झगड़ा हुआ था इसलिये उनमें से कुछ लोग एब्राहम के साथ नील नदी की तलहटी को चले गये व कुछ लोग उसके भतीजे लोट के साथ सिन्धु तलहटी में आ बसे और उन्होंने ही इस तलहटी की सभ्यता स्थापित की। वैसे तो यह कहने में कि हिंद में यहूदी सभ्यता रही आई हिंदुओं को बुरा लगने की कोई बात नहीं है। क्योंकि जहां आर्य ग्रीक सीथिअन शाक हूण मुस्लिम व अंग्रेजी सभ्यताएं आकर बस गईं वहां एक यहूदी सभ्यता और सही। पर बात यथार्थता के विपरीत है।

बाइबिल की एडम ईव सृष्टि रचना व बड़े पूर की कहानियां शुरू में हिन्द में ही बनी व गार्डन आफ ईडेन हिमालय के काश्मीर कांगड़ा या गढवाल घाटी में कहीं था वह बेहरीन में कभी न था। सुमेरियन लोगों ने हिन्द के पश्चिमोत्तर भाग को एदिन जो नाम

दिया था वह इसलिये दिया था कि वे जानते थे कि ईडेन के बगीचे का किस्सा हिंद में बना था।

यद्यपि संसार की अति प्रसिद्ध कहानियां बनाने का श्रेय हिन्दुओं को प्राप्त है तिस पर भी शैतान से ईव के लुभाए जाने व इस तरह स्त्री को पाप की दोषी ठहराने की कहानियां बनाना कोई गर्व का कारण नहीं है। बल्कि वह एक शरम की बात है। यह कहानी एक महती सामजिक क्रांति के इतिहास का पन्ना है। दस हजार साल पहिले हिन्द व उससे लगे देशों में मातृ–सत्तात्मक शासन रहा आया। उसके विरुद्ध मर्दों ने आंदोलन करके बलवा किया व उसको मिटाकर अपनी सत्ता जमाना व औरतों को नीचा दिखाना शुरू कर दिया। अखीर में जब पूर्ण विजय हो गई तब मर्दों ने यह कहानी गढकर औरत को पाप का मूल बना दिया व कई धर्मों में वह यह बनी रही। ईव का अर्थ शाम या रात होता है व देख लीजिये गोस्वामी तुलसीदासजी क्या कहते हैं :—

पाप उलूक निकर सुखकारी।
नारि निबिड़ रजनी अंधियारी ॥

दस हजार साल के संस्कार का असर कैसे मिट सकता है?

मातृ-सत्तात्मक प्रथा का अवशेष भारत में ता० १७-६-५६ तक रहा आया जिस दिन भारत संसद के एक्ट ३० सन् ५६ ने उसे खतम कर दिया।

१०

मूर्ति पूजा

सिन्धु तलहटी के लोग हिंदू थे। उनका धर्म हिंदू था और वे हिंदू देवता पूजते थे। वे ईश्वर को मानते थे व मूर्ति पूजक थे। मूर्ति पूजा के निंदक अपनी बुद्धि संकुचित करके बात करते हैं। मूर्ति पूजा आदर के भाव से पैदा होती है। अधिक आदर पूजा के भाव में परिणत हो जाता है। मूर्ति पूजा पत्थर या किसी निर्जीव वस्तु की पूजा है। मस्जिद पत्थर की बनी रहती है व चर्च भी पत्थर की बनी होती है। मुसलमान व क्रिश्चियन लोग इन पत्थर की इमारतों को धार्मिक पूज्य भाव से क्यों देखते हैं? कबरों के प्रति क्यों पूज्य भाव रहता है? यह मूर्ति पूजा नहीं है तो क्या है? जो लोग अपने घर में पुरुष या स्त्रियों की तस्वीरें टांगते हैं व उनको आदर भाव से देखते हैं वे भी मूर्ति पूजक ही हैं। जो लोग अपने यहां रूजवेल्ट और लार्ड न्यूफील्ड की या लेनिन और स्टेलिन की मूर्तियां रखते हैं वे उनकी अपेक्षा अधिक मूर्ति पूजक हैं जो अपने यहां देवतों की मूर्तियां रखते हैं। क्योंकि इनकी मूर्तियां कलात्मक हैं व उनकी नकलात्मक हैं।

११

मो० लि० के प्रकार

(१) स्वाभाविक—अगर आदमी का चित्र बना है तो आदमी बांचा जायगा व उसका अर्थ आदमी ही होगा। अगर किसी झाड़ का चित्र बना है तो झाड़ बांचा जायगा व उसका अर्थ झाड़ ही होगा। जो कुछ चित्र में दिखता है वही उसका अर्थ रहता है।

(२) चित्र पहेली। यह मामूली चित्र पहेली है। पर यही सबसे अधिक है व मुख्य व कठिन है। चित्र देखकर जो शब्द बांचा जाता है उसका दूसरा अर्थ जो वहां लागू हो निकालना पड़ता है। कोट शब्द ले लीजिये उसके दो अर्थ होते हैं (१) परकोटा (२) पहनने का कपड़ा। अगर परकोटा का चित्र बना है तो वह कोट बांचा जायगा व कोट का अर्थ पहनने का कपड़ा होगा। अगर पहनने के कपड़े का चित्र बना है तो वह कोट बांचा जायगा व उसका अर्थ परकोटा होगा। भौंरा एक कीड़ा होता है व एक खिलौना। अगर कीड़ा बना है तो भौंरा बांचा जायगा व उसका अर्थ खिलौना होगा। अगर खिलौना बना है तो भौंरा बांचा जायगा व उसका अर्थ कीड़ा होगा। कहीं कहीं पूरा चित्र नहीं बांचा जाता व सिर्फ उसका एक हिस्सा बांचा जाता है। मानलो कि आदमी का सिर बना है व उसमें बाल बने हैं हो सकता है कि सिर्फ बाल बांचे जावें व पूरा सिर न बांचा जावे। सिर इसलिये बना है कि बाल स्पष्ट बांच लिये जावें याने सिर बालों के उठाव (रिलीफ) के लिये बनाया गया।

(३) वर्णमाला के अक्षर भी हैं।

(४) संख्या वाचक शब्दों का बहुत प्रयोग हुआ है । अगर एक लकीर-या एक बिन्दु है तो अंड बांचा जायगा । दो हैं तो बंड । तीन हैं तो संड । चार हैं तो गंड । पांच हैं तो पंड । छह हैं तो भंड । सात हैं तो खंड । आठ हैं तो हंड बांचा जायगा । बांच लेने के बाद ऊपर लिखा प्रकार नं० २ लागू होता है । जैसे अगर तीन लकीरें बनी हैं तो संड बांचा जायगा व संड का अर्थ सूर्य आग बैल इत्यादि कुछ भी हो सकता है । बांचने का यह प्रकार अत्यन्त सरल है । पर बांचने में लकीर शब्द नहीं बांचा जाता । अगर तीन लकीरें हैं तो सिर्फ संड बांचा जायगा न कि संड रेंड ।

(५) सांकेतिक याने आइडिओग्रेफिक—यह लिपि दो प्रकार की है । एक साधित व दूसरी कोई भी अन्य प्रकार की । साधित वह है जो तीन छोटी लकीरों से याने संड से दर्शाई जाती है । अंग्रेजी में इस संड का अर्थ साइन है । देखो संड पन्ना ३६ । मो० लि० में सांकेतिक व स्वाभाविक कम हैं व उसे छोड़ बाकी सब बोलनीय हैं ।

(६) दून डबल)—किसी चित्र में एक शब्द अगर एक प्रकार से बांच लिया जावे व उस चित्र में वही शब्द दूसरे प्रकार से भी बांच या समझ लिया जावे तो उसे दून कहेंगे । मो० लि० वालों को दून का कुछ शौक ही था ।

(७) चतुर्भुजाकार—जो बात जगत सम्बन्धी है या सार्वजनिक है वह अकसर समकोण चतुर्भुज में लिखी गई हैं ।

(८) दायें बायें—सील पर से बांचना या उसके छापे पर से बांचना व दायें से बांये तरफ बांचना या बांये से दायें तरफ बांचना ये दो प्रश्न मिश्रित हैं । बिना सब लेख बांचे इनका विवाद नहीं किया जा सकता । मुख्य कठिनाई यह है कि मो० लि० में कई दो अक्षर ऐसे हैं जो परस्पर उलटे हैं । क अक्षर का उलटा ल अक्षर है ।

अगर कल लिखा है तो वह उलटी तरफ से भी कल बांचा जा सकता है। उसमें सिर्फ यह बात होगी कि ल को क बांचना पड़ेगा व क को ल । इसी प्रकार के कई पहेली-चित्र भी हैं। इसलिये अभी सिर्फ यह कहा जा सकता है कि मो० लि० बांये से दांये तरफ दायें से बांये तरफ ऊपर से नीचे नीचे से ऊपर भीतर से बाहर व बाहर से भीतर मनमानी लिखी गई है। जहां तक बन सकेगा इस पुस्तक में मो० लि० बांयें से दांयें तरफ ही लिखी जायगी।

(६) जोड़ने की लकीरें होती हैं व वे बांची नहीं जातीं। ये अकसर नीचे या बीच में आडी होती हैं। जब बायें से दायें तरफ बांचा जाता है तब कभी २ चित्र के दांयें (अपने बांयें) तरफ की खड़ी या तिरछी सीधी लकीर नहीं बांची जाती। चित्र के बांयें (अपने दाहिने) तरफ की लकीर हमेशा बांची जायगी। पलटा = निगेटिव बांचने में यह नियम उलट जायगा। रेखा गणित के चित्रों की व अक्षरों व संख्या की सब ही लकीरें बांची जाती हैं।

(१०) ड र ल अक्षर अकसर बोलने में परस्पर बदल जाते हैं। इसलिये मो० लि० बांचने में इनमें का एक अक्षर कभी २ दूसरे में बदल देना पड़ता है। आज भी बुन्देलखंडी में केरा है हिंदी में केला है व मराठी में केडें हैं।

(११) कहीं कहीं उर्दू जैसा इ या उ बांच लेना पड़ता है यद्यपि वह लिखा नहीं गया है। पर यह नियम सहूलियत के लिये है। हो सकता है कि इ या उ लगने से शब्द का जो अर्थ होता है वह बिन लगाये भी होता रहा हो। संस्कृत में बुन्देलखंडी शब्द मंड व मुंड दोनों है व दोनों का अर्थ सिर है। अंडांत शब्द चीनी रेडिकल जैसे बहु-अर्थी थे।

(१२) बांचने में कभी कभी अनुस्वार छोड़ देना पड़ता है व कभी कभी जोड़ देना पड़ता है।

(१३) दो दो अक्षरों के भी चिन्ह हैं।

जितनी लिपि प्राप्त हुई हैं वह सब एक ही आदमी की लिखी नहीं हो सकतीं और न एक ही आदमी के निरीक्षण में लिखी गई होंगी। भिन्न २ समय में भिन्न २ लोगों ने लिखी होंगी। उनमें से कुछ कुशल रहे होंगे व कुछ अनाड़ी रहे होंगे। अपनी २ कल्पना शक्ति का अपनी २ प्रभाविता का अपनी २ बुद्धि का व अपनी २ विनोदप्रियता का असर उस पर पड़ा होना चाहिये। कोई चित्र दो अलग २ प्रकार से बांचा जाता है। एक अर्थ के कई शब्द थे व एक शब्द के कई अर्थ थे। कोई २ लेख टूट-फूट व घिस-पिस भी गये होंगे। और जब आज भी एक अक्षर कई प्रकार से लिख दिया जाता है व हाथ के लिखे हुये टाइप किये हुये व छपे हुये लेखों में अस्पष्टता व गलतियां होती हैं तो उस समय भी ये हो सकती थीं। पर इस बातों पर से किसी को तर्क बितर्क करने की आवश्यकता नहीं है। जब मैं स्पष्ट बांचके बतलाऊं तब ही अगर चाहें तो मानिये अन्यथा नहीं।

मो० लि० समझने के लिये पुरानी ईजिप्टयन फोएनीशियन सुमेरियन या हिटाइट लिपियों का ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं है। मो० लि० इन लिपियों के पहिले की है। इन लिपियों के बनाने वालों ने मो० लि० की नकल करने की कोशिश की पर करते न जानी।

मो० लि० समझने के लिये तांत्रिक भाषा बांचने की विधियां समझने की आवश्यकता नहीं है। लिपि के एक चित्र से कौन २

से अक्षर बन सकते हैं यह जानने के लिये मंत्राभिधान प्रकारान्तर निघंटू वर्णोद्धर कोष व मात्रिका कोष जैसे अनेक ग्रंथ बांचकर अपना मग़ज खराब करने की कोई जरूरत नहीं है। और न अमेरिका जाकर क्लार्क्स टाऊन काउंटी क्लब में दुर्लभ तांत्रिक ग्रंथों को पढ़ने की जरूरत है।

मो० लि० में कोई सिक्का नहीं है। अगर है तो आफत ही है। सिक्कों को समझने के लिये एक म्यूजियम से दूसरे म्यूजियम को कौन भटकता फिरेगा व भारी भरकम रकमें खर्च कर कौन न्यूमिस्मेटिक्स की किताबें खरीदकर पढ़ेगा ?

मो० लि० में कोई रूपक या प्रतीक नहीं है इसलिये साहित्य दर्शन या कला की उच्चतम बारीकियां जानने की आवश्यकता नहीं है। जो हिंदी चार प्राथमिक कक्षाएं पढ़ा है उसके लिये इस पुस्तक में मो० लि० समझते जाना मिनिटों का काम है। वैशाली सीलों को सही समझकर व लोथल सीलों को गलत समझकर जो यह निश्चयात्मक ख्याल किया जाने लगा है कि मोहेनजोदारो व हड़प्पा की सीलें व्यापारिक हैं वह सर्वथा भ्रामक है। इन सीलों में संसार का सर्व प्रथम लिखित साधा साहित्य निहित है। वे व्यापारिक नहीं है।

इस पुस्तक में सील की पूरी लिखन को लेख कहा है व उसमें के एक अलग हिस्से को चित्र कहा है। जहां चित्र का दायां या बायां लिखा है वह चित्र का ही समझिये अपना नहीं।

पहिले वांचन में वर्णमाला के बहुत से अक्षर दिये हैं। दूसरे व तीसरे वाचनों में तीन शब्दों की रचना विशेष समझाई है। चौथे से सीलों के लेख बांचे गए हैं। उससे छब्बीस तक बाइबिल के किस्सों के लेख हैं। वे शुरू में इसलिये दे दिये हैं कि उन किस्सों से बहुत लोग परिचित हैं। सत्ताईसवें वाचन में एक साधारण व

सरल लेख है। इसके बाद जो तीन लेख बांचे गये हैं वे मो० लि० में कई प्रकार से सर्वश्रेष्ठ हैं। उनके वर्णित विषयों के चित्र सीलों पर दिये हुये हैं। सरलता से स्पष्ट समझने के लिये इन तीन लेखों से बढ़कर या उनके बराबरी के और कोई लेख मो० लि० में नहीं हैं। ये ही मो० लि० के निर्णायक हैं। अखीर में वैशाली के दो सीलों के सरल लेख बांच दिये हैं।

वाचन

१

वर्णमाला के अक्षर। बांये से दायें की तरफ लिखने में।

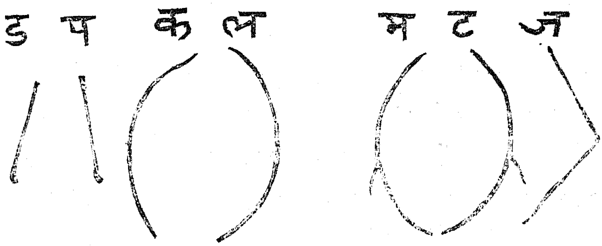

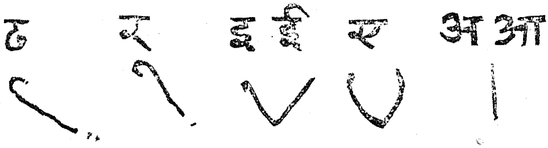

उ ऊ के लिये कोई अलग अक्षर नहीं था। उ ऊ बनाने के लिये चित्र की आखिरी लकीर नीचे को बल देकर बढ़ा दी जाती है। फिर उ ऊ चाहे पहिले अक्षर को लगे या दूसरे को। जिस लकीर से उ बनता है वह अगर अधिक बल खाती है तो ओ बन जाता है। ऊपर दिये हुये इ ई व ए अक्षर सीधे उलटे तिरछे आड़े कैसे भी लिखे जा सकते हैं। यह भी जरूरत नहीं है कि उनमें दो लकीरें रहें। एक लकीर से भी काम चल सकता है अगर वह लकीर बाकी चित्र के ऐसे हिस्से को जोड़ दी जावे जिससे कि अक्षर की आकृति बन जावे। इ ई ए ओ भी शब्द के उस अक्षर को जोड़ना पड़ता है जिससे सही शब्द बने।

२

मंड कट

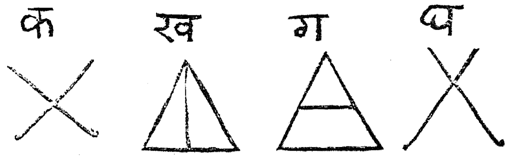

अगर एक सीधी लकीर दूसरी लकीर को या किसी भूमि को बीच में से काट देवे तो मंड शब्द बांचा जाता है। मंड से संस्कृत शब्द मध्य बना व अंग्रेजी शब्द मिड बना। मंड का अर्थ मध्य है व मध्य बताने से मंड बांचा जाता है। क चित्र शुद्ध मंड है और मंड के सिवाय कुछ और नहीं बांचना है। ख और ग में मंड के सिवाय कुछ और भी बांचा जायगा। घ चित्र में लकीरें बीच में नहीं कटी हैं इसलिये मंड नहीं बांचा जायगा वह कट बांचा जायगा।

३

टंड

इन तीनों चित्रों में दो दो झंडे जुड़े हुये हैं। उस समय झंडे को टंड कहते थे। झ अक्षर तब था ही नहीं। कोई भी ऊंची चीज टंड हो सकती थी। टंड से अंग्रेजी शब्द स्टेंडार्ड = झंडा बना।

अभी सिर्फ क व ख चित्रों पर ध्यान दीजिये ग रहने दीजिये।

क क्रा वाचन — उड्ड टंड
ख का वाचन — इड्ड टंड
उड्ड टंड का अर्थ—आकाश स्वर्ग

ईश्वर बहुत बड़ा इससे संस्कृत शब्द उत्तुंग बना।

इड्ड टंड का अर्थ—पृथ्वी जमीन

टंड शब्द का प्रयोग किसी भी ऊंची बड़ी या लम्बी चीज के लिये होता था। आकाश व पृथ्वी दोनों के लिये उसका प्रयोग होने लगा था। पृथ्वी के लिये असल शब्द ढंड था जिससे संस्कृत शब्द धरा बना है। पर ढ अक्षर का उच्चारण करना हमेशा कुछ न कुछ कठिन होता है। इसलिये पृथ्वी को भी टंड कहा जाने लगा था। आकाश भी टंड व पृथ्वी भी टंड। ज़मीन आसमान का फर्क पर शब्द एक ही था। इसलिये दोनों का भेद बताने के लिये क व ख चित्र बने।

आज के बुन्देलखंडी में दो शब्द हैं ऊलें व ईलें। ऊलें उड्ड का अपभ्रंश है। ऊलें के अर्थ हैं ऊंचा व दूर इलें का अर्थ है पास। ये ही अर्थ उड्ड व इड्ड के थे। क चित्र में दो झंडे दूर बतलाये गए हैं व नीचे की लकीर सिर्फ जोड़ की है। इसलिये चित्र का वाचन उड्ड टंड हुआ याने दूर का टंड। उड्ड का दूसरा अर्थ है ऊंचा इसलिये अर्थ हुआ ऊंचा टंड याने आकाश। यह लिपि के प्रकार नं० २ का उदाहरण है पर दूर के टंड का अर्थ भी आकाश हो सकता है।

ख चित्र में दो झंडे नीचे को मिले हुये हैं इसलिये वह इड्ड टंड=पास का टंड बाचा जाता है। पास का टंड याने पृथ्वी जमीन। ख चित्र में झंडों के कान या कपड़े नीचे को झुके बतलाये गये हैं। वे जमीन तरफ इशारा करते हैं। याने वे सांकेतिक हैं। बिना इस संकेत के चित्र सही बांचा जा सकता है। संकेत अतिरिक्त है इसलिये यह दून है।

ख चित्र समझना बहुत सरल है। वह जहां भी हो उसका अर्थ पृथ्वी है। पर क चित्र के अनेक अर्थ होते हैं। इसलिये उसका अर्थ निकालने में कुछ विचार करना पड़ता है।

उड्ड-टंड के अर्थ ईश्वर स्वर्ग व आकाश है इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। हिंदी में स्वर्ग के व अंग्रेजी में हेवन के भी यही तीन अर्थ होते हैं। अरबी में फलक के अर्थ स्वर्ग आकाश और तकदीर होते हैं।

ग चित्र का वाचन टंड है। टंड शब्द बनाने के लिये दो झंडों की आवश्यकता नहीं थी। पर कारण वश क व ख चित्र दो झंडों से बनाने पड़े इसलिये ग भी दो झंडों से बनाया है। यह टंड शब्द प्रतिष्ठा बतलाने वाला है। वह ईश्वर मनुष्य या पशु के नामों के साथ आता है व उनकी महत्ता बताता है। वह अंग्रेजी शब्द दि ग्रेट व संस्कृत शब्द महान् के बराबर है। टंड शब्द में व ग चित्र में धार्मिक पुनीति रही आई।

अभी भी टंड शब्द कहीं कहीं बना जाता है। वह टंडन आड नाम में है। उससे हिंदी का शब्द टंडा बना है जिसका अर्थ लम्बी कतार होता है। टंडला टंडा व टंडोजाम शहर भी हिंद में है। हिंदी व चीनी में टंड का तुंग हो गया। इन भाषाओं में जो तुंग शब्द के अर्थ हैं वे टंड शब्द के भी रहे आए। हिंद के कुछ राजाओं के नामों में तुंग रहा आया। एक राष्ट्र कूट राजा का नाम जगत्तुंग था व एक पल्लव राजा का नाम नृप तुंग था। प्रबन्ध-चिंतामणि के रचयिता का नाम मेरुतुंग था। तुंग एक हिंदू आड नाम भी है। वह एक गांव का भी नाम है।

संस्कृत में तांडव शब्द है। इसका अर्थ है शिव का नृत्य। इसलिये यह अपेक्षा होती है कि शिवजी का नाम तंड या तंडी होना

चाहिये था। पर आर्यों ने इस तरह का नाम शिवजी को नहीं दिया बल्कि उनके बैल नन्दी को तुंडी नाम दिया। बाद में शिवजी को तांडव–प्रिय कहना ही पड़ा। संस्कृत में टंड या तंड शब्द नहीं है। पर उससे बना तुंग शब्द है। तुंग शब्द का बहुत कुछ वही हाल हुआ जो बौद्ध धर्म का हुआ। वह हिंद में पैदा हुआ व वहां मुर्झा गया और चीन में लहलहा रहा है। पर केदारनाथ से कुछ मील दूरी पर (केदारनाथ में ही तुंगनाथ कल्पेश्वर हैं जो तुंगनाथ हैं वे आर्यों के पहिले के हैं व कम से कम ६–७ हजार साल से हैं। मन्दिर बनते गिरते रहते हैं पर उनके बनने गिरने से देवतों के आयु का कोई सम्बन्ध नहीं है। टंड = तंड = तुंग शिवजी का नाम है। द्राविड लोगों ने अच्छा ही किया कि वे उन्हें तंडवन कहे चले जाते हैं।

४

क ख

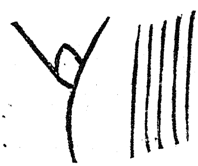

वाचन— **पेड्डू पंड्ड**।

अर्थ— ज्ञान का पेड़।

क—प और ड अक्षर जुड़े हुये हैं व उनके बीच में ए लगा है। ड की लकीर थोड़ी बल खाती नीचे को गई उसका अर्थ है कि ऊ की मात्रा कहीं लगाना है। पेड़ू = पेड़। असल बुन्देलखंडी शब्द पेड़ ही है। पर पंजाब व सिंध में कोई २ शब्दों में ऊ जोड़ दी गई थी। पेड़ू का मराठी में पेरू हो गया व पेरू का अर्थ बिही का झाड़ है। विशेष से सामान्य हुआ व एक विशेष बच रहा।

हो सकता है कि बिही का झाड़ ही ज्ञान का झाड़ रहा हो। उसमें फलों के गुच्छे भी होते हैं। यह चित्र बहुत कुछ पेड़ के आकार का बना है इसलिए दून है।

ख—पांच लकीरें है इसलिये पंड बांचा गया। पंड=ज्ञान। पंड से पंडित शब्द बना।

अंग्रेजी शब्द पेडिग्री में जो पेड है वह बुन्देलखंडी है।

५

क ख

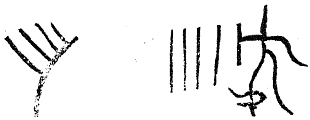

वाचन--**गुड्ड पंड, ईव पंड तोड़।**

अर्थ— फलों का गुच्छा ईव ने फल तोड़ा।

क—चार लकीरों से गंड शब्द बांचा गया। इन चार लकीरों को ड अक्षर लगा है। इसलिये गंड्ड हो गया ड की लकीर नीचे को बढ़ी है इसलिये ड अक्षर बना। यह पहिले अक्षर को लगेगा। इस तरह गुड्ड शब्द बन गया। गुड्ड=गुच्छा। गुच्छा शब्द गुड्ड का ही रूपांतर है। गड्ड=समूह आज भी हिंदी में है। गुड्ड से बना और अभी है.

ख—पांच लकीरें हैं। उनमें से पहिली चार बराबर हैं व पांचवी छोटी है और उसे ईव का हाथ लगा है। पांच लकीरों से पंड बांचा गया। पंड=फल। पंड=फल शब्द बुन्देलखंडी है पर बुन्देलखंड में अब नहीं मिलता। वह तेलुगू में जाकर पंडू हो गया व उस भाषा में पंडू का अर्थ फल ही है व कई फलों के नामों के के पीछे पंडू ऐसा ही लगाया जाता है जैसा कि अरबी में पत्तियों

के नामों के पहिले या बाद मुर्ग लगाया जाता है । तामिल में पंड का पज्जम हो गया । पंड=लटकना । फल लटकता है इसलिये उसे पंड कहते हैं । लटकन=फल शब्द हिंदी में है ।

मराठी में पेड़ों पर फल पकने के समय को पाड कहते हैं यह शब्द पंड से बना है । बुन्देलखंड में फसल की पैदावार को पज अभी भी कहते हैं । यह शब्द पंड से बना है । अनुस्वार लोप होकर ड का ज हो गया । पज का हिंदी में उपज हो गया व संस्कृत में उपजन हो गया ।

आखिरी चित्र में ईव बनी है । उसके पैर में सांप=शैतान लिपटा है व फल तोड़ने की प्रेरणा दे रहा है । इस प्रेरणा से ईव ने फल तोड़ लिया । जिस लकीर को ईव का हाथ लगा है वह दूसरी चार लकीरों से छोटी है याने वह लकीर तोड़ डाली गई है । इसलिये तोड़ शब्द बना । यह सांकेतिक है ।

६

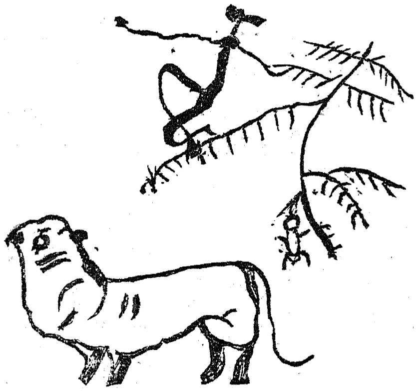

वाचन—**काल ईव** ।

अर्थ— (१) सांप याने शैतान देख रहा है।

(२) मृत्यु देख रही है।

पेड़ पर ईव चढ़ी है व उसने ज्ञान का फल तोड़ लिया है। एडम नीचे खड़ा है उसको ईव खाने के लिये या तो फल दे चुकी है या दे रही है इसीसे उसका हाथ फैला है। यह स्वाभाविक व सांकेतिक है।

चित्र में बाघ ईव के तरफ देख रहा है। कोई भी हिंस्क पशु या जन्तु काल कहलाता है। यहां पर काल शब्द ही बांचना है। काल के दो अर्थ निकलते हैं दोनों लागू होते हैं व लागू करना है। काल = सांप व मृत्यु।

(१) सांप = शैतान। शैतान खुशी के साथ अपनी सफलता का दृश्य देख रहा है।

(२) मृत्यु– फल खाने के बाद मृत्यु आ गई व देखने लगी इसके पहिले वह नहीं थी।

हूज मोर्टल टेस्ट
ब्राट डेथ अनटू दी वर्ल्ड
एंड आल अवर वो ।

—मिल्टन

इस चित्र की खूबी बताने के लिये काल सरीखा शब्द हिंद की भाषाओं को छोड़ दूसरी भाषाओं में नहीं मिलेगा।

बाघ के शरीर पर यह लिखा है।

वाचन— **कुंडल–बंड काल–बंड लुंग।**

अर्थ— मृत्यु रूपी शैतान ने फंसा दिया।

शुरू में एक छोटा सा गोलाकार बना है। वह कुंडल बांचा गया। कुंडल=सांप व सांप=शैतान। गले के नीचे एक तरफ क अक्षर बना है व दूसरे तरफ ल अक्षर बना है बीच में नीचे को आ बना है। यह काल बांचा गया। काल के दोनों तरफ की दो दो लकीरों को बंड बांचा गया। बंड=हिंसक पशु बंड का अंग्रेजी में वाइल्ड हो चुका है। पुट्ठे पर लौंग बनी है। लौंग को लुंग कहते थे लुंग का संस्कृत में लवंग हो गया व हिंदी में लौंग हुआ। लुंग का दूसरा अर्थ है धोखा देना फंसाना। इस अर्थ में लुंग से हिंदी में लुंगाड़ा व लुंगेरा शब्द बने। बाघ के शरीर की काली पट्टियां बनाना थीं व लिखन कला का उत्कट प्रेम भी था दोनों काम साथ २ करना जरा मुश्किल ही था।

बाघ शब्द बंड से ही बना है। बंड का पहिले बग्गा हुआ व बाद में बाघ हुआ। संस्कृत बनाने के नियमों के अनुसार बाघ का व्याघ्र हो गया। बुन्देलखंडी में एक मुहावरा है "बग्गे में आ जाना" इसका अर्थ फंस जाना। असल अर्थ है बाघ के चंगुल में फंसना

याने बलिष्ठ धूर्त के काबू में आ जाना। इस मुहावरे पर से ऊपर का चित्र बना व बग्गा शब्द से हिंदी के दो शब्द बगुर=फंदा और बगड़िया=धोखेबाज आदमी बने। बुन्देलखंड में हमेशा से बड़े २ बाघ रहे आए।

७

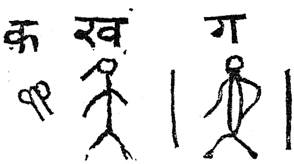

वाचन—ईंड आड़।

अर्थ— लज्जा (के कारण) पड़दा।

क—ईंड=आंख चित्र में दो आंखे बनी हैं। बीच में नाक बनी है। नाक बांचना नहीं है। वह आंखों के उठाव के लिये बनी है। ईंड का दूसरा अर्थ लज्जा है। देखो ईंड पन्ना २५। स्पिवाक साहिब ने इसे लज्जा ढकने का कपड़ा समझा है। पर वह बिकिनी नहीं है।

ख—ईव का चित्र है। अपने को नंगा देखकर दोनों को लज्जा पैदा हो गई।

ग—इस चित्र में एडम बना है उसके दोनों तरफ दो खड़ी लकीरें बनी हैं। इससे स्वाभाविक आड़ बांचा गया। आड=परदा दोनों लकीरें डंड भी बांची जाती हैं व डंड का बहुवचन डांड हुआ। बुन्देलखंडी में डांड़ना का अर्थ है—दीवाल से या किसी प्रकार के परदे से एक जगह के दो अलग २ हिस्से कर देना। पर अभी शुरू २ में स्वाभाविक बांचना ही काफी है।

सील में अगर क चित्र के ऊपर कोई स्पष्ट लकीर है तो वह टन = तिनका है। ईड–टन = शरमाती हुई। यह टन बुन्देलखंडी आतन जातन व मराठी येताना जाताना में बना जाता है।

८

क ख ग

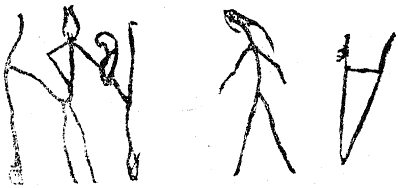

वाचन— **कीट - डुक–मूरी**

अर्थ-- पाप-दुःख-मृत्यु

क– चित्र में दोनों तरफ दो कीड़े बने हैं उनके सिर नीचे को हैं व पूछें ऊपर को हैं। ये कीट बांचे गए। कीट का दूसरा अर्थ है मल। मल = पाप। चित्र के बीच में एडम बना है उसके हाथ पर डुक बना है। बंधी मुट्ठी के हाथ को डुक कहते हैं। डुक मारना = मुक्का मारना। डुक का दूसरा अर्थ है दुःख। संस्कृत शब्द दुःख बुन्देलखंडी शब्द डुक से बना है। दोनों कीड़े कुछ भिन्न प्रकार के हैं याने भिन्न प्रकार के पाप हैं। एडम पाप व दुःख से जकड़ा हुआ बताया गया है।

ख—इस चित्र में घबराई हुई ईव बनी है।

ग—मूरी बनी है। मूरी = मूली = मूला।

उसके दोनों तरफ जो दो लकीरें आगे निकली हुई बताई गई हैं वे पत्तों के दो डंठल हैं। मूरी का दूसरा अर्थ मृत्यु है। मूरी से

लेटिन शब्द मोरी बना जिसका अर्थ है मर जाना। बुन्देलखंडी ऊ का यूरोपिअन भाषाओं में ओ हो जाना एक साधारण नियम रहा आया। बुन्देलखडी गालियां देने में मर जाने के अर्थ में मुरा मुरी व मुई शब्द अभी भी प्रचलित हैं।

ईव मृत्यु को देखकर पीछे अपने पति के तरफ देखती है। पर पतिजी खुद आफतों में पड़ गये थे। अत्यन्त दयनीय दशा वर्णित है।

९

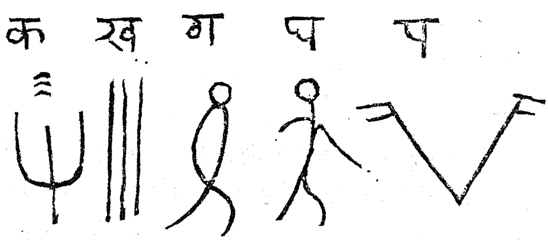

वाचन— **उड्ड-मंड-डेंग संड एडम ईव इड्डटंड।**

अर्थ— ऊंचे पहाड़ के बगीचे से (गार्डन आफ ईडेन से) भेज दिये गये एडम ईव पृथ्वी (जमीन) (पर)।

क—इस चित्र में ऊपर जो तीन छोटी लकीरें बनी हैं वे सांकेतिक हैं। यह साधित संड है। वह उंचाई का संकेत है। इस-लिये उड्ड बांचा गया। उड्ड = ऊंचा। खड़ी लकीर बाकी चित्र को बीच में काटती है इसलिये मंड बांचा गया। देखो वाचन नं० २। मंड = पहाड़। बाकी जो बचा वह डेंग = डेगची है। डेंग = बगीचा देखो डांड वगैरह पन्ना ३९। उड्ड–मंड वही शब्द है जो बाद में उटकमंड हो गया।

ख—तीन लकीरें हैं इसलिये संड बांचा गया । संड= (अंग्रेजी में) सेंट अवे याने भेज दिये गये। यह संड व अंग्रेजी सेंड एक ही शब्द है। संस्कृत में संड का संदिश् हो गया व संदेश का अर्थ आदेश भी है।

ग+घ—एडम और ईव हैं।

प—इड्ड-टंड=जमीन पर । देखो वाचन नं० ३ ।

१०

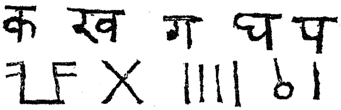

वाचन— उड्ड-टंड मंड गंड पंड+अंड (पंडंड) ।

अर्थ— स्वर्ग में ईश्वर ने निश्चय किया । अंग्रेजी बिल्ड । सृष्टि रचना का निश्चय किया।

क—उड्ड-टंड=स्वर्ग। देखो वाचन नं० ३।

ख—मंड=में। देखो मंड पन्ना ३३ और बाचन नं० २।

ग—गंड। चार लकीरें हैं इसलिये गंड बांचा गया । गंड= ईश्वर। देखो गंड पन्ना २७ ।

घ—पंड=लटकन। चित्र में लटकन याने लटकती हुई चीज है। पंड से अंग्रेजी शब्द पेंड=लटकना बना। चित्र में पेंडेंट बना है। पंड का दूसरा अर्थ विचारना या निश्चय करना है । बाद में पंड का अनुस्वार चला गया व पड रह गया । यह पड हिंदी के पड़ताल शब्द में है। और जब आप हिंदी में कहते हैं "अभी बहुत काम पड़ा है" तब इसका सही अंग्रेजी तर्जुमा "मच वर्क इज स्टिल पेंडिंग" ही होता है। वैसे ही पड़दा लटकाया जाता है याने वह पेंडेंट रहता है। वह जमीन या टेबल पर पड़ा नहीं रहता । पड़ना

व पड़दा में जो पड़ है वह अनुस्वार विहीन पंड ही है। पड़दा शब्द बुन्देलखंडी हिन्दी है। उससे फारसी शब्द पर्दा बना। आजकल पड़दा का परदा हो गया है पर बुन्देलखंड में पढ़े लिखे लोग भी बहुधा पड़दा ही उच्चारते हैं। पेंड शब्द भी बुन्देलखंडी है। अंग्रेजी में पेंड से पेंडुलम शब्द बना। पेंडुलम भूलता है हिंदी में पेंड का पेंग हो गया। ड का ग हो गया। पेंग मारना = भूलना।

प—एक लकीर है इसलिये अंड बांचा गया। यह पंड में मिलाना है। पंडंड बना। यह क्रिया है। पंडंड = निश्चय (संकल्प) किया।

११

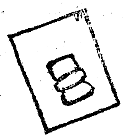

बाचन— **संड खंड** ।

अर्थ— तीन लोक।

तीन खंड याने तीन खाने बने हैं। खंड का दूसरा अर्थ लोक है। तीन लोक याने स्वर्ग आकाश व पाताल बन चुके हैं। पृथ्वी बनने को रह गई है। सिंधु घाटी वालों के ४ लोक थे। आर्यों के आने के बाद ३ रह गये। स्वर्ग आकाश व पाताल लोकों के बनने का वर्णन नहीं दिया गया है। पृथ्वी पर रहने वाले उसका पता कैसे लगा सकते थे। बाइबिल में भी पानी के बटवारे के सिवाय स्वर्ग बनने का कोई विशेष वर्णन नहीं है।

तीन बड़े २ लोक बन गये इसलिये चतुर्भुजाकार में लिखा गया है। वाचन का प्रकार नं० २ है। स्वाभाविक नहीं है । अगर स्वाभाविक होता तो आकाश व पाताल के बीच पृथ्वी की जगह बताई जाती। खंड समतल पर भी हो सकते हैं पर अकसर वे एक के ऊपर एक समझे जाते हैं। इसलिये चतुर्भुज एक तरफ उठा दिया गया है। सृष्टि अपूर्ण होने से वह तिरछा है

१२

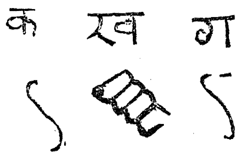

वाचन— अंड खंड टूट-फूट ढूं ढूं (ढों ढों)।

अर्थ— एक खंड याने पृथ्वी टूटी–फूटी याने वीरान है । उस पर चारों ओर अंधेरा छाया हुआ है।

ख—बीच के चित्र में तीन लोक बने बनाए बताये हैं व चौथा लोक नीचे को बनता हुआ बताया है। याने पृथ्वी टूटी फूटी या वीरान बतलाई गई है। देखो वाचन नं० ११ ।

क+ग—ये दोनों अक्षर साथ में बांचना है। दोनों ढ अक्षर है ढ नीचे को कुछ बढ़कर मुरक गया है। जिससे ढू बांचा जाता है। ढों भी बाचा जा सकता है। ढू ढू या ढों ढों का अर्थ है अन्धकार। देखो ढां ढूँ ढीं पन्ना ४० । चारों तरफ अन्धकार है इसलिये एक ढँ एक तरफ व एक दूसरे तरफ बनाया है।

पुरानी बुन्देलखंडी में कई संज्ञा-शब्द ऐसे थे जिनके अन्त में ऊं रहता था। इनमें से ऐसे कुछ शब्द मराठी व गुजराती में बने जाते हैं। हिंदी में इन जैसी शुद्ध संज्ञाएं नहीं हैं। पर ज्ञानेश्वरी में जो कई संज्ञा-शब्दों के अन्त में छोटा उ आया है वह बुन्देलखंडी नहीं है।

इम्पिब्राक साहिब ने पृथ्वी पर अंधेरा छा जाना जो इस चित्र में बांचा है वह सही बांचा है। पर वाचन नं० ११ के चित्र में पृथ्वी की वीरानी जो बांची है वह गलत है। वीरानी या केऑस इसी वाचन नं० १२ के चित्र में ही है।

१३

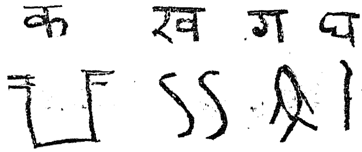

वाचन— **उड्ड-टंड ढूं ढूं मिटंड।**

अर्थ— ईश्वर ने अंधेरा मिटा दिया।

क—उड्ड-टंड = ईश्वर। देखो वाचन नं० ३।

ख—ढूं ढूं = अंधेरा देखो वाचन नं० १२।

ग + घ—म और ट अक्षर जुड़े हुये हैं। वे नीचे को कटते हैं। इसलिये इ अक्षर बना। मिट बांचा गया। इसके आगे एक लकीर है वह अंड बांची गई। इस तरह मिट + अंड मिटंड बन गया। मिट = मिटाना।

१४

क ख ग

वाचन—उड्ड-टड गोड़ी कट-मुंड-कलि ।

अर्थ— ईश्वर ने छानकर अंधेरा अलग कर दिया । याने उजेला व अंधेरा अलग २ कर दिये ।

क– उड्ड-टंड = ईश्वर । देखो वाचन नं० ३ ।

ख—यह चित्र गल्ला बाजार के छन्ने का है । बुन्देलखड में इसे गोडी या गोड़न कहते हैं । गोड़ना = छानना अलग करना । मराठी में छानने को गाड़णें कहते हैं ।

लिपि का प्रकार स्वाभाविक है इसलिये गोड़न चालना चन्ना (छन्ना) या इस अर्थ का कोई भी बुन्देलखंडी शब्द बांचा जा सकता है । चित्र के छन्ने से गल्ले का कूड़ा अलग कर दिया जाता है ।

ग— कट–मुंड-कलि । भीतर की दो लकीरें एक बाजू में दूसरी बाजू को जाती हैं व एक जगह (बीच में नहीं) कटती हैं इसलिये कट शब्द बना । बीच की खड़ी लकीर से मंड शब्द बनता है । देखो वाचन नं० २ । मंड को मुंड बाचना है । बाहर की दो लकीरें क और ल अक्षर है । इनसे कल शब्द बना । कल को कलि बांचना है । कट-मुंड-कलि = राहु = अंधेरा ।

तमस्तु राहुः स्वर्भानुः सैंहिकेयो विधुंतुदः —अमर ।

कलि शब्द का सम्बन्ध काली = अंधेरा शब्द से है ।

यह लेख सही बांचकर स्पिवाक साहिब ने कमाल कर दिया है ।

१५

क ख ग घ

वाचन— **उड्ड-टंड जीई-पडंड ।**

अर्थ— ईश्वर ने जीव-परंद (बनाए)।

क— उड्ड टंड = ईश्वर देखो वाचन नं० ३ ।

ख—इसमें दो शब्द हैं। पहिले ज अक्षर है व उसमें दो ई बनी हैं। इस तरह जीई शब्द बना। जीई = जीव संस्कृत शब्द जीव इसीसे बना है। बुन्देलखंडी में ई-अन्त संज्ञा-शब्द बहुत थे। जैसे मकई तुरई मरई जीई पीई बीई। जिन शब्दों में ई के पहिले अ था वे बहुत से ज्यों के त्यों बने जाते हैं। जिन शब्दों में ई के पहिले ई थी उनमें दूसरी ई का लोप हो गया व उसका या भी हो गया। जैसे पीई का पी और पिया हो गया व जीई का जी और जिया हो गया।

जीई से लगा दूसरा शब्द पडंड है। यह नीचे से बांचना है। पहिले प अक्षर है फिर ड अक्षर है दोनों को एक खड़ी लकीर लगी है यह लकीर अंड बांची गई। इस तरह पडंड शब्द बना। पडंड का परंद हो गया। परंद = पक्षी। परंद शब्द फारसी में चला गया व हिंदी में बना रहा।

ग + घ चित्र सांकेतिक हैं। उनमें जीव-पक्षियों की रचना बतलाई गई है। यह दून है।

जैसे आजकल जीव-जन्तु कहते हैं वैसे उस समय जीई-परंद कहा जाता था।

१६

क रव ग

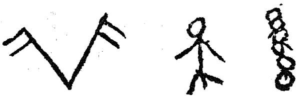

वाचन— इड्ड-टंड मनु पज (बाली)।

अर्थ— पृथ्वी (पर) आदमी व धान्य की फसल बना दिये)।

क—इड्ड टंड = पृथ्वी देखो वाचन नं० ३।

ख—मनुष्य बना है। स्वाभाविक है।

ग—फसल की बाली बनी है। स्वाभाविक है।

१७

क रव

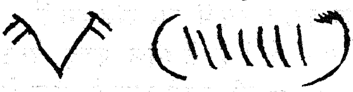

वाचन—इड्ड–टंड कुल–खंड।

अर्थ— पृथ्वी (पर) खूब अनाज (पैदा हो गया)।

क—इड्ड टंड = पृथ्वी।

ख—इस चित्र में कोष्टक बना है। यह संसार का पहिला कोष्टक है। वह दो अक्षर क और ल से बना है। दोनों अक्षर साथ में बांचे जायंगे। कल का कुल बांचना है। कुल = बहुत खूब। अन्दर सात लकीरें हैं इसलिये खंड बांचा गया। खंड = अनाज गल्ला देखो खंड पन्ना २७।

१८

क ख ग घ प

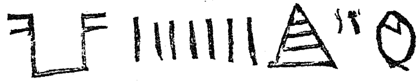

वाचन— **उड्ड-टंड खंड गंड-खंड-डेरा बंड केल ।**

अर्थ— ईश्वर ने सात (दिन में) चार लोक का संसार (बनाने का काम) बंद किया ।

क—उड्ड टंड=ईश्वर देखो वाचन नं० ३

ख—सात लकीरें हैं इसलिये खंड बांचा गया । सात दिन समझना है यद्यपि दिन लिखा नहीं है। अपढ़ आदमी दिन गिनने के लिये दीवाल पर लकीरें खींच देता है। वैसे ही निशान समझिये।

ग—त्रिकोण बना है उसमें चार खंड बने हैं । खंड=लोक । त्रिकोण को डेरा कहते थे। इससे ग्रीक शब्द डेल्टा बना जिसका अर्थ त्रिकोण है। डेरा=खीमा की बाजू त्रिकोण होती है। डेरा=संसार दुनिया। दुनियां-अर्थी डेरा फारसी में चला गया व उसमें इस अर्थ के डेरा-कहन व डेरा-मुसन्नस शब्द है। डेरा बांचने की आवश्यकता भी नहीं है क्योंकि जितना ऊंचा खंड होगा उतना ही छोटा दिखेगा।

घ - दो लकीरें हैं इसलिये बंड बांचा गया बंड=बंद ।

प—क और ल अक्षर जुड़े हुये हैं व भीतर ऊपर को ए बना है इसलिये केल बांचा गया। केल=किया। केल बंगाली में है व केलें मराठी में है।

१६

क ख

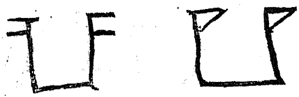

वाचन— उड्डु टंड बंड डोंड ।

अर्थ— आकाश में तूफानी हवा ।

क – उड्डु टंड = आकाश देखो वाचन नं० ३ ।

ख— इस चित्र में दो डोंडीं = टोंटीं बनी हैं। इसलिये बंड-डोंड बांचा गया। बंड = हवा। देखो बंड पन्ना ३१। डोंड (डोंडा) = तूफान। टोंटीं बताने के लिये ही बाकी चित्र बना है इसलिये और कुछ नही बांचना है। टोंटियों की नोंक एक ही तरफ है इसलिये हवा का संकेत होता है। यह दून है।

या

उड्डु-टंड = बहुत बड़ा। इसलिये उड्डु टंड बंड-डोंड का अर्थ बहुत बड़ा तूफान हुआ। या।

ख—नाव का चित्र है। डोंडा = नाव। डोंडा = तूफान। ऊपर के निशान हवा के सबब एक ही दिशा में उड़ रहे हैं। इस तरह पूरा चित्र सिर्फ डोंडा बांचा जायगा।

२०

क ख ग घ प फ ग

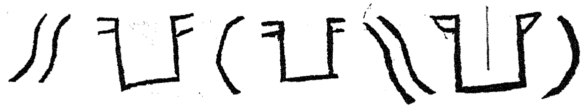

वाचन— ढूंसर-ढूंसर उड्ड-टंड कुल उड्ड टंड रूं रूं
(रों रों) तड़-डोंड खल ।

अर्थ— आकाश में अंधयारी छा गई । आकाश से नीचे जमीन तक कुल (जगह) में पानी व आंधी का गर्जन (हो रहा है) ।

क—ढूंसर-ढूंसर । ढूं ढूं शब्द बने हैं पर वे नियमित स्थान से दाहिनी ओर सरक गये हैं । इस सरकने से सर प्रत्यय बना व वह ढूं को लग गया । ढूं ढूं = अंधेरा देखो ढां ढूं पन्ना ४० और वाचन नं० १२ व १३ । ढूंसर वही शब्द है जिसका हिन्दी व संस्कृत में धूसर हो गया है । धूसर = धुमेले रंग का । सर प्रत्यय मराठी में बना जाता है ।

ख —उड्ड टंड = आकाश । आकाश में घने बादल छा गये इसलिये चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा हो गया । जैसे आज की बुन्देलखंडी में करिया-करिया हो गओ कहेंगे वैसे पहिले ढूंसर-ढूंसर कहते थे ।

ग + ग – कुल । कोष्टक बना है । एक तरफ क है व दूसरे तरफ ल है । देखो वाचन नं० १७ ।

घ—उड्ड-टंड = आकाश ।

प—रों रों = (अंग्रजी में) रोरिंग । रोर शब्द हिंदी में अभी भी है दो र अक्षर हैं वे नीचे को मुड़ गये इसलिये रूं रूं या रों रों बना । इसका अर्थ गर्जना है ।

फ—यह चित्र खल-बत्ता का है । जो एक लकीर बीच में अधर बनी है वह कूटने का बत्ता या मूसल है । खल भी है पर उसके ऊपर के कोनों में कुछ जोड़ दिया गया है। खलबत्ते का एक और नाम था-मंड-तड़ याने बीच में कूट । कूटने से तड़-तड़ आवाज होती है। इसलिये बत्ते को तड़ कहते थे । मंड तड़ का अंग्रेजी में मोर्टर हो गया। अंग्रेजी शब्द पेस्टल में जो टल है वह तड़ का ही बदला हुआ रूप है। पेस्टल=पीसने का तड़। तड़ का दूसरा अर्थ है पानी देखो पन्ना २९ ।

खल के बांये तरफ के ऊपर के कोने में डोंड (डोंडी=टोंटी) बना है। उसका अर्थ तूफान या आंधी है।

खल बना है व खल का दूसरा अर्थ पृथ्वी है ।

खल के दाहिने तरफ के ऊपर के कोने में एक छोटी सी आड़ी लकीर है व उससे एक छोटी लकीर नीचे को लटकती है । यह सांकेतिक है व दून है। खालें=नीचे का इशारा है । नीचे पृथ्वी है। बुन्देलखंडी खालें है हिंदी खाला है व मराठी खालीं है।

२१

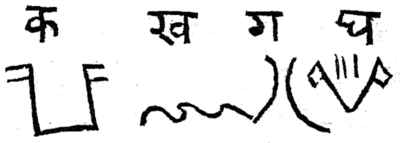

वाचन— **उड्ड टंड तड़क लक संड-इड्ड-टंड ।**

अर्थ— आकाश (में) तड़की चमकी पृथ्वी पर बिजली गिरी।

क—उड्ड टंड=आकाश

ख— तड़क। यह स्वाभाविक है। संस्कृत में तडित् शब्द है।

ग—ल और क दो अक्षर हैं इसलिये लक शब्द बना। लक=चमकना। बुन्देलखंडी में लकलकना मराठी में लकलकणों या लखलखणों और गुजराती में लखलख वुं=चमकना है।

घ—इड्ड-टंड=पृथ्वी। देखो वाचन नं० ३। तीन लकीरों से संड बना। संड=बिजली आग। संड सांकेतिक भी हो सकता है। वह पानी व बिजली का गिरना बताता है। चित्र के कान लकीरों से बंद हैं यह इस बात का सांकेतिक है कि गर्जन इतना भीषण था कि लोगों को अपने कान हथेलियों से बन्द करना पड़े।

२२

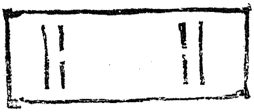

वाचन— **बंड बंड टूट।**

अर्थ— (नदी के) दोनों तरफ के बांध टूट गये।

चित्र के बीच में दो दो लकीरें हैं इसलिये बंड बंड बांचा गया। एक एक लकीर टूटी है यह टूटना सांकेतिक है। पहिला बंड=दोनों। दूसरा बंड=बांध। देखो बंड पन्ना ३२। आज भी बांध को बंड कहते हैं। नदी के दोनों तरफ के बांध पानी के महापूर से टूट गये। बहुत लम्बी दौर तक बांध टूट गए इसलिये समकोण चतुर्भुज में बतलाया है।

श्री स्पिवाक ने यह चित्र गलत बांचा है। उन्होंने यह अर्थ किया है कि ईश्वर ने स्वर्ग व पृथ्वी रचे व दो दो लकीरें दोनों

रचनाओं के लिये बनी हैं। पर एक एक लकीर टूटी क्यों है? क्या वे दरवाजे बने हैं? हिंद में ईश्वर ने चार लोक बनाये न कि सिर्फ दो।

२३

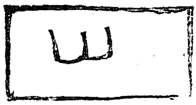

वाचन—अंडंडंड। =अंडं + डंड (दंद)।

अर्थ— विश्व विपत्ति।

बीच में जो तीन खड़ी लकीरें हैं वे अलग २ बांचना है अंड+अंड+अंड=अंडंडंड। ये लकीरें अलग २ जोड़ी गई हैं। नीचे की लकीरें जोड़ की हैं। इसलिये बांची नहीं जायगीं। दो दो लकीरों का अलग २ जोड़ इसलिये बतलाया गया है कि तीनों लकीरें अलग २ बांची जावें और संड न बांचा जावे। अंड=विश्व डंड का आजकल दंद हो गया है। दंद=विपत्ति।

मीरा विरहिनि सीतल होई।
दुख-दुंद दूर न्हसाया॥

—मीराबाई

सार्वजनिक विपत्ति होने के कारण चतुर्भुजाकार में लिखा है। संस्कृत के संधि के नियमों के अनुसार अंड+अंड अंडांड होगा पर इस तरह का नियम मो० लि० की भाषा में नहीं था। बाद में भी 'दीर्घ-ह्रस्वौ मिथो वृत्तौ' जैसे नियम बनते रहे।

स्पिवाक साहिब ने इस चित्र को 'पानी २ सब जगह' बांचा है। इससे अधिक सही वे और क्या बांचते।

२४

क

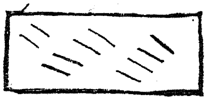

वाचन - **बंड गंड गंड ।**

अर्थ— बंद करो हे ईश्वर हे ईश्वर ।

बीच में पहिले दो लकीरें हैं वे बंड बांची गई । बंड = बंद । चार चार लकीरें गंड गंड बांची गई । गंड = ईश्वर ।

दुनियां आफत में पड़ गई थी इसलिये सार्वजनिक प्रार्थना की गई थी व इसलिये यह बात चतुर्भुज में बताई है ।

श्री स्पिवाक यहां भी चूक गये । उन्होंने यहां 'लगातार वर्षा' बांचा है चित्र को स्वाभाविक समझ लिया ।

२५

क ख

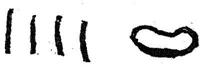

वाचन—**गंड कंड ।**

अर्थ— ईश्वर दयालु (हुआ) याने हवा पानी बंद हो गए ।

क—चार लकीरें हैं इसलिये गंड बांचा गया । गंड = ईश्वर ।

ख—इस चित्र जैसी बीच में पटकी (दबी) हुई चीजें कंड कहलाती थीं । बाद में भिन्नीकरण के हेतु इस शब्द के अनेक रूप हो गए ।

(१) कंड = कुंडरी, कुंडली । बुन्देलखंड में गेंडुरी को कुंडरी कहते हैं घड़े रखते २ उसका आकार चित्र सरीखा हो जाता है ।

(२) कुंड या कूंड़ी का आकार चित्र सरीखा होता है । ये शब्द कंड के बदले हुये रूप हैं ।

(३) कंड = [illegible]डी = कंघी । कंघी आज भी चित्र के आकार की होती है ।

(४) कंड = कुंडी = सांकल । दरवाजे की सांकल की ऊपर की कड़ी अकसर चित्र के आकार की होती है ।

(५) कंड = कंडी = कंजी । कंजी का बीजा चित्र के आकार का होता है । कंजी एक झाड़ होता है जिसके बीजों से तेल निकाला जाता है । इसका पुराना नाम कंडा था ।

(६) किडने (अंग्रेजी) व काजू चित्र के आकार के होते हैं । वे शब्द कंड से बने हैं । काजू में ड का ज हो गया है ।

कंड = दयालु । कंड व अंग्रेजी काइंड एक ही शब्द है । काइंड कुछ फैल गया है । कंड से कंद शब्द बना व कंद का अर्थ कोमल रसीली जड़ है । बुन्देलखंड में कोमल घास को कांदी आज भी कहते हैं । कलाकंद शब्द बुन्देलखंडी है । वह फारसी नहीं है । कलाकंद एक प्रकार की मिठाई है । कंद पड़ जाना याने रबा पड़ जाना याने कोमल हो जाना । कोई २ मिठाई इतनी कठोर बना दी जाती है कि दांतों से भी बमुश्किल टूटती है । कलाकंद मुलायम होना ही चाहिये । कलाकंद शब्द फारसी में नहीं है उसमें कलाशिकन है । शिवजी शुरू से दयालु माने गये हैं । इसलिये खजुराहो के महादेव कंडरिया कहलाते हैं । कंड से हिंदी शब्द कनउड़ बना इसका अर्थ है कृपा का आभारी । कंड से मराठी शब्द कणवाळू बना । इसका अर्थ दयालु है । संस्कृत में कंड से करुणा शब्द बना । कंदी एक हिंदू आडनाम है ।

ईश्वर दयालु हुआ याने हवा पानी बंद हो गए और खुल गया ।

स्पिवाक साहिब ने यह लेख बिलकुल सही बांचा है। सही कैसे बांच लिया यह समझ में नहीं आता। गुड़कतान नहीं हो सकती। बुद्धि का कुछ चमत्कार है।

२६

क ख

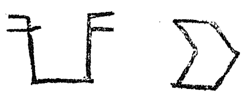

वाचन—उड्ड टंड जई जई।

अर्थ— महा आनंद।

क—उड्ड टंड=महान् बहुत बड़ा। देखो वाचन नं० ३।

ख—जई जई=आनंद खुशी। दो ज अक्षर हैं और वे ऊपर व नीचे आड़ी लकीरों से जुड़े हुये हैं। इन जोड़ों से दाहिने तरफ ऊपर व नीचे दो ई बनाई गई हैं। आड़ी लकीर ई की एक लकीर है देखो वाचन नं० १। जई जई का संस्कृत में जय जय हो गया व अंग्रेजी में जोय हो गया। दो ढाई साल के बच्चे जब जय जय को जई जई कहते हैं तब वे शुद्ध बुन्देलखंडी बोलते हैं।

स्पिवाक साहिब ने ग्रेट जोय बांचा है। वह उन्होंने अक्षरशः सही बांचा है।

२७

क ख ग

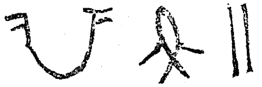

वाचन— टंड **मिट** **बंड** ।

अर्थ— महान् सूर्य (को) नमस्कार ।

क—टंड = महान् देखो वाचन नं० ३ ।

ख—म और ट अक्षर हैं । वे नीचे को कटकर बढ़ गये हैं जिससे इ बन गई है । मिट शब्द बना । मिट = सूर्य । इसका अर्थ मित्र भी है व इससे हिन्दी का मीत शब्द बना । इन दोनों अर्थों में संस्कृत में मिट का मित्र हो गया ।

ग—बंड = वंदना करना देखो बंड पन्ना ३२ ।

वाचन नं० १३ में भी मिट शब्द आया है । पर वह वहां क्रिया है । मिट = मिटाना । यहां मिट संज्ञा है ।

२८

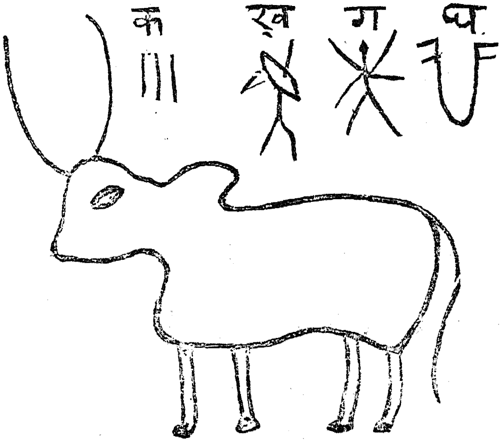

वाचन— संड सा मनु टुंड (तुंड) । सा + मनु = सामनु ।

अर्थ— बैल का मुंह सामने है ।

क—तीन लकीरें हैं इसलिये संड बना । संड = बैल देखो संड पन्ना ३५ ।

ख—यह एक स्त्री का चित्र है । सा बांचा जायगा । सा = स्त्री संस्कृत में तद् सर्वनाम का स्त्रीलिंग प्रथमा एक वचन सा है । वह यही सा है । इसका पुल्लिग हा था । यह हा मराठी में हा (हिंदी यह) सर्वनाम का पुल्लिग प्रथमा एक वचन है । सा और हा से अंग्रेजी शब्द शी व ही बने । बाइबिल का शब्द नोहा शुद्ध बुन्देलखडी है । नो = नया, हा = आदमी, नो हा = नया आदमी ।

(ग) यह मनु = मनुष्य का चित्र है । इसलिये मनु बांचा गया । यह ख के वाचन में जोड़ना है । इस तरह सामनु शब्द बन गया । सामनु = सामने । सामने के लिये तीन शब्द थे साम सामं और सामनुं । आज के बुन्देलखंठी और गुजराती में सामुं बना जाता है ।

मनु महाराज आर्यों के पहिले के हैं इसलिये आदिमनु हैं। दुनियां के पहिले आदमी को मनु नाम ही दिया गया था और यह ख्याति हिन्द में हजारों साल रही आई।

यस्तु तत्र पुमान् सोऽभून्मनुः
स्वायं भुवः स्वराट् ।

—श्रीमद् भागवत

आदमी शब्द भी बुन्देलखंडी है। वह मनु के बाद बना। दोनों शब्द हिंद के बाहर चले गये। यहूदियों को आदमी पसंद पड़ा। असल बुन्देलखंडी शब्द मन था उसका मनु हो गया था।

घ—यह चित्र टंड है देखो वाचन नं० ३।

यहां टुंड बांचना है टुंड = तुंड = मुंह।

२६

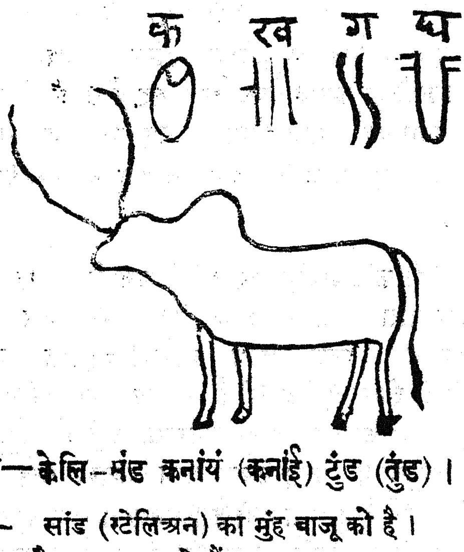

वाचन—केलि-मंड कनांयं (कनांई) टुंड (तुंड)।

अर्थ— सांड (स्टेलिअन) का मुंह बाजू को है।

क—क और ल अक्षर जुड़े हैं व ऊपर ए अक्षर बना है। इसलिये केल शब्द बना। केल का केलि बांचना है। केलि का अर्थ

अधिक समझाने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वह संस्कृत में चला गया व वहां बना जाता है। केलि = संभोग क्रिया। केलि से केला शब्द बना व केली–केरी–कैरी शब्द बना। कैरी का संस्कृत शब्द भी चल रहा है।

क और ल अक्षर वाचन नं० १४, १७, १८, २०, २१ में भी आ चुके हैं। वे मो० लि० में जहां तहां है।

ख—तीन लकीरें हैं इसलिये संड बना। संड = बैल। दाहिनी तरफ एक डेश लगा है। यह डेश संसार का पहिला डेश है। इसका अर्थ है कि केलि शब्द के साथ संड शब्द बांचना है। केलि संड = सांड़।

(ग) अब आप बुन्देलखंडी भाषा के गाभे पर आ गये। चित्र में दो कन्नी (अं. ट्रोवेल) बनी हैं। मो० लि० में जहां बहुवचन बताना होता है वहां एक चीज के दो चित्र दिये जाते हैं। आजकल कन्नी का बहु वचन कन्नीं या कन्नियां होगा। उस समय इसका बहुवचन कन्नांई या कनांय होता था। कुछ वैसा ही होता था जैसा फारसी में शानी का शनात होता है। बहुवचन इसलिये दिया है जिसमें कनांय शब्द बन जावे। कनांय = बाजू को। कनांय हो याने बाजू को हटो।

चित्र में दो कन्नियां हैं। एक लकीरी कला है। यह यह कन्ना पचास हजार साल पुरानी समझी जाती है। पर आज भी उसका बाजार गर्म है। अगर आप कन्नियां = ट्रोवेल बांचने को हिचकिचाते हों तो कोई हर्ज नहीं है। जब कोई चीज बाजू को झुकती है तो उसे कन्नी खाना या कनयाना कहते हैं। इस तरह भी कनांय शब्द बनता है। पतङ्ग उड़ाने वाले अच्छी तरह समझा दे सकते हैं कि पतंग कैसी कनयाती है। कनयाना याने आंख बचा के निकल जाना भी है। बच्चे को कनइयां लेना याने उसे कमर के बाजू पर बैठालना।

अंग्रेजी में कनयाना का कन्नाइव हो गया । बीच में लेटिन शब्द कोनिवीर है। जिसका अर्थ पलक झपकाना है। बुन्देलखंडी से संस्कृत, लेटिन व दूसरे भाषाओं के शब्द बने। सही पता न होने से इन शब्दों की कुछ तो भी व्युत्पत्तियां निकाल रखी हैं । हिंदी में कनखी शब्द है जिसका अर्थ तिरछी नजर है । बुन्देलखंडी कन तामिल में पहुंचा व उसमें उसका अर्थ आंख हो गया। इसी अर्थ में तेलुगु में कन्नू हो गया।

घ—टंड है। टुंड बांचना है । टुंड=मुंह । देखो वाचन नं० २८ घ ।

३०

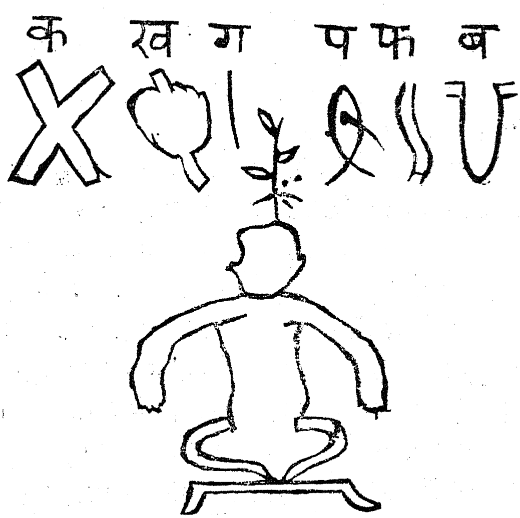

वाचन— धूर्जुट मुडंड बंड-ईड कनांय-जुड़ ।
टुंड (धूर्जुट का असल शब्द ढूंर्जुट था)

अर्थ— धूर्जटि=शिव ध्यान मुद्रा में हैं । आंखें बंद हैं । उनके मुंह बाजू में जुड़े हैं ।

क—दो धुर् या धुरी बनी हैं। गाड़ी के बैलों के कंधों पर जो जुआंरी रखी जाती है उसे धुर कहते हैं। म्याल को भी धुरी कहते हैं। म्याल भी इसी आकार की होती है। धुरी अकसर आड़ी देखने में आती हैं। चित्र में वे खड़ी हैं। दो एकसी चीजों को जुट कहते हैं। आजकल तो जुट शब्द रेलवे का हो गया है। दक्षिण-पूर्व रेलवे पर पानों की बिलटी में दो टोकनियां जोड़ दी जाती हैं और उन्हें जुट्टा कहते हैं। मीन हप्प (फ्लेश) में दो राजा या दो इक्के आदि को जुट्ट कहते हैं। इस तरह धूर्जुट शब्द बना। इसका संस्कृत में धूर्जटि हो गया।

कृशानुरेताः सर्वज्ञो धूर्जटि नीललोहितः
हरः स्मरहरो भर्गस्त्र्यंबक स्त्रिपुरांतक

—अमर

दो धुरीं एकमेक से जुटी हैं याने सटीं है। इस तरह से भी जुट शब्द बना। यह दून है।

ख+ग–ख चित्र मुड का है। मुड=मुडारा=मुदारा=मुगरा। मुडारा जमीन ठोकने पीटने के काम आता है। अब ड का ग हो गया है। इसके साथ का शब्द कुडारा (कुदारा) ज्यों का त्यों बना जाता है। उसमें ड का ग नहीं हुआ। संस्कृत में मुडारा को मुद्गर कहते हैं। इसमें ड (द) व ग दोनों हैं संधि का समय था। मुड् धातु का अर्थ कुचलना है। बुन्देलखंडी में कुचलने के हथियार को मुड कहते थे। मुड का दूसरा अर्थ मुद्रा में रहना है। मुड से संस्कृत शब्द मुद्रा बना व अंग्रेजी शब्द मूड बना।

ग चित्र में एक खड़ी लकीर है इसलिये अंड बांचा गया। ख+ग=मुडंड याने ध्यान मुद्रा में है।

प—बंद-ईंड=आंखें बन्द। यह चित्र सांकेतिक है। मुगरी से मछली की आंखें बन्द कर दी हैं। या मुगरी को मुडी (मुदी) बांच सकते है व इस तरह आंखें मुंदी हैं। यहां भी दून है। तब भी स्त्रीलिंग ई प्रत्यय लगाने से बनता था।

ख चित्र में बड़ा मुड है व यहां घ चित्र में छोटी मुडी है। हो सकता है कि मुड शब्द मुडा रहा हो। मुद्रा के अर्थ में मुदारी शब्द का प्रयोग हिंदी में हो चुका है :—

अंगन मांहि अनंग जुरा गनि राजत नेत्रन ध्यान मुदारी ।
—जगन्नाथदास विशारद

फ—कनांय–जुड़। कनांय के लिये देखिये वाचन नं० २६ ग। दो कन्नियां जुड़ी हैं इसलिये कनांय जुड़ बना।

ब—टंड=टुंड=तुंड=मुंह देखो वाचन नं० २८ घ और २६ घ।

वाचन नं० १० में पंडंड आया है। वाचन नं० १३ में मिटंड आया है। यहां मुडंड आया है। ये तीनों शब्द क्रियायें हैं और उस समय का क्रिया का रूप बताते हैं। यह रूप ज्यों का त्यों फारसी में चला गया व वहां क्रिया के बहुवचन में आता है जैसे दानन्द कर्दन्द। हिंद में ड का त हो गया व संस्कृत व हिंदी में न्त क्रिया के बहुवचन में आता रहा। सिंधु घाटी में जब सीलें लिखी गई उसके ४–५ हजार साल बाद वहां से १८०० मील पूर्व में कबीर साहिब ने क्रिया का यह रूप कहा :—

तरवर तासु विलंबिये बारह मास फलन्त ।
सीतल छाया गहर फल पंछी केलि करन्त ॥

३१

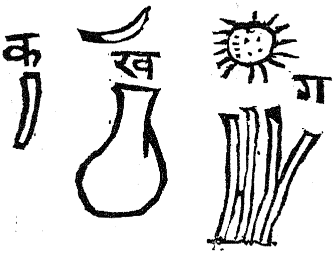

वाचन—अंड मिट जुड़ी ।

अर्थ— चंद्र सूर्य (की) जोड़ी = चंद्रार्कौ ।

लिखन के ऊपर चंद्र और सूर्य के चित्र बने हैं वे ही लेख में बांचना हैं ।

क—अंड । दो लकीरें हैं पर वे जुड़ी हुई हैं । मो० लि० का यह वैशाली चित्रण है चार हजार साल बाद कुछ न कुछ फरक पड़ना ही था । डबल लकीरी कला हो गई । सिंधु घाटी के स्वल्प सीलों में भी यह दिखाई देती है । एक लकीर बांचना है याने अंड बांचा गया । अंड = चंद्र । देखो अंड पन्ना २५ । चित्र में कुछ झोल भी आ गया है ।

ख—मट का चित्र है । मट = मटका । हिंदी मराठी माट । मट का मिट बांचना है । मिट = मित्र = सूर्य देखो बाचन नं० २७ ।

ग—यह दतोनों की जुड़ी = गड्डी का चित्र है । बुन्देलखंडी में इसे जुड़िया कहते हैं । मराठी में जुड़ी कहते हैं । जुड़ी को जोड़ी बांचना है । जोड़ी = २ ।

मो० लि० चाहे सिंधु वेली से निकली हो चाहे गुजरात से चाहे वैशाली से-उसे बांचने के लिये बुन्देलखंडी ही जानना पड़ेगी ।

३२ (अ)

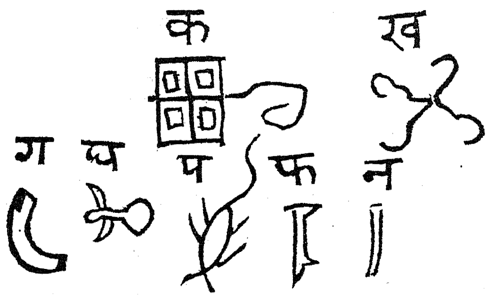

वाचन— **गंड डोर गंड कुंड तड बर्र बिट पट्टरंड ।**

अर्थ— चार दरवाजे, चार ताल, फर्श पकी ईंटो से पटा है।

क—चार दरवाजे स्वाभाविक बने हैं । दरवाजे को दोरो बुन्देलखंड में आज भी कहते हैं। पर डोर क्यों बांचा जावे ? द्वार क्यों नहीं ? संस्कृत का जमाना था। इसका उत्तर वह लकीर देती है जो भीतर से बाहर निकलकर लहराती है। वह डोर (डोरी) है । यह दून है। डोर का संस्कृत में दोर हो गया पर उसमें दोर का अर्थ द्वार नहीं है। जिस आकार की डोर बनी है उसी आकार में सड़कों पर पड़ी आपको देखने मिल जायगी। अगर डोर की सीधी लकीर बना दी जाती तो वह लम्ब-डंड बांची जाती न कि डोर ।

ख—चार कुंदे बने हैं। कुंड से कुंदा शब्द बना। ये कुंदे चार दिशाओं में हैं। कुंड=ताल। चार ताल चार दिशाओं में हैं।

ग—तड=काटने का हथियार। चित्र में सिर्फ धातु का हिस्सा बना है। मूठ नहीं बनी हैं। तड से हिंदी शब्द तलवार बना व फारसी शब्द तराश बना। किसी मनुष्य-संघ से जब कुछ लोग कट जाते हैं याने मतभेद के कारण अलग हो जाते हैं तब दो तड याने दो दल बन जाते हैं। तडना=कटना काटना । जैसे अंग्रेजी

में स्लाइस किया हुआ हिस्सा स्लाइस कहलाता है उसी तरह हिंदी व मराठी में तड किया हुआ हिस्सा याने कटा हुआ हिस्सा तड कहलाता है। हिंदी में तडकाना शब्द भी हैं।

तड = तल = फर्श। तल शब्द तड ही से बना है। मराठी में तड = तल अभी भी है।

ध—चित्र में बर्र (बर्रइया = वास्प) बना है। बरना = जलना = बर्न। जली हुई या पकी हुई।

प—चित्र में बिच्छू बना है। बिंट = बिच्छू। बिंट से मराठी बिंचू व हिंदी बिच्छू शब्द बने। बिंट = ईंट। इससे मराठी विंट व हिंदी ईंट शब्द बने।

फ—चित्र पट्टर का है। पट्टर = पच्चर। हिंदी में पट्टर का पच्चर हो गया है। यह लकड़ी का होता है व जोड़ के काम में आता है। पांच हजार साल पहिले यह शब्द सिर्फ पट्ट था। पर दो हजार साल पहिले की भाषा में र अक्षर बढ़ गया है व ट्ट का च्च हो गया है।

न—चित्र अंड का है। वही अंड है जो वाचन नं० १०, १३ और ३० में आया है। पट्टर + अंड = पट्टरंड = पटा हुआ है। पच्चरंड भी बांचा जा सकता है। क्योंकि हिंदी में पच्ची शब्द भी हैं। अंड के आकार के बावत देखो वाचन नं० ३१।

इस लेख का प्रसंग व उसकी विगत मालूम हो जाने पर वह देखते ही पांच मिनिटों के अन्दर बांच लिया जाना चाहिये था। पर मालूम नहीं पैंतालीस साल तक क्यों न बांचा जा सका?

जिस सील का यह लेख बांचा गया है उसमें ब्राह्मी लिपि में भी कुछ लिखा है। ब्राह्मी के अक्षर बांच लिये गये हैं पर कहा जाता है कि उनका अर्थ समझ में नहीं आता है। मेरा ब्राह्मी से

कोई सरोकार नहीं है पर जो कुछ उस लिपि में लिखा गया है उसका ऊपर बांचे हुये लेख से घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसलिये उसका अर्थ बता देना ही उचित समझता हूं। पैंतालीस साल जाने दीजिये अब एक मिनिट में समझ लीजिये।

३२ (ब)

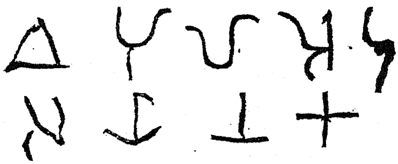

वाचन— **विसालिआनु संजानक।**

अर्थ— वैशाली का स्थापन (ते आउट)।

मो० लि० में जो लिखा है उसका यह शीर्षक है।

विसालिआ वैशाली का बुन्देलखंडी रूप है। जैसे नदी का नदिआ व देवरी का देवरिआ। नु विभक्ति गुजराती है। पर इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। अगर बुन्देलखंडी १०-१२ हजार साल पुरानी है तो गुजराती २ हजार साल पुरानी हो सकती है। वैशाली का विशाल वैभव सुनके गुजराती लोगों को अपने देस से वहां तक का फासला तय कर लेना तब भी कुछ कठिन न था। हो सकता है कि ऐसी सीलें बनाने में कोई निपुण गुजराती वैशाली में पहुंच गये हों या वहां पर अन्य व्यापार करने वाले किसी गुजराती ने अपने देस को भेंट देने के लिये यह सील बनवाई हो।

संजानक = स्थापन । संज् + आनक (नपुंसक लिंग)। संज् = बांधना । बुन्देलखंडी संड = रचना करना का संस्कृत संज् हो गया है । महाकवि हर्ष ने नैषधीय चरितम् लिख के सिद्ध कर दिया है कि व्याकरण के अनुसार कई ऐसे शब्द बनाए जा सकते हैं। जिनका पहिले कभी प्रयोग नहीं हुआ है । ईस्वी सदी के शुरू होने के आसपास आनक और कन् प्रत्यय लगाकर कई संस्कृत शब्द बने थे । संज् से हिन्दी शब्द संजोना बना ।

इन दो लेखों में संस्कृत है, गुजराती है, मराठी है व बुन्देलखंडी है। काफी पूर्व में गंगा में गंडक नदी गिरने की जगह के आसपास की यह भाषा है । मुंडा कहां है ?

UNIVERSITY LIBRARY
ALLAHABAD

बची खुची बातें

१

मैंने इस खंड में डीह व डी शब्दों का विवेचन किया है, इसलिये इन शब्दों के चित्र यहां दिये देता हूँ। मकान=डीह। ड+ई=डी। जिन लेखों में ये चित्र आये हैं वे योग्य ठिकान पर आगे कभी बांचे जावेंगे।

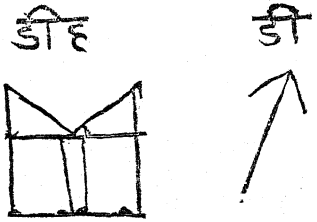

२

पन्ना १२. रंग

तुलसी कृत रामायण में श्रीरंग शब्द आया है और यह शब्द संस्कृत का समझा जा चुका है। पर श्रीरंग का अर्थ क्या होता है? जिन शब्दों के शुरू में श्री अनिवार्य रूप से है ऐसे शब्द श्रीरंग के अलावा संस्कृत में अनेक हैं व उनका अर्थ सरलता से समझ में आ जाता है जैसे श्रीकांत श्रीनन्दन। रंग का अर्थ रंगमंच रण-भूमि या खेल है। इसलिये श्रीरंग का अर्थ लक्ष्मी या सौंदर्य का रंगमंच रणभूमि या खेल हो सकता है! बुन्देलखंडी को नाकुछ समझने वाले विद्वान यह कहते हैं कि ड्रेविडियन भाषा से यह शब्द संस्कृत

में गया पर उत्तर हिंद में बजरङ्ग का बज्र जोर है व रंगलाल और रंगीलाल कई आदमियों के नाम हैं । रंगपुर सौराष्ट्र में है व आसाम में भी है ।

पन्ना १६. देव

हिंद में आनेवाले आर्यों ने देव शब्द अच्छे अर्थ में जल्द ग्रहण कर लिया था पर वे उसे शिव के अर्थ में प्रयोग नहीं करते थे । जो अन्य देवता वे मानते थे उनके लिये प्रयोग करते थे । शिव के विरोध में उन्होंने इंद्र को सबसे अधिक दैवत्व दे दिया था । इंद्र का जोर भारबि के समय तक काफी रहा आया । बाद में उनकी पोल खोली जाने लगी ।

पन्ना २६. मांगें

बुन्देलखंडी में भी मांगें व मांगू शब्द हैं । पर मराठी में मागें शब्द ने अधिक जोर पकड़ा । उससे मागसणें व माघार शब्द बने ।

पन्ना २७ खंड

खंड = कंधा से मराठी शब्द खांदा बना ।

पन्ना २८. छात्रगंड

हिंदी राष्ट्रभाषा कोश में छात्रगंड का अर्थ तीक्ष्ण बुद्धिवाला विद्यार्थी दिया है । पर शर्माजी व झाजी के संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ में इसका अर्थ मंदबुद्धि शिष्य दिया है–याने वह विद्यार्थी जिसे श्लोक का पहिला चरण भर याद हो । हिंदी कोश का अर्थ सही है । गंड का अर्थ खराब करने की प्रवृत्ति से संस्कृत में उलटा अर्थ कर दिया गया है । ऐसे कितने विद्यार्थी हैं जो कविता का पहिला चरण भी याद रख सकते हैं ?

पन्ना ३१. फंड

बुन्देलखंडी में एक शब्द फांगरें है इसका अर्थ है फंदे में । यह शब्द फंड से बना है । ड का ग हो गया ।

पन्ना ३२. बंड

बंड=वंदना करना से अंग्रेजी क्रिया शब्द बेंड=झुकना बना।

पन्ना ३५. सिगरी

जैसे पड़दा शब्द का परदा हो गया है वैसे ही सिगड़ी का सिगरी हो गया है। अगर सिगड़ी या सिगरी शब्द हिंदी शब्द कोषों में न मिले तो सिगड़ी शब्द रेलवे की समय सारणी में मिल जायगा ।

पन्ना ४१. गनी

डन शब्द असल में डण था । डण का जण हुआ व गण भी हुआ। गण से गुण बना व दोनों शब्द संस्कृत में गये । सहूलियत से बांचने व समझने के लिये कई जगह ण के स्थान में न का प्रयोग कर दिया गया है।

हिंदी में कंगन शब्द है। यह कणगण था। इसका अर्थ हुआ कणकण में गन याने धन। कंगन में जो गन है उससे गनी व गिनी शब्द बने।। कुंदन शब्द कन+डन है।

पन्ना ४२. सट्टी

बुन्देलखंडी में एक शब्द है अंधरसट्ट है । अंग्रेजी में इसका अर्थ फ्ल्यूक होता है। हिंदी में उसका अर्थ है अंधे की सट्टी= सफलता। अंधे की चोट। अंधरबटेर । किसी के सटन्ने ढीले करना याने उसे विषण्ण करना।

पन्ना ५५. आडनाम

ढौंडियाल व कौल भी आड नाम हैं। सिंधी आडनाम बडवानी बंड से बना है।

पन्ना ७७. आ

अंड की लकीर आ की लकीर से बड़ी होती है व डंड की लकीर अंड की लकीर से बड़ी होती है। पर लकीरों की लम्बाई निर्दिष्ट नहीं थी इसलिये कभी २ एक लकीर बांचने में कुछ सोचना पड़ता है। आज की चालू लिपियों के कुछ अक्षर बांचने में भी कभी २ सोचना ही पड़ता है।

पन्ना ६७. डोंड

डोंडी=टोंटी हिंदी राष्ट्रभाषा कोश में मिलेगा व डोंडा= तूफान श्री रामनारायनलाल के शब्दकोष में मिलेगा।

३

लिपि के चित्र जैसे कुछ मुझे बनाते बने बना दिये हैं। फोटोग्राफिक चित्र देना मेरे लिये कई प्रकार से असम्भव ही था।

जयहिन्द

अंड बंड खंड २

आपने कई प्रकार का जादू देखा होगा पर मो० लि० का असली जादू अभी देखना बाकी रह गया है। वह खंड २ में ही मिलेगा।

कुछ बातें आप छुटपन से पढ़ते सुनते आये हैं पर ठीक नहीं समझ पाये। खंड २ में ही वे बातें ठीक समझने को मिलेंगी।

हां, मैं पुरानी दुनियां की बात कर रहा हूँ। पर नई दुनियां चन्द्र या मंगल को जाने के लिये अभी कुछ देर है तब तक पुरानी दुनियां देख लीजिये। फिर नई दुनियां में मिलेगा ही क्या ? कुछ नई रासायनिक गठनें। पुरानी दुनियां में आपको कला का चमत्कार मिलेगा।

यह खंड अभी छपा नहीं है। छपने पर कीमत ७)